॥ श्री शासनपति महावीराय नमः ॥
॥ गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिगुरुभ्यो नमः ॥

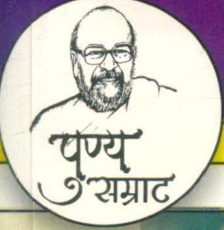

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | अक्टूबर-2020
दिव्याशीष-लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

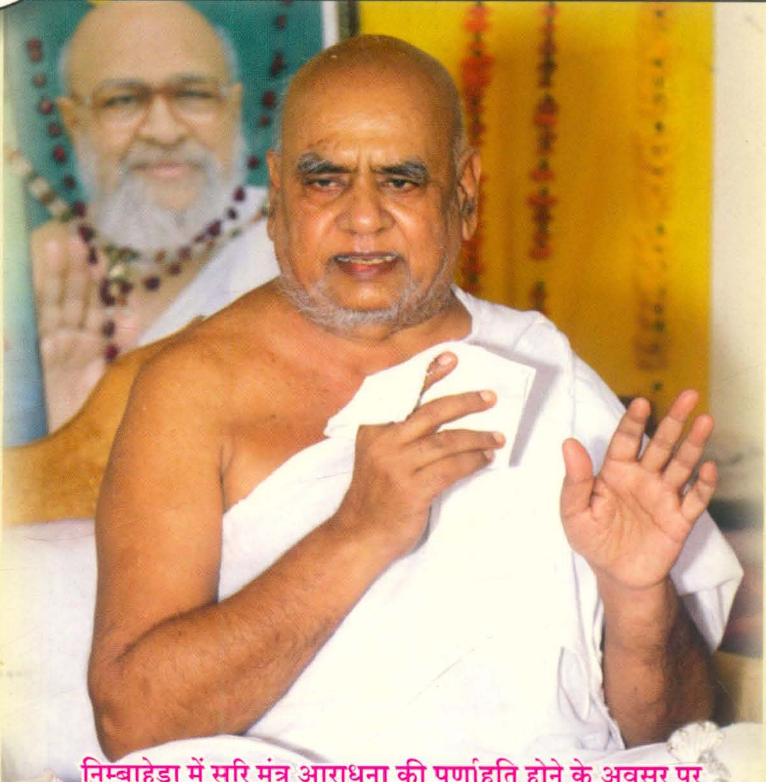

निम्बाहेड़ा में सूरि मंत्र आराधना की पूर्णाहुति होने के अवसर पर
मांगलिक प्रदान करते हुए गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरिश्वरजी म.सा.

Received 16/10/2020
3171

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्रसूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)
11. श्री जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ, बागरा, जिला – जालोर (राज.)
12. श्री कुंथुनाथ राजेन्द्र जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, सरसी, जिला – रतलाम (म.प्र.)
13. श्री अजितनाथ जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ, बर्डियागोयल (त. जावरा, म.प्र.)
14. श्री अमराईवाड़ी श्वेताम्बर जैन मूर्तिपूजक संघ, बलियावास, अहमदाबाद
15. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्र यतीन्द्र जयन्तसेन वाटिका पिपलौदा (रतलाम) म.प्र.)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता
स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई
हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी
रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत
खिमेल, मुम्बई

शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी
गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा
धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर
बैंगलोर

श्री पुखराजजी पूनमचन्दजी जोटा
दाधाल

शा. हजारीमलजी गजाजी वेदमुथा

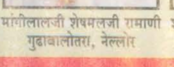
मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

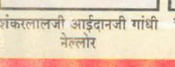
शंकरलालजी आईदानजी गांधी
नेल्लोर

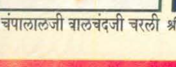
चंपालालजी वालचंदजी चरली

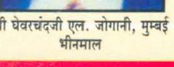
श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई
भीनमाल

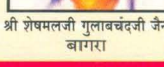
श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन
बागरा

35290

हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ़, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

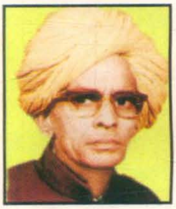
स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्टुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोरायु

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

श्री शा. कालूचंदजी हंजाजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

स्व. शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा मेंगलवा/मदुराई

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी जोधपुर/चैन्नई

श्री उत्तमचंदजी दरगचंदजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

हमारे गौरव

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

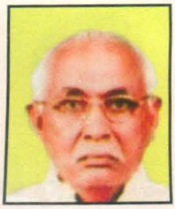

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

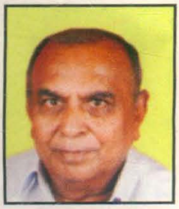

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सिवाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

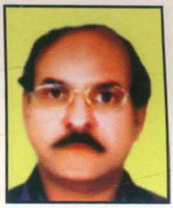

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

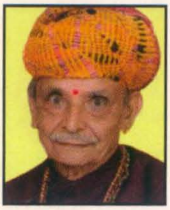

स्व.श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

स्व. श्रीमती बदामीबाई मोडमलजी
बाफणा-थलवाड़, नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, घानसा

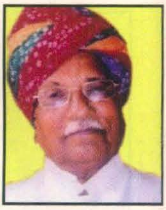

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नरसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

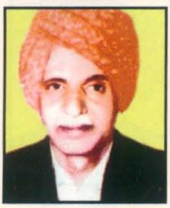

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

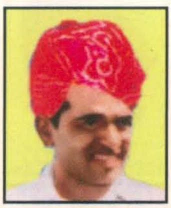

संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाघाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

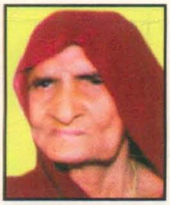

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

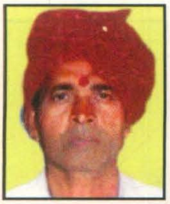

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

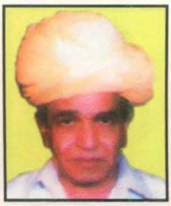

श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

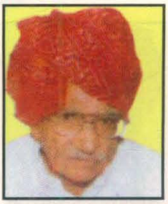
भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

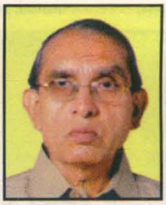
शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

कमलाबाई धींगड़मलजी पटवारी
चैन्नई, मांडवला

शा. निहालचंदजी धुलाजी
कातरेला, आहोर/मुंबई

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

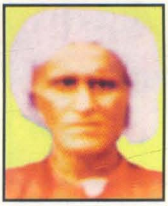
वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

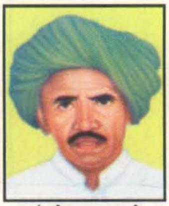
संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

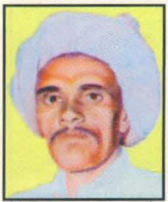
संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

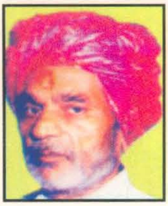
श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई
थराद

संघवी चिमनलाल खेमचंद
थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद
थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद
थराद

वोहेरा श्री माणकलाल
भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी
चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद
महाजनी

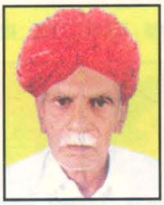
श्री मफतलालजी हंसराज
वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

अदाणी अमृतलाल
मोहनलाल थराद

श्री चन्दूमल मफतलालजी
वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी
झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना
रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा
जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक
कुक्षी

स्व. समरथमलजी तल्लेरा
कर्मड़वाला, उज्जैन

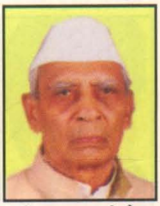
श्री सुजानमलजी जैन
राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी
तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी
रामाजी, पारा

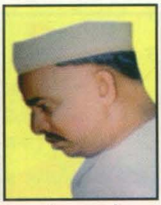
श्री गट्टूलालजी
रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी
भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत
दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी
मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया
पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी
तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी
सेठिया, कुशलगढ़

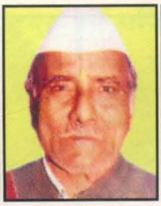
दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी
मेहता, कुशलगढ़

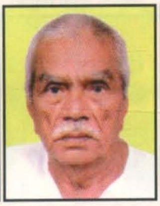
श्री मानसिंहजी
राजगढ़

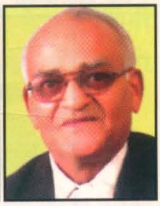
स्व. श्री बाबुलालजी भारतीय
खाचरौद

हमारे गौरव

कालूरामजी औरा
टोपीवाले, रतलाम

जैन भूषण स्व. श्री वर्धमानजी
राठौर (बड़नगर)

स्व. श्री प्रकाशचंद्र लुणावत
(बामनिया वाले)

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी , बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपडा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी , बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
काबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

शाह सोहनलाल
मित्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक
शाश्वत धर्म
अक्टूबर-2020 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
स्व.पू. लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 68 अंक 10
वीर सं. 2541 राजेन्द्र सं. 109 विक्रम सं. 2073

इस अंक का मूल्य	-	15 रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150 रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600 रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100 रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुधीर लोढ़ा	(महामंत्री)
श्री ओ.सी. जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)
आदि	

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए **सुरेन्द्र लोढ़ा**, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

मेरा उनकी देह से प्रेम नहीं, उनके जीवन की भक्त हूँ

क्षत्रियकुंड के राजा सिद्धार्थ ने कलिंग के नरेश जितशत्रु के दूत से कहा-

'हमें राजकुमारी यशोदा को हमारे राजकुमार वर्धमान के साथ परिणय बंधन करने का प्रस्ताव स्वीकार है।'

दूत खुशी-खुशी कलिंग रवाना हो गया। राजा सिद्धार्थ के राजमहल में यह चर्चा फैल गई। राजकुमारी यशोदा को उनकी सखियाँ छेड़ने लगीं।

एक सखी ने कहा-

'राजकुमार वर्धमान के गुणों का यशोगान हम तक भी आया है लेकिन कहते हैं वह युद्ध में नहीं जाता, राज्य संचालन से दूर रहता है।'

दूसरी ने व्यंग कसा-

'हाँ सही है लेकिन ज्योतिषियों ने कहा है कि वे सन्यासी बने तो, हमारी राजकुमारी क्या करेगी ?'

यशोदाजी ने मौन तोड़ा-

'सभी बातें मुझ तक आ गई हैं। ऐसे अद्‌भुत पुरुष की जीवन संगिनी बनना मेरा सौभाग्य होगा। उनके प्रति मेरा प्रेम देह तक सीमित नहीं है। यह प्रेम भक्ति से परिपूर्ण है। मैं अर्द्धांगिनी के साथ भक्त भी रहूंगी। यही मेरे जीवन की सार्थकता होगी।'

यशोदाजी पुनः मौन हो गई। सखियां उनका मुंह देखती रह गईं ।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

अनुक्रमणिका

1. सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़)	09
2. आत्मस्वरूप को पहिचानना ही धर्म है (श्री सुरेन्द्र गंग, रतलाम)	11
3. अशुभ वचनयोग (34)(स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा.)	12
4. चिन्तन का चित्रांकण (श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. की डायरी के पृष्ठ)	15
5. कोरोना का घर मांसाहार (जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा.)	17
6. गणधरवाद (लेखांक 73) (स्व.श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा.)	18
7. अध्यक्षीय पाती (वाघजीभाई वोरा)	21
8. अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू)	22
9. महाराजा श्रेणिक (मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा.)	23
10. एगो अहंमसि नत्थि में कोई (आचार्य श्री विजय जिनोत्तमसूरीश्वरजी म.सा.)	24
11. संयम का सहसावन मिलता जहाँ आत्मिक आनंद (साध्वी श्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	26
12. जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (संशोधक-मुनिश्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा.)	28
13. हमारी पसंदगी की सज्झाय (साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	29
14. धारावाहिक उपन्यास (लेखांक-6) (स्व.श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा.)	32
15. प्रश्नोत्तरी	34
16. जीवन में सफलता (महिला शाश्वत) (श्रीमती पद्मा हेमेन्द्र सेठ)	35
17. श्री जयंतसेन जयनाद (प्रस्तोता-मुनिराज प्रशमसेन विजयजी म.सा.)	36
18. अन्तर्दृष्टि (श्री अशोक कुमार नान्देचा, नीमच)	38
19. जिनशासन की वर्णमाला (4) (साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	40
20. कैसी हो हमारी शयन विधि ? (साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	42
21. मानव सेवा को अपने जीवन का अंग...... (श्री भंवरलाल कटारिया, बेंगलूरू)	45
22. शांति और क्रांति के अग्रदूत दादा गुरुदेव (धीमी गति वाला)	47
23. गुजराती संभाग	51-67
24. कुमकुम सने पगलिये	68-76
25. श्री संघ सौरभ	77
26. परिषद प्रांगण से	78-82
27. जैन विश्व	83-84

सम्पादकीय

तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के अनुयायी राजा-महाराजा

(सुरेन्द्र लोढ़ा)

तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी स्वयं क्षत्रिय तथा ज्ञातृ वंश के थे। उनके पिता सिद्धार्थ एवं माता त्रिशला तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ स्वामी के अनुयायी थे। माता त्रिशला लिच्छवी थीं। वे वैशाली के शक्तिशाली जैन परम्परा में दृढ़ उपासक महाराजा चेटक की बहिन थीं। चेटक के सात पुत्रियां थीं जिनका विवाह उस काल के प्रखर राजाओं के साथ हुआ था। उनकी पुत्री प्रभावती वीतभय के राजा उदयन को, पद्मावती अंग देश के राजा दधिवाहन को, मृगावती वत्स के राजा शतानीक को, शिवा उज्जैन के राजा चण्डप्रद्योत को, सुज्येष्ठा भगवान महावीर के भाई नंदिवर्धन को तथा चेलना मगधराज बिम्ब को ब्याही गई थी।

ये सभी तीर्थंकर श्री महावीर के पारिवारिक रिश्तों में थे अतएव जब वर्द्धमान कुमार ने संसार का त्याग किया एवं प्रवज्या के पश्चात् साढ़े बारह वर्षों की साधना के द्वारा कर्मों का क्षय करते हुए केवल ज्ञान की प्राप्ति की तब उनने समवसरण में विराजमान होकर धर्म प्रवर्तन किया। इस धर्म प्रवर्तन के अंतर्गत उनके लगभग सभी रिश्तेदार राजागण उनके अनुयायी बन गये। उन राजाओं की स्थिति श्रावक की बनी एवं उनकी रानियाँ श्राविकाएँ बन गईं। यों जैन धर्म के प्रवर्तक श्री महावीर स्वामी एवं बौद्ध धर्म के संस्थापक श्री गौतम बुद्ध समकालीन थे। दोनों राज परिवारों से निष्क्रमण करते हुए सन्यासी तथा धर्मों के प्रतिपादक बने थे, अतएव उस समय के कई राजा-महाराजाओं की ओर से सम्मान दोनों के प्रति था। यही कारण है कि जिन राजाओं को जैन सूत्रों में जैन मतावलम्बी उल्लेखित किया गया है, उनमें से कई को बौद्ध ग्रंथों ने अपना बताया है। इसके बावजूद यह स्पष्ट है कि जैन धर्म या बौद्ध धर्म के प्रसार अथवा पतन में राज्याश्रय एक महत्वपूर्ण गुणक रहा। राजगृह के राजा श्रेणिक (बिम्बसार) के पिता को तीर्थंकर पार्श्वनाथ की मान्यता से जोड़ा जाता है। श्रेणिक की पत्नी चेलना वैशाली के राजा चेटक की पुत्री थी अतएव वह जैन धर्मावलम्बी ही थी। उस युग में कई राजा अन्य मतों के थे लेकिन उनकी पत्नियाँ बौद्ध अथवा जैन मत की थीं और बिना पारिवारिक कलह की स्थिति के ऐसा ही चलता था। श्रेणिक पूर्व में बौद्ध थे परन्तु बाद में वे जैन हो गये थे। उनका पुत्र कूणिक अजातशत्रु तीर्थंकर श्री महावीर का भक्त

था। उसने एक अधिकारी की नियुक्ति कर रखी थी जो श्री महावीर स्वामी के भ्रमण दैनिक चर्या की सूचना देता था कूणिक का पुत्र उदयी श्रावक था, वह अष्टमी-चतुर्दशी को उपवास रखता था।

महाराजा उदयन सिन्धु सौवीर राज्य के जैन नरेश थे। वे बारह व्रतधारी श्रावक थे। वे भगवान महावीर के पास दीक्षित हुए। उनका पुत्र अभीचिकुमार भगवान श्री महावीरस्वामी का श्रद्धालु श्रावक था। श्री महावीर स्वामी के समय में ही उपरोक्त राजाओं के अतिरिक्त वीअंगण, कासिवद्धण, शंख, संजय आदि राजागण भी उनके श्रावक थे। रानियों में पद्मावती, मृगावती, शिवा, चेलना आदि रानियाँ श्राविकाएँ थीं। चम्पा की राजकुमारी चन्दना तीर्थंकर महावीर देव की प्रथम श्रमणी थी। वे श्रमणियों की प्रधान नियुक्त थीं। श्रेणिक का पुत्र अभयकुमार बुद्धिमान तथा श्रद्धावन्त श्रावक था। अतिमुक्त, मेघ, पद्म आदि राजकुमार श्री महावीर स्वामी के संघ में थे। अवन्तिराज प्रद्योत ने जीवन्त स्वामी (महावीर स्वामी) की प्रतिमाएं उज्जयिनी, दशपुर (मंदसौर) तथा विदिशा में प्रतिष्ठित करवाई थीं। दशार्ण जनपद के शासक दशार्णभद्र निर्ग्रंथ मार्ग में दीक्षित हुए थे। भगवान श्री महावीर ने कलिंग में जैनधर्म का प्रचार किया था। कलिंग के राजा करकंडु ने निर्ग्रंथ धर्म स्वीकार किया था। दक्षिण भारत के शासक जीवंधर ने भी श्री महावीर स्वामी का स्वागत सत्कार किया था एवं वह जिनसंघ में दीक्षित हुआ था। आर्द्रक नामक राजकुमार ने भी प्रवज्या ग्रहण कर केवल ज्ञान प्राप्त किया था। आर्द्रक के संदर्भ में एक इतिहासकार का मत है कि वह किसी ईरानी सामंत का पुत्र हो सकता है।

भगवान महावीर के समय लिच्छवी तथा वज्जी संघों की जातियाँ उनके प्रति अगाध श्रद्धा से पूर्ण थी। मल्लों में भी भगवान महावीर के धर्म के प्रति आस्था थी। उग्र और भोग जातियाँ जैन धर्म को ही मानती थी। जमाली और भगवान महावीर की पुत्री प्रियदर्शना प्रवज्ञा ग्रहण कर भगवान महावीर के संघ में सम्मिलित हो गए थे। उस समय भगवान महावीर के प्रमुख दस उपासक निम्न थे- वाणिजग्राम के आनन्द, चम्पा के कामदेव, वाराणसी के चुलिणीप्पिया और सुरादेव, आलम्भिका के चुल्लशतक, काम्पिल्यपुर के कुण्डकौलिक, पोलासुर के शकडाल-पुत्र, राजगृह के महाशतक तथा श्रावस्ती के नन्दिनी-पिता और साहिली-पिता। इनकी उपासिकाओं में शंख, पोखली, सुदर्शना, सुलया और रेवती के नाम लिए जाते हैं।

इस प्रकार भगवान महावीर के जीवनकाल में उनके प्रभाव क्षेत्र के कई राजाओं ने भगवान महावीर की उपासना की तथा जैन धर्म स्वीकार किया। ◆◆◆

आत्मस्वरूप को पहिचानना ही धर्म है

(श्री सुरेन्द्र गंग, रतलाम)

संसार में सभी जीव सुखी रहना चाहते हैं लेकिन सभी किसी न किसी प्रकार न्यून्याधिक रूप से दुःखी दिखाई पड़ते हैं। इसका कारण यह है कि बहुत से लोग गंभीरता व गहराई से इस विषय पर विचार नहीं करते है कि सच्चा सुख किसे कहते हैं और उसकी प्राप्ति कैसे हो सकती है? संसार के अनेकानेक जीवों में मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ माना गया है क्योंकि उसे विवेक शक्ति प्राप्त है।

जिसका सदुपयोग कर वह सच्चे सुख के सम्बन्ध में गहराई से विचार कर सकते हैं और उचित साधन अपनाकर सच्चे सुख और शांति प्राप्त कर सकते हैं। आजकल के व्यस्त संसारी जीवन में अधिकांश मनुष्य अपने विवेक को भूलकर मन व इन्द्रियों के प्रभाव में बाहरी विषय में सुख ढूंढ़ने की कोशिश करते हैं पर ऐसा करने में उन्हें सदा असंतोष, अशांति और निराशा हाथ लगती है।

जैन धर्म के अनुसार **आत्मा अचेतन** पदार्थ से बिल्कुल भिन्न एक **चेतन, नित्य** और **अविनाशी तत्व** है जो अनंतज्ञान व अनंत सुखों का भंडार है। जैन धर्म इसी अमर आत्मतत्व को पहचानने का उपदेश देता है। जो भाग्यशाली **जीव आत्मा** की पहचान कर लेता है वह **परमात्मा** बन जाता है। आत्मा के जीवों के स्वरूप को पहिचानना और दयापूर्वक जीवों के कल्याण के लिए समझना कि आत्मा ही जीवन का सार है, यही समस्त ज्ञान व आनंद का भंडार है। अपने आत्मस्वरूप को पहचानना ही धर्म है। यह धर्म ही मोक्ष का साधक है। ◆◆◆

आचार और व्यवहार

धर्म के क्षेत्र में आचार और व्यवहार दो विशेष प्रचलित शब्द हैं। आचार व्यक्ति का अपना होता है। व्यवहार का जगत दूसरों के साथ जुड़ा हुआ है। दो से व्यवहार नहीं होता। दो ही से बातचीत, संवाद, चिंतन, चर्चा आदि का क्रम चलता है। अकेला व्यक्ति यदि अपने आप से बात, संवाद आदि करेगा तो लोग उसे पागल कहेंगे। व्यवहार का जगत विशाल है। आगम में आचार पर बहुत प्रकाश डाला है। वैसेही व्यवहार पर भी सैंकड़ों नियमों का उल्लेख मिलता है कि व्यक्ति का व्यवहार कैसा हो ? आचरण को स्वयं जीया जाता है पर व्यवहार दूसरों के सामने प्रकट होता है।

प्रवचन

अशुभ वचनयोग (34)

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

दुकान पर पहुँचने के बाद पुत्र ने पिताजी से हँसी का कारण पूछा। पिताजी ने सहज ही उस दुर्घटना का उल्लेख करते हुए कह दिया- 'एक दिन जिसने मुझे कुएँ में धकेल दिया था, वही आज इतनी सेवा कर रही है! यह देखकर मेरी हँसी रुक न सकी।'

पुत्र ने पत्नी से कहा कि मेरे पिताजी के साथ ऐसी दुर्घटना हो चुकी है। औरतों के पेट में बच्चा भले ही सवा नौ महीने तक टिक जाए, पर बात नहीं टिकती। पत्नी ने सास से कह दिया। सेठानी उस घटना के प्रकट हो जाने से इतनी लज्जित हो गई कि उसने एक कमरे में पहुँचकर अपने गले को रस्सी में फँसाकर आत्महत्या कर ली।

सेठजी ने जब यह सुना कि रूपसुन्दरी ने आत्महत्या कर ली है तो उसके लिए अपने आपको अपराधी मानकर उन्होंने भी आत्महत्या कर ली। उन्होंने सोचा कि हँसी का कारण बताकर उन्हींने सबसे पहले अपराध किया है।

फिर पुत्र ने भी यह सोचकर आत्महत्या कर ली कि हँसी का कारण जानकर भी मैं यदि मौन रहता, बात को पचा पाता, पत्नी को न कहता तो यह अनर्थ न होता, माता और पिता दोनों को आत्महत्या करने की नौबत न आती।

रह गई अकेली पुत्रवधू सो पति, सास और ससुर- तीनों के

द्वारा की गई आत्महत्या के लिए स्वयं को ही वास्तविक अपराधिन मानकर उसने भी आत्महत्या कर ली।

बिना आगे-पीछे सोचे जो किसी का मार्मिक रहस्य प्रकट कर देते हैं, उनकी बात का कितना भयंकर दुष्परिणाम होता है? यह हमने इस उदाहरण से समझा। अब एक उदाहरण मार्मिक वचन के दुष्परिणाम को देखिएः-

उदयपुर के महाराणा के जीवन की यह घटना है । उनका विवाह बूँदी की राजकन्या के साथ हुआ था। एक दिन मिलने आये अपने साले के साथ वे चौपड़ खेल रहे थे कि सहसा उनकी नजर सालेजी के उन हाथों पर पड़ी, जो मेहन्दी से लाल-लाल हो रहे थे। हँसी-हँसी में महाराणा के मुँह से यह मार्मिक वचन निकल गया कि ये हाथ तो लुगाई के हाथ जैसे लग रहे हैं।

सालेजी के दिल पर यह बात चोट कर गई कि 'व्यंग्य से जीजाजी यह प्रकट कर गए थे कि मैं लुगाई की तरह निर्बल हूँ।' यह सोचकर सालेजी मन -ही-मन तिलमिला उठे। प्रतिशोध की प्रबल भावना उनके मन में घर कर गईं। फिर भी वे उचित अवसर की तलाश में वहाँ अपना गुस्सा चुपचाप पी गए, कुछ नहीं बोले।

तीन दिन तक आतिथ्य सुख भोगकर वे बूँदी लौट गए। वहाँ से उन्होंने पत्र लिखकर उदयपुर-नरेश को सिंहों का शिकार खेलने के लिए आमंत्रित किया। वे सहज ही चले गए। बूँदी पहुँचकर उन्होंने भी आतिथ्य सत्कार का सुख भोगा। उन्हें नहीं मालूम था कि बलि देने से पहले जिस प्रकार खूब खिलाया-पिलाया जाता है, उसी प्रकार उन्हें भी खिलाया-पिलाया जा रहा है।

निश्चित समय पर बूँदी के राजमहल से सुदूर जंगल में पहुँचकर साले-

बहनोई दोनों मिलकर शिकार के लिए सिंह की खोज करने लगे। पूर्व योजना के अनुसार अन्य सभी साथी जान-बूझकर पीछे छूट गए। फिर मौका (एकान्त) देखकर बूँदी-नरेश ने इस तरह अपना भाला फेंका कि वह सीधा जाकर महाराणा के सीने में लगा। वे धड़ाम से जमीन पर गिर पड़े। अन्तिम साँस छूटने ही वाला ही था कि सालेजी बोले- ''यह लुगाई के हाथों का कमाल है।'

इस प्रकार मार्मिक - वचन के बदले उदयपुर के महाराणा को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा।

महाभारत का महायुद्ध भी इसी प्रकार हँसी में कहे गए मार्मिक वचन का परिणाम था। वह वचन कौनसा था और किसने कहा था? सुनिए -

'मय' नामक शिल्पकार की सहायता से पाण्डवों ने एक विशेष ढंग का आकर्षक दर्शनीय राजमहल बनवाया। फिर उसे देखने के लिए दुर्योधन को आमन्त्रित किया गया। (क्रमशः) ◆◆◆

जैन बनना सीखो

मंजिल पाने के लिये कंटक राहों से गुजरना सीखो
माटी को महकाने के लिये, निर्झर से झरना (बहना) सीखो
स्वयं की खुशी के लिये सदाचार से जीवन जीना सीखो
नाम कमाने के लिये श्रावक जीवन जीना सीखो
जैन बनना ही है तो अपना नाम सार्थक करना सीखो
सच्चाई छुपाने के लिये नहीं, जरूरत झुठे आलंबनों की, आरोपों की
है अगर हिम्मत तो सच्चाई का सामना करना सीखो
जैन तो यूँ ही बन जाओगे, अपना कार्य व नाम सार्थक करना सीखो
मानव जीवन दुलर्भ है और उस पर जैन का खिताब
तो मेरे भाई - बहनों जैनी बन जीना सीखो ।

-त्रिशलादेवी कोठारी

चिन्तन का चित्रांकण

प्रतिक्षण सावधानी रखें

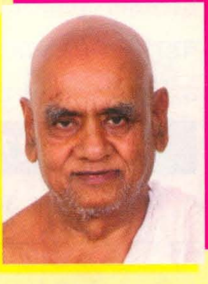

गच्छाधिपति जैनाचार्य

श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. की डायरी के पृष्ठ

दिनांक 20 मार्च 2016

सन्मार्ग सन्तों का, सुपवित्र तीर्थों का! सन्त सदा परहित के मार्ग दृष्टा होते हैं, हित है वहीं आत्मकल्याण का मार्ग है। तीर्थ जीव मात्र को संसार सागर से तिराने का आलम्बन है, आधार है। आधार से ही उद्धार है, बस यही सन्मार्ग है।

दिनांक 21 मार्च 2016

इतिहास इमारतों से, गीतों से, प्रचलित होते हैं। इमारत मन्दिर, मूर्ति और प्राचीन महलों से हजारों वर्षों की यादगारें प्रगट कराते हैं। ग्रन्थों एवं गीतों से प्राचीनता के दर्शन होते हैं। व्यक्ति देह त्यागकर चल बसते हैं, कृति स्मरण करा देती है। इतिहास के लाखों -हजारों वर्षों का उपहार व्यक्ति बनाता है, इसके लिये व्यक्ति में अपना व्यक्तित्व होना चाहिये व्यक्तित्व की कला होनी चाहिए।

दिनांक 22 मार्च 2016

इतिहास बनता नहीं बनाया जाता है। दो कार्यों से इतिहास बनते हैं एक अच्छे कार्य से और दूसरा बुरे कार्य से। शुभ और अशुभ कार्य से ही इतिहास बना है। श्रीपाल नृप एवं धवलसेठ दो हुए दोनों ने इतिहास की पंक्ति में नाम अंकित किए। जीवन में इतिहास बनाना है तो किस लाईन में नाम अंकित करना है यह अपने स्वयं के ऊपर ही निर्भर है।

दिनांक 25 मार्च 2016

बिना कारण का टेंशन ही बीमारी का घर है। अज्ञदशा ने ही तो जीव को जीवन्त नहीं रखा। जिन्दा भी मरे के समान है ये अज्ञदशा है। अज्ञान के तम को हटाओ और सम्यग्यज्ञान को प्रगट करो। जीवन में ये ज्ञान आ जायेगा तो सर्व टेंशन हट जायेगी। और यदि टेंशन गई तो समझो बीमारी गई।

दिनांक 26 मार्च 2016

टेंशन मुक्त व्यक्ति कषायों से मुक्त रहता है। कषाय ही टेंशन का कारण बनता है। अज्ञ जीव ही कषायों की जंजीर से बन्धे हुए

हैं। महान पुरुषों का जंजीर तोड़ना सबसे बड़ा परिश्रम है। यह परिश्रम ही सफल जीव के लिये टेंशन मुक्ति का कारण बनता है।

दिनांक 27 मार्च 2016

मन का मैला आदमी, कभी भी कुछ मन धारण कर बैठता है। छल कपट से भरा व्यक्ति कभी भी विश्वासघात कर बैठता है। प्रपंच भरा व्यक्ति कभी भी जीवन के सन्मार्ग से भटक सकता है।

इसलिये मन का मैला, छली, कपटी प्रपंचभरा व्यक्ति कब क्या कर बैठेगा पता नहीं चलता? इसीलिये प्रतिक्षण सावधानी रखकर जीवन के हर कदम पर गति करना चाहिये। ◆◆◆

हर सौ साल बाद महामारी मचाती है तबाही

1720, मार्सिले का प्लेग :- 1720 में बुबोनिक प्लेग ने पूरे विश्व में लाखों लोगों को मौत की नींद सुला दिया था। भारत में इस बीमारी का प्रकोप 19 वीं सदी के आखिर तक रहा और लाखों लोगों की जान से हाथ धोना पड़ा था। यह महामारी चूहों और पिस्सू से फैली थी। इस बीमारी का खौफ इतना था कि रात को स्वस्थ इंसान सो जाता था और सुबह मृत पाया जाता था प्लेग को ताऊन, ब्लैक डेथ, पेस्ट आदि नाम भी दिये गये हैं।

1820 द फर्स्ट कॉलरा (हैजा) :- 1920 में एक और भयानक महामारी द फर्स्ट कॉलरा (हैजा) ने जन्म लिया। यह बीमारी सबसे पहले थाईलैंड, इंडोनेशिया और फिलीपीन्स में आग की तरह फैल गई। 1910-11 के बीच भारत में यह महामारी मध्य पूर्व, अफ्रीका, पूर्वी यूरोप और रूस तक फैली थी, जिसमें आठ लाख से ज्यादा लोग मारे गये थे। हैजा 'बिब्रियो कॉलेरा' नाम के बैक्टीरिया से होता है। इस बीमारी में दस्त व उल्टियाँ होती हैं, जिससे मरीज शरीर का सारा पानी खो देता है। साफ पानी न मिलने पर मरीज की मौत घंटों के अंदर हो सकती है।

1920 स्पैनिश फ्लू :- यह अपनी सदी का सबसे खतरनाक वायरस था, जिसने 1919 में दुनिया की करीब एक तिहाई आबादी को हमेशा के लिए खामोश कर दिया था। यह वायरस 'एच-1 एन-1 फ्लू' था, जो कि छींकने व खांसने के दौरान निकलने वाली ड्रॉपलेट्स के संपर्कमें आने से फैलता है। अकेले भारत में ही इस महामारी से करीब दो करोड़ लोगों की जान चली गई थी।

2020 कोविड-19 (कोरोना) :- और अब 2020 में चीन से फैले वायरस कोरोना ने पूरे विश्व में तबाही मचा रखी है।

कोरोना का घर मांसाहार

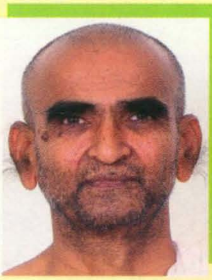

(जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)

इस कहावत को हम पुनः दुहराते हैं कि- 'जैसा खाये अन्न वैसा होये मन' जिसका जैसा आहार होता है, उसका वैसा मन बनता है। मन बनने से तात्पर्य है, उसके वैसे ही विचार बनते हैं। विचार के अनुसार भावना ढलती है। दूषित मन विकृत भावनाओं को जन्म देता है जबकि पवित्र मन अच्छी भावना का उत्पादक होता है। जिसके जैसे भाव होते हैं उसके शरीर में वैसी स्थिति होती है। कहते हैं, भूखा रहने वाला नहीं मरता, अधिक खाने वाला मौत को शीघ्र निमंत्रण दे देता है। अतः यह कहा जा सकता है कि जिसका जैसा आहार होता है, उसमें वैसी ही शुद्धता का निवास होता है। यदि शरीर में शुद्धता नहीं है, तो विचार इच्छा, कामना, आचरण, भावी शरीर निर्माण भी शुद्धता से परिपूर्ण नहीं हो सकता है। विश्व विजेता हिटलर की फौज की पराजय इसीलिये हुई थी कि विगत रात्रि को उसे आहार में जो मांस परोसा गया था वह पूर्णतः विकृत था, उसके दुष्प्रभाव से दूसरे दिन सेना पूरे मनोयोग व क्षमता से नहीं लड़ पाई। मांस जैसे विकार तथा विलासिता पूर्ण भोजन के कारण कई बार पूरे परिवारों का पतन होने के उदाहरण प्राप्त होते हैं। मांस का भोजन अत्यधिक कैलोरीवाला होता है अतएव शारीरिक रोग बढ़ते जाते हैं। हाल में जो कोविड-19 महामारी पनपी है तथा जिसके कारण पूरा विश्व संकट में आ गया है, उसका भी एक कारण मांसाहार है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने स्पष्ट कहा कि कोरोना महामारी से बचने के लिये मांसाहार से दूर रहना चाहिये। जिन देशों में मांसाहार का अत्यधिक प्रचलन है, वहाँ इस महामारी से मरने वालों की संख्या में भारी बढ़ोतरी हो रही है, साथ ही इस पर काबू पाये जाने के लिये सरकारों को कठोर परिश्रम करना पड़ रहा है। यदि एक मास के लिये पूरे विश्व में में मांसाहार प्रतिबंधित कर दिया जावे तो कोरोना महामारी पर आसानी से नियंत्रण संभव है लेकिन अमेरिका जैसे देश मांसाहार पर पूरी तरह निर्भर हैं।

यों देखा जाये तो हमारे अच्छे स्वास्थ्य के लिये आहार का सर्वाधिक महत्व है, हमारे यहाँ आयुर्वेद ने त्रिफला (हर-बेहड़ा-आंवला) वनस्पति रूप में शाक, फल आदि ऐसे उपलब्ध किये हैं कि जिनके उपयोग से व्यक्ति शरीर से बलिष्ठ बनकर किसी को भी चुनौती दे सकता है।

(क्रमशः) ◆◆◆

लेखांक - 73

प्रवचनकार

गणधरवाद

(स्व. मनीषी लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)

पहले जीव पीछे कर्म :-

इस प्रकार सादि बंध के बारे में तीन विकल्प कर के युक्ति प्रस्तुत करते हो कि उक्त तीनों प्रकार से बंध घटित नहीं हो सकता, क्योंकि कर्म से पूर्व आत्मा की उत्पत्ति सम्भव नहीं है, क्योंकि खर-विषाणवत् इसका कोई कारण-निमित्त दृष्टि-गोचर नहीं होता और जिसकी उत्पत्ति होती है, वह निर्हेतु कभी नहीं होता। जैसे- घट। यदि आत्मा की उत्पत्ति निर्हेतुक मानी जाए, तो उसका विनाश भी निर्हेतुक माना जाए क्योंकि निष्कारण जात का विनाश भी निर्हेतुक होता है।

यदि कोई कहे कि जीव अनादि सिद्ध है, अतः उसकी उत्पत्ति के बारे में विचार करना ही निरर्थक है, तो तुम उसका समाधान करते हो कि जीव अनादि सिद्ध हो, तो फिर उसका कर्म के साथ संयोग नहीं होगा, क्योंकि उसका कुछ भी कारण नहीं हैं- आकाश की तरह और यदि कारण बिना-निष्कारण भी जीव को कर्म संयोग माना जाए, तो मुक्त जीव को भी वह कर्म

संयोग होना चाहिए, क्योंकि उसके कुछ भी कारण नहीं हैं तथा यदि मुक्त जीव भी पुनः बंधन को प्राप्त होता है, तो लोग ऐसी मुक्ति में किसलिए श्रद्धा रखेंगे। इसलिए जीव में अहेतुक बंध तो माना नहीं जा सकता। यदि जीव के बंध ही न माना जाए, तो वह नित्य मुक्त ही कहलाएगा अथवा यदि बंध ही न हो, तो उसे मुक्त भी कैसे कहा जा सकता है, क्योंकि बंध सापेक्ष ही मोक्ष व्यवहार है। जैसे आकाश में बंध नहीं होता, तो मोक्ष भी नहीं होता, वैसे ही जीव में भी यदि बंध न हो, तो मोक्ष भी न हो।

इस प्रकार तुम मानते हो कि कर्म से पूर्व जीव को मानने पर बंध मोक्ष व्यवस्था घटित नहीं होती।

पूर्व कर्म अनन्तर जीव :-

जीव से पहले कर्म की उत्पत्ति भी सम्भव नहीं है और कारण के रूप में युक्ति देते हो कि जीव तो कर्म का कर्ता माना जाता है। अतः यदि कर्ता न हो, तो कर्म होगा कैसे ? और जीव की तरह कर्म की निर्हेतुक उत्पत्ति भी सम्भव नहीं है और यदि कर्म की उत्पत्ति में कोई भी कारण न हो और फिर भी वह उत्पन्न होता हो, तो उसका कार्य विनाश भी निर्हेतुक ही मानना चाहिए, किन्तु उत्पत्ति अथवा विनाश निर्हेतुक तो हो नहीं सकते, इसलिए कर्म को जीव के पहले नहीं माना जा सकता।

जीव कर्म युगपत भी नहीं :-

अब यदि कहो कि जीव और कर्म युगपद उत्पन्न होते हैं, तो उनमें जीव को कर्ता और कर्म को उसका कार्य नहीं कहा जा सकता। लोक व्यवहार में भी देखते हैं कि एक साथ ही उत्पन्न होने वाले गाय के सींगों में जैसे एक को कर्ता और दूसरे को कार्य नहीं कहा जाता, वैसे ही जीव और कर्म भी यदि एक साथ उत्पन्न हो, तो उनमें भी कर्ता-कार्य का व्यपदेश - व्यवहार घटित नहीं हो सकता।

इस प्रकार जीव व कर्म का संयोग सही मानने में तुम्हारे मतानुसार अनुपपत्ति है तथा जीव और कर्म का अनादि सम्बन्ध भी तुम्हें अयुक्त प्रतीत होता है। और इसके लिए तर्क युक्ति देते हो कि- यदि उसे अनादि माना जाए, तो जीव को कभी मोक्ष होगा ही नहीं। जो वस्तु अनादि होती है, वह अनन्त भी होती है। जैसे जीव और आकाश का सम्बन्ध अनादि हो, तो उसे अनन्त भी होना चाहिए और यदि अनन्त हो, तो जीव को कभी भी मोक्ष होगा ही नहीं, क्योंकि कर्म संयोग सदैव रहेगा।

इस प्रकार पूर्वोक्त वेदवाक्यों के उपरान्त युक्तिपूर्वक तुम मानते हो कि बन्ध और मोक्ष जीव में घट नहीं सकते, किन्तु वेद वाक्य में तो बंध-मोक्ष के अस्तित्व का प्रतिपादन है। जिससे तुम्हें संशय है कि बन्ध-मोक्ष वस्तुतः है या नहीं ? लेकिन ऐसा संशय तुम्हें करना नहीं चाहिए। उसका कारण मैं तुम्हें बताता हूँ।

संशय निवारण : कर्म सन्तान अनादि है :-

मंडित- आर्य ! कृपा कर मेरे संशय का निवारण कीजिए। आप बतलाइए कि मेरी युक्तियों में क्या दोष है और जीव को बन्ध मोक्ष किस तरह संभव है ?

महावीर- आयुष्मन् ! पूर्वोक्त तुम्हारी युक्ति का यही सारांश है कि जीव-कर्म का संबंध घट नहीं सकता। इसके बारे में स्पष्टीकरण यह है कि शरीर एवं कर्म की सन्तान अनादि है, क्योंकि इन दोनों में कार्य कारण भाव है, बीज-अंकुर की तरह। जैसे बीज से अंकुर और अंकुर से बीज यह क्रम अनादिकाल से चालू हैं इसलिए बीज और अंकुर की संतान अनादि है। इसी प्रकार शरीर से कर्म और कर्म से शरीर की उत्पत्ति का क्रम अनादिकाल से चला आ रहा है। इसलिए इन दोनों की सन्तान भी अनादि है।

(क्रमशः)

◆◆◆

अध्यक्षीय पाती

अच्छाइयों को स्थायी बनाया जावे

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ

सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त कोविड-19 का प्रसंग संभवतः इक्कीसवीं शताब्दी का सर्वाधिक दुर्भाग्य है। सिर्फ एक या दो राष्ट्रों को छोड़कर सम्पूर्ण राष्ट्र इसकी चपेट में हैं तथा लाखों लोगों की मृत्यु हुई। महामारी कोरोना वायरस एकदम नया ऐसा संकट है जिसको रोकने के लिए कोई टीका नहीं है, इसके ईलाज के लिए कोई दवा, इंजेक्शन, केप्सूल या गोली नहीं हैं। यह संक्रमित रोग होने के कारण दुनियां के चारों कोनों में बुरी तरह फैल गया, करोड़ों लोग हाहाकार कर बैठे। विश्व भर के लाखों चिकित्सा विशेषज्ञ इसकी वैक्सिन का निर्माण करने में रात-दिन जुटे रहे। इस संक्रमण के कारण प्रत्येक देश में लॉक डाउन हुआ, जीवन की अनिवार्य गतिविधियाँ भी शासकीय नियंत्रण से ठप्प हो गईं। एक ही सूत्र सभी को दिया गया- 'अपने घर में ही रहो, बहुत अनिवार्य होने पर घर से बाहर निकलो।' भीड़ एकत्र करने वाले सभी आयोजनों को रोक दिया गया, जिससे रेलों, बसों, यातायात के साधनों, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक कार्यक्रमों व उत्सवों, सिनेमा, पर्यटन, घूमने आने-जाने पर बन्दिशें हो गईं। भारत में सभी समाचार पत्र तक दो से तीन महिनों के लिये बंद रहे। इस दौरान जितने परम्परागत धार्मिक कार्यक्रम आये जैसे चातुर्मास, प्रवचन, सामायिक, मेले, जन्मोत्सव या धार्मिक पर्वोत्सव सभी प्रतिबंधित रहे हैं। मंदिरों एवं तीर्थों तक के दरवाजे बंद रहे। देश में ही एक स्थान से दूसरे स्थान पर यात्रा करना रोक दिया गया था।

ऐसा वातावरण तथा जीवन संचालन पहली बार देखा। यह उल्लेखनीय है कि जैन आचार संहिता ने मर्यादा का पालन करने वालों को संरक्षण दिया। मास्क लगाने की अनिवार्यता तथा जैन धाराओं विशेष द्वारा मुखकोष या मुहपत्ति अथवा मुखवस्त्रिका का उपयोग करने का नियम मेल खाते हैं। मांसहारियों के लिए कोरोना बीमारी का साधन है, मदिरा के पियक्कड़ मौत के मेहमान बनने को बाध्य हुए। रात्रि भोजन निषेध कोरोना का सामना करने में सक्षम

पाया गया। गर्म जल का उपयोग कोरोना से बचाव माना गया। बासी तथा ठण्डे भोजन को त्याज्य घोषित कर दिया गया। अभक्ष्य पदार्थों से दूर रहने का आह्वान किया गया, इत्यादि इत्यादि । कुल मिलाकर आचार तथा आहार में जैन धार्मिकता को पश्चिमी देशों तक में अपनाया गया।

इसके साथ ही कोरोना में किये गये लॉकडाउन तथा लगाये गये प्रतिबंधों के कारण समाज में प्रचलित कई बुराइयों को मिटने या स्थगित रहने के लिए मजबूर होना पड़ा। विशेषतः सामाजिक तथा धार्मिक स्तर पर महंगे या खर्चीले आयोजन रुक गये। मृत्युभोज तथा मृत्यु के अवसर पर किये जाने वाले खर्च बंद रहे। धार्मिक प्रभावना या आडम्बर वाले कार्यक्रमों में भी सुधार हो गया। विवाहोत्सव के नाम पर खर्च करोड़ों तक पहुंचने लगा था, समाज का कमजोर वर्ग परेशान था। कोरोना ने बड़े व महंगे भोजों पर ताले लगवाकर समाज के सामान्य वर्ग को राहत दी। विवाहों में प्रीवेडिंग एवं महिला संगीत विकृतियों की ओर जा रहे थे, समाजसेवी चिल्ला-चिल्ला कर इनका विरोध करने के बावजूद इनको रोकने में असफल से थे। कोरोना ने इन कुरिवाजों को हतोत्साहित करते हुए निर्मूल कर दिया। जीवन के कई छोटे-बड़े अवसर लाखों के अपव्यय में अपनी धनाड्यता का प्रदर्शन करने पर तुले हुए थे, इनको भी फैलना बंद करना पड़ा। धर्म आचरण की पवित्रता को अपनाने के स्थान पर प्रतिस्पर्धा का घर बनता जा रहा है, उस शैली को कोरोना के आघात को सहन करना पड़ा।

वैसे कोरोना संक्रमण रोग है, जीवन में खतरा है, उसे अच्छा साबित नहीं कर सकते, वह घातक बीमारी तथा बुराई है, उसका उन्मूलन आवश्यक है लेकिन इसके प्रसार के कारण से अनिवार्यताओं ने जिन अच्छाइयों को जन्म दिया है उनको बनाये रखना भी कर्तव्य है। आशा है समाज इस दिशा में भी भविष्य की नीति तय करेगा। जय जिनेन्द्र !

◆◆◆

संयम

नियम संयम से रहना कोई बहुत मुश्किल काम नहीं बशर्ते आप मन से ऐसा चाहें। आप जो चाहें सो कर सकते हैं लेकिन आप चाहें ही नहीं और यह बहाना बनाएं कि क्या करें, नियम संयम निभ नहीं पाता तो यह बात पक्की है कि आप चाहते ही नहीं है। मन का मामला ऐसा है कि यदि आपने बुद्धि के अधीन मन को रखा तो निश्चित ही वह सब कुछ किया जा सकेगा जो आप करना चाहते हैं कि लेकिन यदि आपने मन की अधीनता स्वीकार कर ली तो फिर वह नहीं हो सकेगा जो आप चाहते हैं।

अध्यक्षीय संदेश

प्रतिक्रमण कंठस्थ स्पर्धा

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष

परिषद द्वारा जैनाचार्य श्रीमद् विजय धनचन्द्रसूरिजी म.सा. के स्वर्गारोहण शताब्दी समारोह के प्रसंग पर अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की राष्ट्रीय बैठक के निर्णयानुसार प्रतिक्रमण कंठस्थ स्पर्धा का आयोजन किया जा रहा है। इस स्पर्धा में 1 अगस्त 1997 के बाद जन्मे याने 23 वर्ष से कम आयु वाले अभिलाषी भाग ले सकेंगे। इसका उद्देश्य राई, देवसीय या पंच प्रतिक्रमण पूरी तरह से विधि सहित कंठस्थ करके स्वयं करे एवं अन्य को करा सके ऐसी योग्यता में पारंगत करना है। प्रतिभागी को 30 अप्रैल 2021 तक प्रतिक्रमण पूरी तरह कंठस्थ कर लेना है। प्रतियोगिता दो वर्गों में है। इनकी आकर्षक पुरस्कार राशि इस प्रकार है जो दोनों वर्गों में ड्रा द्वारा निर्णित विजेताओं को प्रदान की जाएगी। राइदेवसीय प्रतिक्रमण वर्ग में प्रथम- 31 हजार रु., द्वितीय- 21 हजार रु., तृतीय -15 हजार रु., चतुर्थ - 11 हजार रु. तथा प्रोत्साहन 5 हजार रुपये के पुरस्कार हैं। पुरस्कार के लाभार्थी परिवार इस प्रकार हैं-श्रीमती कांताबेन बाबूलाल वोरा परिवार रमेश भाई नड़ियाद, स्व. अलकाबेन भारतभाई वाघजीभाई वोहरा परिवार, मुबई, विजयाबेन बचुभाई चीमनलाल धरू परिवार, रमेशभाई धरू मुंबई, श्री प्रकाशजी तगराजजी हीरानी परिवार रेवतड़ा बैंगलोर, श्री चंद्रशेखरजी मनोजजी, मुकेशजी जैन नाकोड़ा हीरा द्वारा झाबुआ।

आशा है यह योजना सूत्र कंठस्थ उद्देश्य की सम्पूर्ति करेगी।

◆◆◆

मन

मनुष्य का मन चंचल है। मन के भीतर तीव्र कामनाएँ हैं। इन कामनाओं के कारण पीड़ाएं भी हैं, कई शिकवे भी हैं। मन में कई खरोंचें भी लगी हुई हैं और कई अनभरे घाव भी हैं। क्रोध मन का रोग, मन का पागलपन है। ईर्ष्या-द्वेष, वैर-विरोध, चिड़चिड़ापन, प्रतिस्पर्धा, डर, आत्महत्या की भावना ये सभी मानसिक बीमारियां हैं। हमें मन को उद्वेगों से बचाना होगा, ताकि जीवन में शांति का रसास्वाद कर सकें।

महाराजा श्रेणिक

(मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)

प्रसूति - समय पर महाराज श्रेणिक बेचैनी से परिणाम तथा प्राप्ति की प्रतीक्षा में थे। ज्यों-ज्यों समय बढ़ता गया श्रेणिक की व्याकुलता बढ़ गई। उनने निर्णय स्वयं चल कर जानने का तय किया। वे राजमहल की ओर बढ़ चले। मार्ग में वह परिचारिका लौटते हुए मिल गई। श्रेणिक ने उससे पूछताछ की। परिचारिका संभली हुई नहीं रह सकी। वह रो पड़ी। श्रेणिक ने उसे विश्वास में लेकर जानना चाहा, इस पर उसने पूरा वृत्तांत श्रेणिक को बता दिया। महाराजा श्रेणिक तत्काल अशोक वन पहुंचे, उनने देखा कि नवजात बालक रो रहा है। श्रेणिक ने बालक को उठाया। उसकी एक उंगली पर किसी पक्षी ने अपनी चोंच के प्रहार से चोट मारी लगी। इससे बालक की ऊंगली से खून की धारा बहने लगी। महाराजा ने बालक को गोद में उठाया तथा उसकी उंगली को अपने मुंह में रखकर चूस लिया खून बंद हो गया वे राजमहल में आये। उनने महारानी चेलना को उणालंभ दिया तथा समझा कर बालक को उसे दे दिया। श्रेणिक ने चेलना को स्पष्ट कर दिया कि यह हमारे कूल का पहला राजकुमार है। इसे अपने वात्सल्य का पात्र बनाओ, अपने क्रोध का निशाना नहीं। चेलना ने महाराजा की आज्ञा को शीरोधार्य कर लिया तथा पुत्र को गोदी में लेकर उसका पालन पोषण करने की महाराजा के सामने कसम खा ली। बालक की उंगली को पक्षी द्वारा घायल किये जाने के कारण जब उसका शरीर बड़ा हुआ तो वह उंगली छोटी दिखने लगी। इस कारण परिवारजन उसे 'कुणक' कहने लगे। आगे जाकर उसे सभी 'कुणिक' ही कहने लगे। कुछ शास्त्रकारों का मत है कि परिवार ने बालक का नाम अशोकचन्द्र दिया था, जो बहुत प्रसिद्ध नहीं हुआ।

चेलना ने दो पुत्रों को बाद में और जन्म दिया। श्रेणिक भगवान श्री महावीर स्वामी का अनुयायी था। उस समय भगवान महावीर का विचरण क्षेत्र भी मगध तथा विशेषतः राजधानी राजगृह ही था। जब भी प्रभु राजगृह आते श्रेणिक अपनी रानी चेलणा के साथ उनका उपदेश सुनने जाता था। चेलना महाराजा चेटक की सुपुत्री थी तथा चेटक भगवान महावीर के अनन्य भक्तों में से एक थे। चेटक की बहिन त्रिशला का विवाह प्रभु महावीर ने पिता सिद्धार्थ के साथ हुआ था। (क्रमशः) ◆◆◆

अतिथि रचना

एगो अहंमसि नत्थि मे कोई

(आचार्य श्री विजय जिनोत्तमसूरीश्वरजी म.सा.)

मैं अकेला हूँ। मेरा कोई नहीं।

बारह धर्म भावनाओं में चौथी एकत्व भावना है। उस संबंध में कवि कहता है-

आप अकेला अवतरे, मरे अकेला होय।
यों कबहू या जीव को साथी सगा न कोय।।

जन्म-जन्मान्तर की यात्रा करता हुआ जीव अकेला ही माता के गर्भ में आता है। गर्भकाल के सवा नौ मास पूरा होने पर वह अकेला ही जन्म लेता है। हां, पूर्व जन्म में किये हुए पुण्य-पाप अवश्य ही उसके साथ आते हैं। बाकी परलोक से कुछ भी नहीं लाता। माता-पिता के रक्त-मांस आदि अवयवों से उसका शरीर बनता है। जन्म लेते समय शरीर पर एक धागा भी नहीं रहता। जन्म के पश्चात् सचमुच एक नये संसार की रचना होती है। वस्त्र पहनाये जाते हैं। माता दूध पिलाती है। डॉक्टर, नर्स तथा माता आदि परिजन उसकी देखभाल कर पालन-पोषण कर बड़ा करते हैं।

बालक किशोर बनता है। पढ़ाई-लिखाई करता है। युवा होने पर विवाह होता है। पत्नी आदि परिवार बढ़ता है। एक से दो, दो से चार। इस प्रकार संसार का विस्तार करता जाता है। नौकरी, व्यापार आदि करके धन कमाता है। रहने के लिये सुन्दर आलीशान बंगला बनाता है। अच्छी से अच्छी गाड़ियाँ खरीदता है। भौतिक सुख-सुविधाओं के अपार साधन जुटाता है। दिन-रात कमाना, मौज-मस्ती और सोना इस प्रकार उसकी जिन्दगी की गाड़ी चलती रहती है।

सद्गुरुदेव, ज्ञानी पुरुष उसे शिक्षा देते हैं- 'भाई ! दिन-रात कमाने - खाने के चक्कर में पड़कर तेली के बैल की तरह जिन्दगी की धुरी पर घूमता रहेगा या कुछ धर्म करनी करने का समय भी निकालेगा ? शरीर की, परिवार की, समाज की चिंता और देखभाल में ही जीवन मत गुजार। कुछ क्षण शांत-एकांत में बैठकर प्रभु भजन भी कर। परमात्मा का स्मरण

कर। सामायिक, देववन्दन, जिन-पूजन, गुरु दर्शन, दान, सेवा आदि सत्कर्म भी कर। शरीर, धन परिवार आदि मरते समय यहीं रह जायेंगे। प्राण निकलते ही शरीर को छोड़कर आत्मा परलोक में अकेली ही जायेगी। शरीर रूपी माटी यहीं पड़ी रहेगी। धन भी यहीं पड़ा रह जायेगा। माता, पत्नी घर के दरवाजे पर तुझे छोड़ देंगे। परिवारजन श्मशान तक तुझे कंधों पर ढोकर ले जायेंगे और जलाकर राख कर देंगे। सब कुछ यहीं पर धरा रह जायेगा।

धरा रहेगा धन वैभव सब, खड़ा रहेगा सब परिवार।
चिता जलेगी मरघट पर जब, हो जायेगा तन यह छार ॥

कहते हैं, महमूद गजनवी ने 17 बार भारत पर आक्रमण किया। भारत के मंदिरों की अपार धन-संपत्ति लूटी, मंदिरों को तोड़ा। हजारों-लाखों मासूम लोगों का खून बहाया। भारत से अपार स्वर्ण और हीरे-जवाहरात आदि लूटकर ऊंटों पर लादकर अपने देश को ले जा रहा था। रास्ते में ही बीमार पड़ गया। असाध्य रोग जब मौत बनकर सामने आया तो सुल्तान भयाक्रांत हो उठा। सेना, धन, हकीम कोई भी उसकी जान नहीं बचा सके तो पागल-सा हो उठा। अपने दोनों तरफ सोने-चांदी, जवाहरात के ढेर लगवाये। एक तरफ सेना को खड़ा किया। एक तरफ नौकर-चाकर को खड़ा कर एक-एक चीज को देखता और रोता, आँसू बहाता बोला- मैंने दुनिया को लूटा, इतनी दौलत जमा की। क्या इसमें से कुछ भी मेरे साथ नहीं जायेगी ?

वजीर ने कहा- 'हजूर ! एक फूटी कौड़ी भी आपके साथ नहीं जायेगी। सब कुछ यहीं धरा रह जायेगा।' सुल्तान फूट-फूटकर रो पड़ा - हाय ! यह सारी धन-दौलत छोड़कर मुझे अकेला खाली हाथ इस दुनिया से जाना पड़ रहा है।

ज्ञानियों ने ठीक कहा है-

एक उत्पद्यते तनुमा-नेक एक विपद्यते।
एक एव हि कर्मचिनुते सैककः फलमुश्नुते। - **शांत सुधारस, 4/2**

यह जीव परभव से अकेला आता है, अकेला ही मरता है। जैसा कर्म संचित करता है, बस, वही परभव में उसके साथ जाता है।

भगवान फरमाते है-

एगो अहमंसि, नत्थि में कोई। - **आचरांग सूत्र, 1/81**

मैं इस संसार में अकेला हूँ। कुछ भी मेरा नहीं है। सब कुछ यहीं रह जायेगा। ◆◆◆

संयम का सहसावन
मिलता जहाँ आत्मिक आनंद

(साध्वी श्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

जिनशासन में भोगजीवन की प्रधानता या प्रतिष्ठा नहीं है परन्तु ज्ञानपूर्वक आत्मा के एकांत कल्याण की भावना से जन्म मरण की परंपरा को तोड़ने के लिए त्याग मार्ग की ही प्रतिष्ठा है। सम्पूर्ण जगत का उद्धार करने की अभिलाषा रखने वाले तीर्थंकर परमात्मा ने संसार की सभी भौतिक ऋद्धि-समृद्धि को तिनके की तरह छोड़कर संयम धर्म अंगीकार किया। ऐसे परमपवित्र सर्वविरति धर्म का एक साथ एक ही दिन 24-24 मुमुक्षुओं ने दीक्षादानेश्वरी गच्छाधिपति लोकसंत स्व. श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. के मुख कमल से संयम ग्रहण किया। जो भव भगवान बनाने के लिए मिला उस भव को भोगों का भिखारी बनकर व्यर्थ में खोना नहीं। यह गुरु वाणी सुनकर संसार के दलदल से निकलने का इन मुमुक्षुओं ने निश्चय किया था।

जे मार्ग प आरूढ़ थई तीर्थंकरों पण चालता,
जे मार्ग ने सुरलोक ना देवों सदा ए झंखता ।
जे मार्ग ने ग्रही ने अनंता जीव सिद्धि पामता,
ते परम संयम धर्म ने हो जो सदा मुझ वंदना।।

तीर्थंकरों को तीर्थंकर का पद तथा गणधरों को गणधर पद जिसको ग्रहण करने के बाद ही मिलता है ऐसा यह सर्वविरति धर्म को इन्द्र भी अपने सिंहासन पर बैठने के पूर्व भावपूर्वक नमस्कार करते हैं। ऐसा यह सर्वविरति धर्म... जिसका ग्रहण करके दृढ़प्रहरी, अर्जुनमाली जैसे हत्यारे रोहिणिया जैसे चोर, लुटेरे आदि ने अपना कल्याण कर लिया। ऐसा यह प्यारा मुनिवेश जिसको मात्र खाने के लिए पहनकर - एक ही दिन में इस वेश की अनुमोदना करते - करते मृत्यु को प्राप्त हुआ और सम्प्रति महाराजा बन गया।

जिनकी गौचरी चर्या को देखकर ईलायची कुमार की विकारी आँखें सदा के लिए निर्विकारी हो गई ऐसा निर्मल यह मुनि जीवन हजारों जीभ से भी जिसके गुणों को गाया नहीं जा सकता है ऐसे जीवन की मैं किन शब्दों में अनुमोदना करूं, जिनकी एक-एक क्रिया पवित्र और अन्य को प्रतिबोध देने वाली होती है। जिनका ईर्यासमिति पूर्वक नीचे देखकर चलना, भाषा समिति का पालन करते हुए मुहपत्ति के उपयोग पूर्वक मधुर-निर्दोष वाणी बोलना, ऐषणा समिति का पालन करते हुए निर्दोष गौचरी व्होरना, वस्तु को उठाते और रखते समय-भूमि की प्रमार्जना करना, निर्जीव भूमि पर मल-मूत्र का उत्सर्जन करना आदि, एक माता की गोद को छोड़कर- अष्टप्रवचन माता की गोद में मुनि आनंदित और सुरक्षित रहता है।

सर्वविरति दीक्षाधर्म अर्थात् विनय, वैयावच्च, संयम, स्वाध्याय तथा समाधि इन पाँचों का सुभगमिलन। यह मिलन ही मोक्ष तक पहुँचाने में समर्थ बन सकता है। पर प्रवृत्ति में बहरा, अंधा, गूंगा बनकर के साधु आत्म प्रवृत्ति रुप रत्नत्रय में रस लेने वाला होता है। इसलिए कहा है-

साधु तो 'सुखिया घना-दुःखड़ों नहीं लवलेश ।
परम सुख ने पामवा पेरो साधु को वेश ।।

('साधुनां दर्शनम् पुण्याम्') संयमी का दर्शन भी पुण्य का बंध करवाता है। आज दुनिया जिस भौतिक सुख के पीछे दौड़ रही है वहीं से मुमुक्षु उसको छोड़ने के लिए तड़प रहे हैं। अपार भोग विलास के साधनों में रहने के बाद भी देवराज इन्द्र, चक्रवर्ती, सेठ, राजा कोई भी सुखी नहीं है। सुखी तो इस लोक में ज्ञान से तृप्त, कर्म मल से हलके गुणवान् ऐसे साधु ही हैं। आत्मा यह अक्षय आनंद का महासागर है। इस आनंद को प्रगट करने के लिए विधिपूर्वक दीर्घकाल तक सद्‌गुणों की साधना करना पड़ती है। सद्‌गुणों की साधना किये बिना जो सुख का आभास होता है वह सुख नहीं भ्रांति है। सद्‌गुणों की साधना का आनंद वज्रमय कोठी के समान होता है जिसे कोई खंडित नहीं कर सकता है। जबकि भौतिक सुख का आनंद फूले हुए गुब्बारे के समान निःसार है। जो थोड़ा सा आघात लगने पर टूट जाता है नष्ट हो जाता है। जिसे भी निराबाध और सच्चा सुख समाधि प्राप्त करने की इच्छा हो उसे सद्‌गुण की साधना का सर्वोत्कृष्ट श्रेष्ठ मार्ग सर्वविरति को स्वीकारना चाहिए। दीक्षा-जहाँ निरंतर सद्‌गुणी जीवों के सान्निध्य में रहकर दोषों का क्षय करते रहना और क्षमा, सरलता, नम्रता, निर्लोभता, तप, संयम, सत्य, पवित्रता, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह आदि आत्मिक गुणों को प्रगट करने का पुरुषार्थ करना होता है। इस संयम के सहसावन में सद्‌गुण पोषक हितोपदेश वह गुरु के मुखकमल से सतत् प्राप्त होता है।

जहाँ किसी पौद्‌गलिक वस्तु पर ममत्व नहीं, अपेक्षा नहीं, इच्छा नहीं अन्य कषाय आशा तृष्णा से दूर निर्मल-निर्दोष जीवन जीने को मिलता है ऐसा यह विरति धर्म ! इसकी प्राप्ति जिसे भी होती है वो हमेशा प्रसन्न रहता है। हर पल कर्म की निर्जरा करता है। अपने पवित्र करुणामय जीवन से अपने आत्मा के साथ सभी जीवों का कल्याण करता है और अंत में अपने सभी कर्मों का नाश करके सर्वोत्कृष्ट ऐसे शाश्वत सुख को प्राप्त करता है। संयम धर्म के नहीं होने की कल्पना भी हमें कितना भयभीत कर देती है ? मेरी दीक्षा के पवित्र दिवस माघ शुक्ल द्वादशी के दिन दीक्षादानेश्वरी प.पू. गुरुदेव ने मुझे रजोहरण प्रदान किया था-यह प्राणों से प्यारा संयम जीवन-रजोहरण- जब तक मुक्ति नहीं मिले तब तक भव-भव में प्राप्त होता रहे। बिना जल के मछली जैसी तड़पती है वैसी ही संयम प्राप्ति के बिना मेरी स्थिति हर भव में बने। यही आशीर्वाद-गुरुदेव आपसे चाहती हूँ। संयम लेने के लिए साहस और वैराग्य संयम पालने के लिए सत्व और संयम सफल बनाने के लिए समर्पण चाहिए। ये तीनों गुणों की प्राप्ति सभी मुमुक्षु में, मुझमें प्रगट हो यही अभ्यर्धना। ◆◆◆

गतांक के आगे

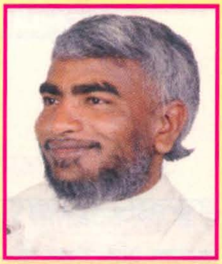

धर्म का मूल क्या है ?

(संशोधक– मुनि श्री चारित्र रत्नविजयजी म.)

लोकान्तिक देव मल्लीकुमारी की शरण में उपस्थित हुए तथा उनने भावी तीर्थंकर की सेवा में नतमस्तक हो उनसे प्रार्थना की कि वे धर्म तीर्थ का प्रवर्तन करे। ऐसी प्रार्थना प्रत्येक तीर्थंकर की आत्मा से उनमें वैराग्य उत्पन्न होने पर की जाने की परम्परा है। त्रिकालवर्ती लोकतांत्रिक देव यह उत्तरदायित्व निभाते हैं।

यहाँ भी मल्लीकुमारी के चरणों में लोकांतिक देवों ने तीन बार ऐसी प्रार्थना की। मल्लीकुमारी लोकांतिक देवों को बिदा कर, वे अपने माता प्रभावती तथा पिता कुंभ के सम्मुख आये। उनने माता-पिता से संयम ग्रहण करने की अनुमति मांगी। माता तथा पिता ने मल्लीकुमारी को परिषह की गंभीरता तथा संयम जीवन की कठिनाइयों को समझाया, लेकिन मल्लीकुमारी का संकल्प अटल दृष्टिगत कर उनने उत्तर दे दिया कि– 'जैसे तुम्हें सुख की प्राप्ति होती हो, वैसा करो।' मल्लीकुमारी को संयम ग्रहण की आज्ञा देकर पिता महाराज कुंभ ने अपने कुटुम्बीजनों तथा सेवकों से समारोह की भव्य तैयारी करने का आदेश दिया। इन्द्र महाराज का आसन कम्पायमान होने पर 64 इन्द्रगण का राज महल में आगमन हो गया। इन्द्रराज शक की आज्ञा का अभियोगिक देवों ने 1008 कलश तथा अन्य सामग्री प्रस्तुत की। तैयारी होने पर मल्लीकुमारी के अभिषेक की प्रक्रिया प्रारंभ की। मल्लीकुमारी को अभिषेक सिंहासन पर बिठाया गया तथा इन्द्र शक तथा महाराज कुंभ ने एक हजार आठ कलशों से अभिषेक किया। अभिषेक के पश्चात् मुमुक्षु को वस्त्रालंकारों से शोभित किया गया तथा शिविका में बिराजमान किया। मल्लीकुमारी का मुख पूर्व की ओर रखा गया। शिविका मुख्य वह थी जो देवों द्वारा लाई गई थी। वहाँ से मल्लीकुमारी ने शोभायात्रा सहित सहस्त्रा भवन की ओर प्रस्थान किया। शोभायात्रा में शिविका के सबसे आगे अष्टमंगल चल रहे थे। शोभायात्रा में इन्द्र, देवता, मनुष्य तथा नगरवासी भी उत्साहपूर्वक चल रहे थे। सभी मल्लीकुमारी सहित महोत्सव मनाते हुए वन में पहुंचे तथा उद्यान में स्थित अशोकवृक्ष के नीचे रूक गये। मानवों तथा देवों ने शिविका को कन्धे से नीचे उतारा।

(क्रमशः) ◆◆◆

हमारी पसंदगी की सज्झाय

(साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

कुशल कवि, दीक्षा दानेश्वरी, मम परम उपकारी राष्ट्रसंत पुण्य सम्राट श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने हजारों स्तवन, सज्झाय आदि की रचनाएँ की। जिन शासन की सेवा में व्यस्त होने पर भी, लाखों किलोमीटर का विहार करते हुए भी, भक्तों की भीड़ में भी निर्लेप रहकर चतुर्विध संघ के हित के लिए इतनी भावपूर्ण, वैराग्यसमय सज्झाए आदि की रचनाएँ की, जिसको भाव से गाने से आत्मा निर्मल, पवित्र बनती है और संसार के नश्वर सुखों का स्वरूप जानकर मोक्ष साधना में आगे बढ़ते हैं। मेरी एक प्रिय सज्झाए जिसका चिंतनकर मुझे बहुत आनंद हुआ। वह आनन्द में आपके साथ बांटना चाहती हूँ।

सज्झाय

चेतन रे ।। पंखी ना मेला जेवु देखीले संसार,
छोड़ी जवानु तन-धन परिवार
तन-धन परिवार, कर जे विचार... छोड़ी जवानु...

गुरुदेव श्री कहते हैं-

हे चेतना !!! अर्थात् हे जीव !!! यह संसार कैसा है ??? 'पंखी ना मेला जेवु' अर्थात् पक्षिओं का समूह जैसा जो संध्या के समय पेड़ पर एक साथ एकत्रित होते हैं और थोड़ी ही देर में अपने-अपने स्थान पर उड़कर चले जाते हैं। जैसे ट्रेन में अलग-अलग मुसाफिर मिलते हैं, बातें करते हैं, संबध बनाते हैं लेकिन अपना-अपना स्टेशन आने पर उतर जाते हैं। उनको छोड़कर अपने-अपने घर चले जाते हैं। वैसे ही कर्मवश जीव को तन-धन-परिवार आदि मिला है लेकिन कालपूर्व होने पर सब यहीं छोड़कर परलोक में चले जाते हैं, साथ में कुछ भी नहीं ले जाते हैं जिसको प्राप्त करने के लिए हम जिन्दगी भर मेहनत करते हैं उन सबको काल के क्षय होने पर छोड़कर जाना पड़ेगा।

जिसमें कोई सार नहीं वह संसार सुखाभास है।

वास्तव में संसार में किसी भी प्रकार का सुख नहीं है ।

पंचसूत्र ग्रंथ में बताते हैं -

इह खलु अणाईजीवे, अणाई जीवस्स भवे।
अणाई कम्म संजोग विव्वत्तिए दुक्खरुवे, दुक्खफले, दुक्खाणु बंधे ।।

अर्थात् : इस जंगत में जीव अनादिकाल से है, जीव का संसार अनादिकाल से है और अनादिकाल से चल रहे कर्मों के संयोग के कारण उत्पन्न हुआ है। यह संसार दुःख रूप है, दुःख रूप फल को देने वाला है और दुःख की परम्परा को लाने वाला है। इस प्रकार संसार की नश्वरता को जानता हुआ भी जीव जिनप्रणिता धर्म का आचरण नहीं करता हैं। तन-धन और परिवार में सुखत्व की बुद्धि को धारण करता है। वैराग्यशतक ग्रंथ में बताते हैं कि -

विहवो सज्जण संगो, विसयसुहाइं विलास ललिआइं ।
नलिणीदलग्गधोतिए, जललवपरिचंचलं सव्वं ।।

अर्थात् : वैभव (धन) कुटुम्ब का सम्बन्ध मनोहर ऐसे विषयसुख से तमाम कमलिनि के पत्ते के अग्रभाग पर रहे हुए, जल के बिन्दुओं के समान अत्यन्त ही चंचल है। ये सब पानी के बुलबुले की तरह नाशवंत है। इसलिए सत्ता, सम्पत्ति, शरीर आदि किसी भी चीज का अहंकार करने जैसा नहीं हैं। अतः हे जीव !!! तू शान्तचित्त से विचार कर संसार के स्वरूप का चिंतनकर... फिर ध्यान आएगा कि वास्तव में इस संसार में अपना कुछ नहीं है, आत्मा से अतिरिक्त सब भिन्न है।

तन-धन परिजन सौए जगतमां अंते न तारा थाए-2
लाड़ी वाड़ी गाड़ी पाछल जीवन चाल्यु जाय-2
चेतन रे ! स्वार्थ भरेली आ दुनियामां, तारु कोण विचार,
छोड़ी जवानु तन - धन परिवार...

अर्थात् : यह तन आज तक किसी का हुआ नहीं और किसी का होगा भी नहीं चाहे इसकी कितनी भी सेवा करो। अनंतकाल से जीव संसार में परिभ्रमण कर रहा है और प्रत्येक भव में जीव ने शरीर को धारण किया इसलिए जीव को शरीर

के प्रति अगाध प्रेम है। जिसके सुख में सुखी हो जाए, उसके कहने पर चलता है लेकिन जीव ने क्या कभी सोचा है कि वास्तव में शरीर का स्वरूप कैसा है ? जिसके पीछे हम इतनी मेहनत करते हैं–

श्री शांत सुधारस ग्रंथ में बताया है –

स्नायं पुनरपि पुनः स्नाति शुद्धाभिरद्भि,
वरिवारं बत मलतनुं, चन्दनैरर्चयन्ते ।
मूढाऽऽत्मानो वयमपमला: प्रीतिमित्याश्रयन्ते,
नो शुद्धयन्ते कथमवकरः शक्यते शोद्धुमेव ।।

अर्थात् : लोग बारबार स्नान कर लेने के बाद भी फिर शुद्ध जल से शरीर की शुद्धि के लिए स्नान करते हैं, मलमय शरीर को चंदन, कस्तूरी आदि सुगंधित पदार्थों से सुगंधित करते हैं, साबुन शरीर पर घिसते हैं और अपने आप को पवित्र और शुद्ध मानते हैं लेकिन थोड़े ही क्षण में यह शरीर अपवित्र, अशुद्ध हो जाता है क्योंकि इसका स्वभाव ही अशुचि फैलाना है तो वह किस प्रकार शुद्ध हो सकता है शरीर के रोम-रोम में अशुद्धि भरी हुई है इसलिए वह किसी भी प्रकार से शुद्ध नहीं हो सकता है। (क्रमशः) ◆◆◆

करुणा एवं वात्सल्यमूर्ति परमात्मा

परमात्मा की करुणामयी समदृष्टि, नदी के पानी की तरह सभी के लिए उपलब्ध होती है, जिसके पास जैसा पात्र है, प्राप्त कर सकता है। जिस प्रकार रेगिस्तान की गर्मी में वृटवृक्ष की छाया शीतलता प्रदान करती है उसी प्रकार संसार के संताप में परमात्मा की भक्ति शांति प्रदान करती है। परमात्मा आत्मा का ही विशुद्ध रूप हैं, अतः परमात्मा के स्वरुप एवं गुणों को जानकर, अपने मन मंदिर में प्रतिष्ठित करना होगा तब अवश्य ही आत्मा को शांति व विश्राम प्राप्त होगा, आत्मा व शरीर के बीच रहा हुआ मन ही जीवन में सजा व मजा का कारणभूत है। अतः मन को सही दिशा में मोड़ना ही परमार्थी का मुख्य पुरुषार्थ है। जिस प्रकार ताला खोलने व बंद करने की एक चाबी होती है मात्र घुमाने का अंतर हैं, दांये तरफ घुमाई जाए तो ताला खुलेगा व विपरीत घुमाने पर बंद होगा, यही काम मन का है यदि मन के परिणाम शुद्ध व आत्मा के सन्मुख है तो निर्जरा होगी व विपरीत होने पर बंध का हेतु बनेगा।

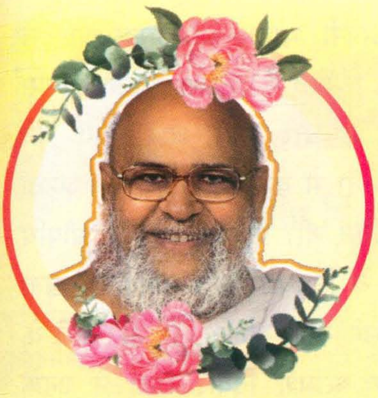

(लेखांक-6)

धारावाहिक उपन्यास

किस्मत की बात

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

'राजन ! मैंने रानीजी का अच्छी प्रकार परीक्षण कर उपचार आरम्भ किया। मैं स्वयं भी यह नहीं समझ पा रहा हूँ कि उचित औषधि देने के बाद भी रानीजी के स्वास्थ्य में सुधार क्यों नहीं हो पा रहा है?' राजवैद्य ने कहा।

'आप उनका अच्छी प्रकार परीक्षण कर लें। यदि आप चाहें तो अपने राज्य के अन्य वैद्यों को भी बुला लें और चाहें तो अन्य राज्यों के राज्यवैद्यों की सेवाएँ भी ली जा सकती है।' राजा ने सुझाव देते हुए कहा।

'जी, जैसा आपने आदेश दिया है, उसके अनुरूप कार्य किया जावेगा। मैंने आज एक और नवीन औषधि तैयार की है। वह देने के पश्चात् उसका क्या प्रभाव होता है। यह देखना है। साथ ही मैं आज ही अपने सेवकों को भेजकर अपने राज्य के प्रमुख वैद्यों को अविलंब यहां बुलवाकर उनसे भी विचार विमर्श करता हूँ। यदि आवश्यक हुआ तो अन्य राज्यों के राज्यवैद्यों की सेवाएं भी प्राप्त कर ली जावेगी।' राजवैद्य ने अपने विचार प्रकट किए।

राजवैद्य की नवीन औषधि भी प्रभावहीन ही रही। राज्य के प्रसिद्ध वैद्य भी आ गए। उन्होंने भी रानी का परीक्षण किया। किन्तु वे भी रानी के शरीर में उत्पन्न रोग को पहचान कर उसका कोई निदान नहीं कर सके। कुछ अन्य राज्यों के वैद्यों को भी बुलाया गया किन्तु वे भी रानी को स्वस्थ नहीं कर सके। अब तो स्थिति यह हो रही थी कि जैसे -जैसे उपचार बढ़ रहा था वैसे - वैसे रानी का यह अज्ञात रोग

भी बढ़ता जा रहा था। यानी मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा दी। राजा वीरधवल, राज्याधिकारी, जनता सभी रानी के इस असाध्य रोग के कारण चिंतित दिखाई दे रहे थे। सभी की जिह्वा पर एक ही बात थी- 'परमात्मा हमारी रानी को शीघ्र ही स्वस्थ कर दे।'

इसी बीच चर्चाओं में राजा को किसी ने परामर्श दिया की किसी तांत्रिक को बुलवाकर तांत्रिक क्रिया द्वारा उपचार करवाया जाए। हो सकता है कि ऐसा करने से रानीजी स्वस्थ हो जावे। राजा वीरधवल ने अपने महामात्य को कहकर तत्काल प्रसिद्ध तांत्रिकों को भी बुलवा लिया । तांत्रिकों ने एक स्वर में रानी के रोगों को दूर भगाने की घोषणा कर दी। उनके द्वारा चाही गई समस्त प्रकार की सामग्री भी उन्हें उपलब्ध करवा दी गई।

तांत्रिकों की क्रियाएं शुरू हुई किन्तु उनके अथक परिश्रम करने के पश्चात् भी रानी पद्मावती स्वस्थ नहीं हो पाईं। सभी तांत्रिक थक हारकर अपने-अपने घर चले गए। यह प्रयोग भी असफल रहा। रानी को किसी प्रकार का लाभ नहीं हुआ। राजा वीरधवल की चिंता और अधिक बढ़ गई। राजकुमारद्वय वीरभाण और उदयभाण भी अब अपनी माता की अस्वस्थता से अधिक चिंतित थे। किन्तु किसी के पास इसका उपचार नहीं था। रानी की अस्वस्थता से कनकपुर राज्य की जनता भी चिंतित थी। प्रजा में जो भी औषधि विज्ञान के विषय में कुछ जानकारी रखता था, उसने राजा को अपनी जानकारी के अनुसार परामर्श दिया। राजा ने उनके अनुसार भी रानी का उपचार करवाया, किन्तु उसका भी कोई अनुकूल परिणाम नहीं निकला। अंततः राजा ने अपने राज्य में और आसपास के अन्य राज्यों में पटह पड़वाई दी कि जो कोई भी व्यक्ति रानी को स्वस्थ कर देगा, उसे पुरस्कार के रूप में आधा राज्य दिया जावेगा। इस समाचार से अनेक लोभी व्यक्तियों का राजमहल में जमघट लग गया।

राजा वीरधवल ने इन लोगों के लिये यह व्यवस्था कर दी कि रानी का परीक्षण करने के पूर्व कनकपुर के राजवैद्य से परामर्श करे। जिस व्यक्ति के ज्ञान से राजवैद्य संतुष्ट हो जावेंगे, वह व्यक्ति रानी के रोग का परीक्षण कर उचित औषधि देगा। इस प्रकार की व्यवस्था से अनेक व्यक्तियों को निराश होकर वापस अपने घर जाना पड़ा। (क्रमशः) ◆◆◆

प्रश्नोत्तरी

जीव विपाकी कर्म किसे कहते हैं ?

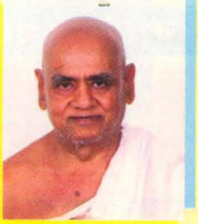

उत्तरदाता

स्व. जैनाचार्य श्रीमद् विजय
जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्रश्नकर्ता

जैनाचार्य श्रीमद् विजय
नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्रश्न – दर्शन निषेध किसे कहते हैं ?

उत्तर– राग, प्रेम भरी दृष्टि से अंग प्रत्यंगों को न देखना।

प्रश्न – श्रवण निषेध किसे कहते हैं ?

उत्तर– स्त्री-पुरुषों के सांयोगिक विकारोत्पादक शब्दों का श्रवण नहीं करना। दीवाल एवं पर्दा आदि के अनन्तर से भी जहाँ ऐसे शब्द सुनाई दें, वहाँ नहीं ठहरना।

प्रश्न – स्मरणवर्जन किसे कहते हैं ?

उत्तर– पूर्व अवस्था में की हुई काम क्रीड़ा का स्मरण नहीं करना।

प्रश्न – सरस आहार त्याग किसे कहते हैं ?

उत्तर– विकास उत्पन्न करने वाले सरस भोजन का त्याग करना।

प्रश्न – अति आहार निषेध किसे कहते हैं ?

उत्तर– साधारण आहार भी मात्रा से अधिक न लेना।

प्रश्न – विभूषा परित्याग किसे कहते हैं ?

उत्तर– स्नान विलेपन, तिलक आदि द्वारा शरीर को विभूषित नहीं करने को विभूषा परित्याग करहते हैं।

प्रश्न – यति (मुनि) धर्म कितने प्रकार का है ?

उत्तर– यति धर्म दस प्रकार के हैं– (1) क्षमा (2) आर्जव (कपट न करना) (3) मार्दव (कोमलता रखना) (4) तप (6) संयम (7) सत्य (8) शैव (9) अकिंचनता (10) ब्रह्मचर्य। (क्रमशः)

◆◆◆

जीवन में सफलता

(श्रीमती पद्मा हेमेन्द्र सेठ)

संसार का प्रत्येक व्यक्ति अन्धकार से डरता है, और उससे दूर भागकर उजाले की ओर जाना चाहता है। वहाँ अपने अस्तित्व को तलाशता है, किन्तु वह जानता है कि अंधेरा वहाँ भी स्वयं के साये के रूप में सदैव साथ-साथ रहेगा। यहाँ अंधेरे से अर्थ मनुष्य जीवन में आने वाले संघर्ष को इंगित किया गया है, जिस प्रकार काँटों रहित गुलाब के फूलों का विकास अभी तक नहीं किया जा सका है, उसी प्रकार मानव जीवन में सुख के साथ ही दुःख भी स्वीकार्य होने चाहिये, मनुष्य को गुलाब के फूलों की तरह भाग्यशाली व खुशहाल बनना है तो काँटों (दुःखों) में भी मुस्कराकर अपनी असफलता को सहर्ष स्वीकार करना चाहिये।

संघर्षशील व्यक्ति के लिये प्रत्येक कार्य सरल हो जाते हैं, यदि संघर्ष के दौरान समय की पाबन्दी रखी जावे तथा प्रारम्भिक शुरूआत क्रमबद्ध एवं नियमानुसार हो तो व्यक्ति का आधा कार्य पूर्ण मान लिया जाता है क्योंकि सफलता में परिश्रम के साथ-साथ समय योजना का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है, व्यक्ति को अंधेरे से मुँह मोड़ने की अपेक्षा अंधेरे से निकलने का प्रयास करना चाहिए, अंधेरे - रूपी दानव को पार कर लेने के पश्चात् व्यक्ति में आत्म विश्वास प्रबल हो जाता है।

आज की आधुनिकतम एवं दौड़ती-भागती जिन्दगी के युग में सफलताओं को ही व्यक्ति का मापदंड मान लिया गया है, आप जो सफल होते हैं उसे ही समाज एवं स्नेहीजनों द्वारा निखारा एवं निहारा जाता है, उसे ही सर्वोच्च सम्मान दिया जाता है, जबकि असफल के प्रति आत्मीय भावना जागृत नहीं हो पाती है, उसे समाज सहर्ष स्वीकार नहीं करता है, अतः सफलता ही हमारा ध्येय होना चाहिये। सफलता में हमें मानवीय संस्कारों एवं मानवता का पूर्ण ध्यान रखना चाहिये।

'When the life of Success fails try the stair case'

अर्थात :- सफलता की सीढ़ी विफल हो जावे तब सीढ़ी-दर-सीढ़ी चढ़ने का प्रयास करना चाहिये। अन्त में जीवन को फूलों के समान बनाने के लिये सदैव याद रखा जाना चाहिये कि -

सदा जीवन में फूलों की तरह खिलते रहिये,
सफलता के लिये अविराम चलते रहिये ।।

◆◆◆

(संयोजक)
शांतिलाल रामानी

मुनि श्री प्रशमसेनविजयजी
महाराज

बाल्यकाल

(प्रस्तोता – मुनिराज प्रशमसेनविजयजी म.सा.)

श्रीमान् स्वरुपचंदजी धरु का परिवार एक सम्पन्न परिवार था। एक सम्पन्न परिवार में बालकों का जिस प्रकार लालन-पालन होता है, ठीक उसी प्रकार लाड़-प्यार भरे वातावरण में पूनमचंद का लालन-पालन हुआ। समय के प्रवाह के साथ-साथ पूनमचंद की अच्छी शिक्षा की पिता ने व्यवस्था कर दी। सर्वसुविधा सम्पन्न परिवार में जन्म लेने के बावजूद पूनमचंद का स्वभाव प्रारम्भ से ही कुछ भिन्न प्रतीत होता था। आमतौर पर बचपन में बालकों में चंचलता और चपलता अधिक देखने को मिलती है, किन्तु इसके विपरीत पूनमचंद में गंभीरता के लक्षण भी दिखाई देते थे। पूनमचंद की गंभीरता किसी को समझ में नहीं आती थी। माता-पिता तथा भाई आदि यही समझते कि इसका स्वभाव ही ऐसा होगा। पूनमचंद के मस्तिष्क में क्या चल रहा है? यह कभी किसी ने जानने का प्रयास नहीं किया। इसी प्रकार समय व्यतीत होता गया और पूनमचंद दस-ग्यारह वर्ष का हो गया। 'पूत के पग पालने' कहावत बचपन में राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्री महाराज पर चरितार्थ होती रही। वे बाल्यकाल से ही गंभीर थे। मौहल्ले या विद्यालय में कभी धमालपट्टी नहीं करते थे। भारतीय खेलों में पूनमचंद को रुचि थी। कबड्डी, गिल्ली-डंडा, सितोलिया (जन्मनाम) पूनमचंदजी को प्रिय थे। विद्यालय में होने वाली क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में पुरस्कार भी मिलता रहता था। बुद्धि के साथ स्मरण शक्ति भी तीव्र थी। एक बार कक्षा में अध्यापक ने परीक्षा लेने के लिए एक दिन पूर्व तक करवाये गये अभ्यास में से पूछा। पूनमचंद ने सही उत्तर दे दिये। आपके बचपन के

मित्रों में श्री सेवन्तीलाल मोरखिया, श्री लेहरचंदभाई वोरा, श्री महासुखलाल मणिलाल देसाई, श्री धुड़ालाल वीरचंद, श्री फोजालाल नरपतलाल, श्री कांतिलाल चुन्नीलाल वोहरा, श्री वाघजी भूदरमलजी दोशी (सभी अहमदाबाद में), श्री बाबुलाल (भोरोल) सम्मिलित हैं। विद्यालयों में तब कड़ा अनुशासन था, छात्र गैर हाजिर नहीं रह सकते थे। आपकी प्राथमिक शिक्षा थराद में हुई। तब पेपराल में कोई विद्यालय नहीं था। थराद के ग्रामीण विद्यालय में आपने प्रवेश लिया। पहली व दूसरी की कक्षा यहाँ पढ़े। चौथी कक्षा हेतु आपने गुजराती स्कूल में अध्ययन प्रारंभ किया। वहाँ से मिडिल करने के लिए गलवीबाई मिडिल स्कूल भर्ती हुए। वहां कीकाणी सा. प्रधानाध्यापक थे। आपकी प्रतिभा देखकर वे प्रभावित थे तथा चाहते थे कि इस प्रतिभाशाली छात्र को अच्छी प्रकार तराशा जाए। श्री डी.के. मोदी एवं श्री नागरलाल दोशी प्रमुख अध्यापकों में से थे। आपकी प्रवृत्ति झगड़े की बचपन से नहीं रही। अपने सभी सहपाठियों के साथ आप प्रेम से रहते थे। सभी के बीच आप प्रिय बने हुए थे। आपने विद्यालय का अनुशासन कभी भंग नहीं किया। इस समय विद्यालयों में पिटाई की जाती थी। अनुशासन बनाये रखने तथा अध्ययन में छात्र के जुड़ाव के लिये डंडे का उपयोग किया जाता था। आपने स्वयं एक पत्रकार को साक्षात्कार देते हुए फरमाया था – 'एक दिन लेहरचंदभाई के साथ स्कूल से घूमने चला गया था दूसरे दिन दो डंडे पड़े थे (मुस्कुराते हुए), बस एक ही बार। माता-पिता, भाई-दोस्त कभी किसी से झगड़ा नहीं किया। आप शांत स्वभावी रहे, समय की नियमितता रखी तथा जीवन में अनुशासन का पालन आपने किया। ◆◆◆

अभय दान

* हेमचन्द्राचार्यजी के उपदेश से कुमारपाल राजा ने अपने जीवन में जीवदया और अभयदान के अनेक कार्य किये। वे घोड़ों को भी पानी छानकर पिलाते थे। जूं की हिंसा करने वालों को दंड और मार शब्द का प्रयोग करने वालों को भी सजा देते थे।

* प्रतिवर्ष अपनी कूलदेवी को नवरात्री में 7-8-9 के दिन 7-8-9 पाड़ा एवं 700-800-900 बकरे की बली चढ़ायी जाती थी उसे बंद कर दिया।

अन्तर्दृष्टि

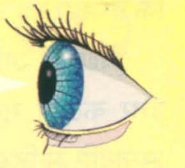

(श्री अशोक कुमार नान्देचा, नीमच)

एक दिन कक्षा में शिक्षक अपने हाथ में एक बाक्स में चाक रखकर लाये और विद्यार्थियों से पूछा क्या आप बता सकते हैं कि इस बाक्स में किस रंग की चाक है? सभी विद्यार्थी उत्तर देने को उत्सुक थे सबको यह तो ज्ञात ही था कि चाक सफेद रंग की होती है। अतः कुछ ने कहा सर इस डिब्बे में सफेद रंग की चाक है, कुछ ने बिना सोचे-समझे ही अलग-अलग रंग के नाम बता दिये, कुछ विद्यार्थियों ने कक्षा में अच्छे पढ़ने वाले बच्चों के तर्क का समर्थन कर दिया।

अर्थात उन्होंने अपनी सामान्य बुद्धि का उपयोग करना भी उचित नहीं समझा। कुछ ने कहा सर इस डिब्बे में लाल रंग की चाक है तो कुछ ने, पीले रंग की तो कुछ ने काले रंग की चाक है कहा। सबने अपनी-अपनी बुद्धि से तर्क-वितर्क करके चाक के रंग का अनुमान लगा बता दिया कि चाक अमुक रंग की है। परन्तु सत्य तो यह था कि चाक जिस रंग की थी वह शिक्षक ही जानते थे बहुत देर तक सब विद्यार्थियों की बातें शिक्षक ने सुनी। थोड़ी देर बाद एक विद्यार्थी जो आँखों से देख नहीं सकता था बोला सर आप कहे तो मैं आपके प्रश्न का उत्तर दूं। सब विद्यार्थी उस दृष्टिहीन बालक की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखने लगे सोच रहे थे इसे दिखाई तो देता नहीं है यह सही उत्तर क्या देगा?

शिक्षक ने बड़े प्यार से कहा बोला बेटा इस डिब्बे में कौन से रंग की चाक है। तब उस दृष्टिहीन बालक ने बड़े आत्मविश्वास से कहा इस डिब्बे में नीले रंग की चाक है। शिक्षक को आश्चर्य हुआ पुनः पूछा तुम जो उत्तर दे रहे है। वह सही है क्या विद्यार्थी बोला हाँ सर बिल्कुल सही है। तुम इतने आत्म विश्वास से कैसे कह सकते हो कि डिब्बे में नीले रंग की ही चाक है, और मैं कहू

कि तुम्हारा यह उत्तर गलत है तो ?

विद्यार्थी अडिंग था बोला सर मेरा उत्तर कदापि गलत नहीं हो सकता मैंने अन्तर्दृष्टि से डिब्बे के अन्दर की चाक का रंग देखा है वह नीले रंग की ही चाक है। शिक्षक को आश्चर्य हुआ बोले तुम्हारा उत्तर बिलकुल सही है।

मैं तुम्हारी जितनी प्रशंसा करूं कम है। उन्होंने पूछा यह तुमने कैसे जाना तब विद्यार्थी बोला एकाग्रचित होकर मैंने अपना सम्पूर्ण ध्यान डिब्बे पर लगा दिया धीरे - धीरे डिब्बे की पर्तें अपने आप हटने लगी और मुझे इसमें नीले रंग की चाक स्पष्ट दिखाई देने लगी। बस ! मुझे मेरी अन्तर्मन की अर्न्तदृष्टि ने समाधान दे दिया।

वास्तव में हम यदि मोक्ष सुख चाहते हैं तो आत्मा की वास्तविकता को पहचानना होगा। मिथ्यात्व की तर्कों को पराये सुधार के ज्ञान को छोड़ना होगा। अन्तर्मन की ओर अर्न्तदृष्टि करना होगी तभी हमारा कल्याण संभव है। ◆◆◆

ध्यान दीजिये

शाश्वत धर्म का प्रकाशन प्रत्येक मास की 3 तारीख को होता है। दिनांक 10 तक आपको अंक प्राप्त न होने पर दोप. 2.30 से 5.00 के मध्य कार्यालय पर टेलीफोन नं. (07422) 231614 से सम्पर्क करें।

प्रकाशनार्थ लेख, रचनाएँ प्रत्येक मास की 2 तारीख तक मंदसौर कार्यालय पर प्राप्त हो जाना आवश्यक है।

प्रकाशनार्थ समाचार एवं चित्र उस मास की दिनांक 15 तक मंदसौर प्राप्त होने पर ही उनको उस मास के अंक में सम्मिलित किया जाना संभव है। समाचार हो सके तो कम्प्युटर पर टाइप करवाकर भेजें। पते पर परिवर्तन या नए ग्राहक की सूचना शाश्वत धर्म के मेल Mail- ID-shaswatdharmajain@yahoo.in पर दी जा सकती है। डाक से लिखित भिजवाने की भी सुविधा है।

शाश्वत धर्म के नए ग्राहक बनने व सहायता राशि भिजवाने हेतु शाश्वत धर्म के करंट आकउंट नं. 63035775492 स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, शाखा मुखर्जी चौक, मंदसौर में जमा कर रसीद की फोटोकॉपी कार्यालय पर भिजवाएँ ।

जिनशासन की वर्णमाला (4)

(साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

ज-जयंतगिरि :- शाश्वत तीर्थ श्री शत्रुंजय जिनके 108 नाम हैं। उसमें से एक नाम जयन्तगिरि भी है। इस अवसर्पिणी काल में इस तीर्थ का प्रथम जीर्णोद्धार भगवान आदिनाथ के पुत्र भरत महाराजा ने करवाया। इस भूमि पर भगवान आदिनाथ नव्वाणु बार पधारे थे। इसलिए वहां के मूलनायक भगवान आदिनाथ हैं। इस भूमि पर किसी भी प्रकार का तप त्याग करने का गुणा लाभ मिलता है। ज्ञानी कहते हैं- 'अन्य स्थान पर किया गया पाप तीर्थ स्थान पर धुलता है लेकिन तीर्थ स्थान पर किया गया पाप वज्रलेप समान हो जाता है अर्थात् कहीं भी जाकर नहीं धो सकते हैं' इसलिए इस पवित्र भूमि पर जमीकंद या होटल में नहीं खाना चाहिए। रात्रि भोजनादि नहीं करना चाहिए। निंदा, विकथा आदि नहीं करना चाहिए इस 5 वें आरे में इस तीर्थ की लंबाई 12 योजन की है और छट्ठे आरे में 6-7 हाथ जितनी रहेगी। इस पुनित पावन शाश्वत भूमि पर कितनी ही भव्यात्माओं ने अनशन करके मोक्षपद को प्राप्त किया।

झ-झगड़ा :- 18 पापस्थानकों में से 12 वाँ स्थान कलह यानी झगड़ा है। पुरानी बातों को याद कर-करके बाहर लाना कलह कहलाता है। कलह प्याज के छिलके के समान है। जैसे प्याज के छिलके को निकालते जाओ, निकालते जाओ कुछ हाथ में नहीं आता है वैसे ही झगड़ा करने से कुछ तथ्य नहीं निकलता है। बातों को पकड़कर रखना, रबड़ की तरह खिंचना, रुदन करना यह सब कलह की निशानी है. कलह करने से स्व-पर दोनों का अहित होता है। एक-दूसरे के प्रति दुर्भावना बढ़ती है। इहलोक-परलोक बिगड़ता है। दुर्गति होती है।

ट-टटोलना :- टटोलना यानी अपने आपको चेक करना। जब हम स्वयं को जांच करना लगेंगे तो ज्ञान होगा कि अपने अन्दर कितने दोष हैं। अनादिकाल से हमारी आत्मा पर दोषदृष्टि के ही संस्कार पड़े हैं। अगर हम दूसरों के दोषों को देखते हैं तो वह रोज अपने अन्दर आ

जाते हैं। गुरुदेव श्री कहते थे- 'अपने घट को टटोल तुझे जगत दिखेगा अर्थात् जो स्वयं को जानलेता है वो सम्पूर्ण जगत को जान लेता है। जो स्वयं को नहीं जानता है वह जगत को भी नहीं जान सकता है। अतः हमें स्वयं को टटोलकर, आत्मनिरीक्षण कर अपने अन्दर रहे हुए दोषों को निकालकर, परगुणदृष्टि अपनाकर दोषमुक्त, कर्ममुक्त बनना है।

ठ-ठवणी :- यह एक ज्ञान का उपकरण है। इसके उपर पुस्तक रखकर पढ़ना चाहिए जिससे ज्ञान की आशातना से बच सकते हैं और ज्ञान के प्रति बहुमान भाव धारण कर सकते हैं।अतः पुस्तक को ठवणी पर रखकर 5 खमासमणा लगाकर पढ़ना प्रारंभ करना चाहिए ऐसा करने पर याद जल्दी होता है ज्ञान और ज्ञान के उपकरण को संभालकर रखने से ज्ञान और ज्ञानी की भक्ति करने से ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है।

ड-डंडासन :- यह साधु का एक उपकरण है। यह उपकरण रात्रि में बैटरी का काम करता है। एवं दिन में झाडू का काम करता है। रात्रि में साधु डंडासन का उपयोग करते हुए चलते हैं जिससे जीवों की रक्षा होती है। कोई भी जीव पाँव के नीचे आकर मरते नहीं है। उपाश्रय में काजा निकालते-निकालते मुनि को केवलज्ञान हुआ। दंडासन का माप- दांडी 36 ईंच की, दशी - 8 इंच, कुल 44 इंच का डंडासन होना चाहिए।

(क्रमशः) ◆◆◆

दया परम धर्म है

* एक राजा की अपमानित चौथी रानी ने चोर को उपदेश देकर फिर कभी चोरी न करने की प्रतिज्ञा दिलाई और राजा द्वारा अभय दान दिलाकर उपकार किया। * यज्ञ में होम होने वाले बकरे (बोकड़ा) को प्रियग्रंथ सूरीजी ने वासक्षेप डालकर बचाया इससे जैन धर्म की प्रभावना हुई। * अवंती सुकुमाल ने पूर्व भव में खुद की प्रतिज्ञा पालने के लिये एक मछली को अभय दान दिया। * राजा श्रेणिक के पुत्र मेघकुमार ने अपने पूर्व भव में (हाथी के भव में) ढाई दिन तक एक पैर पर खड़े रहकर एक खरगोस की जान बचाई। * नेमिकुमार शादी करने के लिये उग्रसेन के द्वार तक बारात लेकर पहुँचे। लेकिन पशुओं की चित्कार सुनकर, लौटकर, पशुओं को अभय दान दिया। - अहो महान अहिंसा धर्म :

कैसी हो हमारी शयन विधि ?

(साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

प्रत्येक कार्य विधिपूर्वक होना चाहिए, विधिपूर्वक किए गए कार्य का महत्त्व बहुत अधिक बढ़ जाता है। जैसे वैद्य दवाई जिस समय, जिस प्रकार लेने को कहते हैं जो उसे समय-समय पर विधिपूर्वक लेते हैं तो ही फलदाई होती है। अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि भी हो सकती है। वैसे ही कोई भी धार्मिक अनुष्ठ अनुष्ठान विधिपूर्वक ही करना चाहिए। केवल धार्मिक अनुष्ठान ही नहीं बल्कि दिनभर की जो भी दैनिक क्रियाएँ होती हैं वो भी धार्मिक रीति से विधिपूर्वक ही होनी चाहिए। विधिपूर्वक क्रिया करने से पहले विधि का संपूर्ण ज्ञान होना चाहिए। जैन शास्त्रों में सभी प्रकार की विधियाँ बताई गई है। यहाँ हम शयन विधि पर विचार करते हैं।

शयनविधि :- (1) सूर्यास्त के एक प्रहर (तीन घंटे) पश्चात् शयन करना चाहिए। **(2)** रात्रि में सभी सदस्यों को एकत्रित होकर एक स्थान पर बैठना चाहिए तथा बड़े बुजुर्गों के मुख से ज्ञान की बातें सुननी चाहिए। उनके द्वारा सुने हुवे प्रवचन का श्रवण करना चाहिए जिससे बच्चों में भी धार्मिक संस्कार दृढ़ हों एवं प्रवचन सुनने की रुचि उत्पन्न हो।

(3) सोने से पूर्व पूरे दिन में हुवे सत्-असत् कार्यों का चिन्तन करना चाहिए। आज के दिन मेरे द्वारा क्या-क्या गलत कार्य हुए उसके बारे में विचारना- जैसे किसी का दिल दुखाया हो, किसी का उत्कर्ष देखकर ईर्ष्या की हो, स्व प्रशंसा की हो, आवेश में आ गए हों, होटल गए हों, थियेटर गए हों, लोभ में आकर किसी का बुरा किया हो आदि सभी दुष्कार्यों का मन-वचन-काया से मिच्छामि दुक्कडंम करना तथा अब ऐसा कार्य नहीं करूं ऐसा संकल्प करना साथ ही जो भी अच्छे कार्य किये हो उनका भी चिन्तन

करना जैसे दूसरों की मदद की हो, पूजा में आनंद आया हो, बड़ों की सेवा की हो क्रोध का अवसर आने पर भी क्षमा धारण की हो, कठिन परिस्थिति में भी रात्रि भोजन नहीं किया हो, जमींकद का उपयोग नहीं किया हो, कोई चढ़ावा लिया हो इत्यादि सत् कार्यों के लाभ का चिन्तन करते हुए उसकी अनुमोदना करना चाहिए तथा शुभकार्य नित्य वृद्धिगत हो ऐसी भावना माना चाहिए।

रात्रि में भय अधिक लगता है अतः सात भयों के निवारण के लिए सात नवकार का स्मरण करना चाहिए सात भय इस प्रकार हैं - (1) इन्द्रलोक भय (2) परलोक भय (3) चोरी का भय (4) अकस्मात भय(5) वेदनाभय (6) मरणभय (7) अपयश भय।

(4) तत्पश्चात् सभी प्रकार के आरंभ परिग्रह का त्याग करने के लिए एक दोहा बोलना चाहिए जो इस प्रकार है-

आहार-शरीर ने उपधि पच्चक्खुं पाप अढ़ार,
मरण आवे तो वोसिरे[2] जिवुं तो आगार।।

अभी आयु कितनी है यह हर कोई बता सकता है, किन्तु कितनी आयु और होगी यह कोई नहीं बता सकता, क्योंकि मृत्यु का समय निश्चित ज्ञात नहीं है कभी भी आसकती है इसलिये सभी वस्तुओं का त्याग करके अर्थात् उन पर से ममत्त्व बुद्धि हटाकर रात्रि विश्राम करना चाहिये ताकि मरण होने पर भी सद्गति की प्राप्ति हो।

सोने की मुद्रा :-

उल्टा सोये भोगी सीधा सोये योगी ।
दाँये सोये रोगी, बायाँ सोये निरोगी ।।

बाँयी करवट सोना स्वास्थ्य के लिये भी हितकर है। साधु-साध्वी भगवंतों के द्वारा नित्य बोली जाने वाली संथारा पोरसी में 'वाम पासेणं' शब्द आता है। आयुर्वेद में 'वाम कुक्षी' की बात आती है। अर्थात् बाँई करवट ही सोना चाहिए। क्योंकि शरीर विज्ञान के अनुसार सीधे सोने से रीढ़ की हड्डी को नुकसान होता है और औंधा सोने से आँखें

बिगड़ती है।

दिशा विज्ञान :- दक्षिण दिशा में पाँव रखकर कभी सोना नहीं। वहाँ यम और दुष्ट देवों का निवास है। दक्षिण दिशा में पाँव करके सोने से कान में हवा भर जाती है। मस्तिष्क में रक्त का संचार कम हो जाता है। यह बात वैज्ञानिकों एवं वास्तुविदों ने भी जाहिर की है।

पूर्व दिशा में मस्तक रखकर सोने से सन्मार्ग पर ले जाने वाली विद्या की प्राप्ति होती है। दक्षिण में मस्तक रखकर सोने से धन और आरोग्य का लाभ होता है। पश्चिम में मस्तक रखकर सोने से प्रबल चिंता होती है एवं उत्तर दिशा में मस्तक रखकर सोने से मृत्यु जैसी हानि होती है।

अन्य छोटी-छोटी बाते हैं जो शयन के समय ध्यान रखने योग्य हैं। संध्याकाल में निद्रा लेनी नहीं, अतः पाँव के नीचे कुछ रखना नहीं, पाँव की ओर शय्या ऊँची हो तो अशुभ है। शय्या पर बैठे-बैठे निद्रा नहीं होनी चाहिए। हृदय पर हाथ रखकर, छत के पाट के नीचे और पाँव पर पाँव चढ़ाकर सोना नहीं चाहिए। शय्या पर बैठकर खाना अशुभ है (बेट टी पीने वाले सावधान) सोते-सोते पढ़ना नहीं ज्ञान की आशातना होती है। सोते-सोते तांबुल चबाना नहीं (मुँह में गुटखा रखकर सोने वाले ....) ललाट पर तिलक रखकर सोना अशुभ है।

निद्रा पाँच प्रकार की होती है - (1) जल्दी जग जाए वो निद्रा **(2)** मेहनत से जगे वो निद्रा-निद्रा **(3)** बैठे-बैठे या खड़े-खड़े सोये वो प्रचला (घोड़े को इस निद्रा का उदय होता है) **(4)** चलते-चलते सोए वो प्रचला-प्रचला **(5)** दिन में सोचा हुआ क्रूर कृत्य रात को निंद में करे वो स्त्यानर्द्धि निद्रा। सत्यानर्द्धि निद्रावाला जीव प्रायः नरक में से आया हुआ एवं नरक में जाने वाला होता है।

उपरोक्त सभी बातों का ध्यान रखकर विधिपूर्वक शयन करना चाहिए। शयन तो सभी करते हैं किन्तु विधिपूर्वक शयन करने से स्वस्थ्य एवं प्रसन्न रह सकते है एवं इस लोक एवं परलोक दोनों को सुधार सकते हैं। ◆◆◆

मानव सेवा को अपने जीवन का अंग बनाना सिखा गया लॉकडाउन

(श्री भंवरलाल कटारिया, बेंगलूरू)

धार्मिक प्रवृत्ति के व साधु-सन्तों की सेवा करने के लिए हमेशा तैयार रहने वाले सेवाभावी व्यक्ति है श्री भंवरलाल कटारिया, आप अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा शाश्वत धर्म के सम्पादक पदों पर रह चुके हैं। बेंगलूरू के एवेन्यु रोड़ स्थित मुनिसुव्रतस्वामी जैन श्वेताम्बर मंदिर के अध्यक्ष व चिकपेट संघ के कोषाध्यक्ष भंवरलाल कटारिया का मानना है कि धर्म हमारे जीवन में एक दीपक के समान है जो हमें मार्ग पर चलने की राह दिखाता है। धर्म जीवन को संयमित व संतुलित तरीके से जीवन जीने का तरीका सिखाता है। धर्म हमें जीवन का हिसाब किताब समझाता है। उनका मानना है कि हम सभी को अपने जीवन को सही तरीके से जीना चाहिए। कभी भी किसी का बुरा नहीं करना चाहिए और बुरा सोचना भी नहीं चाहिए। हमारे जीवन का आचार, विचार व व्यवहार अच्छा होना चाहिए। व्यक्ति को धर्म व सेवा अवश्य ही करनी चाहिए। सेवा करने से जीवन में उज्ज्वलता व निर्मलता आती है। व्यक्ति को अपना व्यवहार मिलनसार व सहयोगात्मक बनाना चाहिए। मौका मिले तो हमें दूसरों की सहायता अवश्य ही करनी चाहिए। उनका मानना है कि मानव सेवा किसी समय की मोहताज नहीं होती। हमें जीवन में मानवसेवा को अपने नियमित रूप से करनी चाहिए क्योंकि मानवसेवा व दूसरों का सहयोग ही हमें मजबूत व समृद्ध बनाता है। भगवान भी उनसे ही मानवसेवा की अपेक्षा करता है जिसे वह सम्पन्नता व सामर्थ्य प्रदान करता है। विभिन्न सभा संस्थाओं के उच्च पद पर कार्य का अनुभव रखने वाले भंवरलाल कटारिया का मानना है कि जब तक परिवार व समाज संगठित रहेगा, विकास के पथ पर अग्रसर रहेगा।

श्री भंवरलाल कटारिया ने बताया कि लॉकडाउन के पहले उनका जीवन ज्यादा व्यस्त था। वे सुबह 6 बजे उठ जाते थे। उठकर वह नियमित रूप से प्रतिक्रमण व अन्य धार्मिक क्रियाएँ करते थे। थोड़ा सैर सपाटा कर अखबार पढ़ते थे। उन्होंने बताया कि वह सुबह माधवनगर स्थित जैन मंदिर में पूजा करने जाते थे। पूजा के बाद नवकारशी (भोजन) कर सुबह 11.30 बजे चिकपेट स्थित अपने कपड़े के शोरुम पर जाते थे। शाम तक दुकान के विभिन्न कार्य तथा सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वहन कर शाम 5 बजे घर आते थे व सूर्यास्त से पहले शाम का भोजन करते थे। भोजन के बाद फिर एक बार दुकान जाते थे तथा रात 9 बजे घर वापस आते थे। घर आकर परिवार के साथ मिलकर विभिन्न विषयों पर चर्चा

करते थे तथा रात्रि विश्राम के लिए चले जाते थे। कटारिया ने बताया कि लॉकडाउन के दौरान उनका जीवन और धर्ममय हो गया। लॉकडाउन के दौरान व्यापार बंद था परन्तु प्रभु भक्ति का काम पूरी तरह से चालू था। उन्होंने बताया कि लॉकडाउन के दौरान उन्होंने भगवान की एक प्रतिष्ठित प्रतिमा अपने घर ले आए तथा पूरी विधि- विधान से पूरे परिवार के साथ चारों समय भगवान की पूजा, आरती व दीपक करते थे। उन्होंने बताया कि इस लॉकडाउन के दौरान प्रभु मंदिरों के भी पट्ट बंद थे परन्तु हमें एक दिन भी ऐसा नहीं लगा कि हम मंदिर नहीं गए। अपितु घर में रहकर सभी धार्मिक क्रियाओं के साथ पूरे भक्ति भाव से प्रभु आराधना करने से एक नई ऊर्जा की प्राप्ति हुई। उन्होंने बताया कि हमारे परिवार का सौभाग्य है कि आज भी हम घर पर ही प्रभु व गुरु भक्ति कर रहे हैं।

गुरुदेव श्री राजेन्द्रसूरिजी व श्री जयंतसेनसूरीजी के अनन्य भक्त श्री भंवरलाल कटारिया ने बताया कि इस लॉकडाउन के दौरान उन्हें अनेक धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करने का मौका मिला। धर्म के साथ-साथ उन्हें पोते-पोतियों के साथ बहुत ही सुनहरा समय बिताने का मौका मिला जिसे वह सुखद अनुभव मानते हैं। उन्होंने बताया कि लॉकडाउन के दौरान बच्चों के साथ कैरम, लूडो आदि खेलकर अपने बचपन को याद किया। इस दौरान अपने पुरान दोस्त व दूर के रिश्तेदारों से मोबाइल पर खूब बातचीत की तथा अपने पुराने समय को याद किया। भंवरलाल कटारिया ने कहा कि यह कोरोना महामारी प्रकृति का प्रकोप है। हम सभी ने प्रकृति का बेहद दोहन किया जिसका परिणाम है यह कोरोना महामारी। उन्होंने कहा कि इस संसार में पाप बढ़ गए हैं और प्रकृति इस महामारी के माध्यम से अपने आपको संतुलित कर रही है। हमें प्रभु से प्रेम बढ़ाना चाहिए। लॉकडाउन ने हमें परिवार के साथ रहने का मौका दिया और यह ज्ञात करा दिया कि जीवन में परिवार से ज्यादा महत्व किसी का नहीं होता। परिवार ही इस संसार की सबसे बड़ी दौलत है। उन्होंने बताया कि इस लॉकडाउन में पैसे का कोई मूल्य नहीं रहा और हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि पैसा केवल आवश्यकता पूरी कर सकता है परन्तु जीवन नहीं होता पैसा। उन्होंने कहा कि इस लॉकडाउन से व्यापारियों को भारी आर्थिक नुकसान हुआ है। इसलिए सभी व्यापारियों को एकजुट होकर आत्मविश्वास के साथ इस आर्थिक मंदी से उबरने की कोशिश करना चाहिए, सफलता अवश्य मिलेगी। उन्होंने कहाकि इस संसार में बदलाव जीवन का आधार है और यदि बदलाव अच्छे के लिए होता है तो हमें उसे स्वीकार करना चाहिए। कटारिया ने कहा कि इस महामारी से बचने के लिए हमें सतर्क रहना चाहिए। मास्क व सैनीटाइजर के साथ-साथ सोशल डिस्टेसिंग का पूरा पालन करना चाहिए ताकि हम अपने आप को व अपने परिवार को बचा सके। ◆◆◆

शांति और क्रांति के अग्रदूत दादा गुरुदेव

(धीमी गति वाला)

ज्ञानी आनन्दधनजी के युग में चले। उस समय भी शिथिलाचारी यतिओं का जबर्दस्त प्रभाव था। यतिओं ने मंत्र तंत्र, डोरा, धागा आदि की प्रक्रियाओं के द्वारा समाज पर प्रभुत्व जमा रखा था। चारित्रशील साधुओं को भी उन यतिओं से दबकर रहना पड़ता था। यतिगण ज्ञान ध्यान शुद्धाचार को भूल चुके थे, मात्र इनके मुखोटे इन्होंने पहन रखे थे। तब महान् योगी आनन्दधनजी ने इन यतिओं के प्रभाव से दबना स्वीकार नहीं किया था और अलग ही अपनी ज्ञान, ध्यान, आत्मशक्ति, परमात्म भक्ति की अलख धुन जगाई थी।

युग पुरुष दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिजी के युग में भी समाज पर यतिओं का ऐसा ही दूषित प्रभाव जमा हुआ था। जिस चारित्र मार्ग में निष्परिग्रह अवस्था अपना मूलभूत योगदान रखती है, जहाँ हम हमारे कालचक्र के आदि तीर्थंकर आदिनाथ की प्रथम निष्परिग्रही के रूप में स्तवना करते हैं, उस चारित्र मार्ग में अपरिग्रह पर ही आंच आ गई थी। निष्परिग्रही, कंचन कामिनी के त्यागी परिग्रह के शिकंजे में फंसे हुए थे। मान सम्मान की भूख, राजाओं से मान सम्मान में प्राप्त पालखी, चामर वगैरह वस्तुएँ श्रीपूज्य पद, परिग्रह की व्यवस्था के लिए दफ्तरी पद यह सब सामान्य हो गया था। इस सारे तिलिस्म को तोड़ पाना असंभव जैसा था। परिस्थितियों ने हमारे दादा गुरुदेव को भी इसी दलदली पंक में उलझा दिया था। दफ्तरी पद, श्रीपूज्य पद का लवाजमा, यह सब कुछ उनके साथ भी जुड़ गया था। इसके बावजूद शुद्ध चारित्र में उनकी निष्ठा अप्रतिम थी, शिथिलाचार उनके अंतःकरण को चारों ओर से कचोटता था। अतः अवसर मिलते ही शिथिलाचार के चक्रव्यूह में रहते हुए भी उन्होंने उस चक्रव्यूह को तोड़ने का जो क्रांतिकारी भगीरथ प्रयास किया और उसमें उन्होंने जो सफलता प्राप्त करी, उससे वे युग पुरुष के रूप में उभरकर प्रगट हुए थे। इतिहास उनके इस योगदान को कभी भूला नहीं पायेगा।

श्री पूज्य धरणेन्द्रसूरिजी, जो कि व्यापक शिथिलाचार के एक प्रतीक के रूप में दादा गुरुदेव के सामने थे। उनसे लोह

पुरुष दादा गुरुदेव ने किस तरह लोहा लिया था, किस तरह उनसे शुद्ध समाचारियां स्वीकार करवाई थी, इसका रोमांचक इतिहास हम देख चुके हैं। दादा गुरुदेव को श्री पूज्य धरणेन्द्रसूरिजी से कोई द्वेष नहीं था, उनके अंतर में तो शासनपति महावीर के चारित्र मार्ग में जो स्खलनाएं आई थीं, उनके प्रति द्वेष था। चारित्र मार्ग में आई स्खलनाओं से द्वेष और श्री पूज्य धरणेंद्र सूरिजी के प्रति अद्वेष इसी किमिया से श्री पूज्य धरणेंद्र सूरिजी को परिवर्तित करने में वे सफल हुए थे।

भाग्यशाली आषाढ़ कृष्णा दशमी का सूर्य, भाग्यशाली जावरा नगरी, भाग्यशाली उस समय के भविकजन, जिन्होंने दादा गुरुदेव के द्वारा किये गये क्रियोद्धार के साक्षात दर्शन किये थे। आत्मशांति के चाहक और आत्म स्वतंत्रता के क्रांतिकारी आंदोलन के जुझारू सेनापति दादा गुरुदेव द्वारा की गई महान क्रांति का पावन दिवस आ गया था। विवशताओं के कारण जो शिथिलताएं उन्हें स्वीकारना पड़ी थी, उनसे मुक्त होना था और जन मन को, चतुर्विध संघ को शुद्ध निष्परिग्रहता का, शुद्ध त्याग का, शुद्ध संयम का मार्ग बतलाना था। चारित्र के महान पथ पर आगे बढ़े हुए लेकिन अपने पावन लक्ष्य को भूले हुए, भ्रमणाओं के जाल में उलझे हुओं को अपने शुद्ध और ज्वलंत चारित्र पालन के द्वारा सन्मार्ग का दर्शन कराया था।

महापुरुषों के ह्दय में किसी के भी प्रति कहीं से कहीं तक कोई द्वेष नहीं होता है। पर महापुरुषों से द्वेष रखने वाले हमेशा होते हैं क्योंकि उनके दुषित स्वार्थों पर महापुरुष हमला करते हैं। विद्वता का दंभ भरने वाले और दादा गुरुदेव से द्वेष रखने वाले कुछ यतिओं ने यह कुप्रचार किया कि राजेन्द्र सूरिजी ने जो क्रियोद्धार किया उसमें उन्होंने दूसरे गुरु नहीं बनाए, इसलिए यह क्रियोद्धार अशुद्ध है। लेकिन शास्त्रों के शुद्ध प्रकाश से अपने जीवन को प्रकाशित करते हुए जो आगे बढ़ते हैं, उनको समय स्वीकारता है और महापुरुष के रूप में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाता है। श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिजी आगमों के शुद्ध शास्त्रों के गहन अध्येता थे और क्रियोद्धार किस तरह करना, इसका निर्णय उन्होंने शास्त्रों के आधार पर बहुत सोच विचार कर लिया था। जिनकी गुरु परंपरा में साथ आठ पाट परंपरा से शिथिलाचार चला आया हो वहां पूर्व गच्छ और पूर्व गुरु का त्याग करना होता है लेकिन दो-तीन पाट परंपरा से जो शिथिलाचार चल रहा हो उसमें क्रियोद्धार करते समय नया गुरु करने की

आवश्यकता नहीं होती है। श्री महानिशीथ सूत्र के तीसरे अध्ययन के प्रारंभ में यह संदर्भ प्राप्त होता है। अतः दादा गुरुदेव द्वारा किया गया क्रियोद्धार शुद्ध था। सत्यमार्ग पर अडिगता के कारण हमारे दादा गुरुदेव बदनामी की आग में तपकर भी शुद्ध स्वर्ण के रूप में निखरकर सामने आये थे।

सन् 1889 संवत् 1925 आषाढ़ कृष्णा तीज से शुभ नगर जावरा में प्रभु भक्ति करके प्रभु से शक्ति प्राप्त करने के लिए प्रभु भक्ति का अष्टान्हिका महोत्सव प्रारंभ हुआ। इन आठ दिनों में दादा गुरुदेव ज्ञान, ध्यान, तप, अनुप्रेक्षा में लीन होते हैं और शुद्ध मार्ग पर अग्रसर होने के लिए अपनी आत्मा को वज्र जैसी दृढ़ बनाते हैं। क्रियोद्धार क्या होता है ? कैसे होता है ? भावुकों के सामने प्रश्न थे। दीक्षा, प्रतिष्ठा, उद्यापन, संघ, तपोत्सव आदि के जल से तो बहुत देखे लेकिन दादा गुरुदेव किस तरह क्रियोद्धार करते हैं, यह देखने की सबको ललक थी।

ग्राम नगरों से जावरा की ओर जन प्रवाह प्रवाहित हो रहा था/ मालवा, राजस्थान, गुजरात तक के भक्तगण आये थे। दशमी को प्रातः काल में उपाश्रय के आसपास अपार जनसमूह उपस्थित हो गया था/ जयनाद हो रहे थे/दादा गुरुदेव उपाश्रय से बाहर पधारते हैं, जन समूह मौन हो जाता है। सब दादा गुरुदेव की ओर अपलक देख रहे हैं, वे क्या करेंगे ?

दादा गुरुदेव स्थिर कदमों से आगे बढ़ते हैं। उनके चेहरे पर गंभीरता, ओजस्विता, तेजस्विता है। ऋषभदेव जिनालय की ओर कदम आगे बढ़ रहे हैं। उनके आगे श्री पूज्य पद का लवाजमा पालकी, चामर, छड़ी आदि है। पीछे श्री पूज्य धरणेंद्रसूरिजी के नये दफ्तरी श्री देवसागरजी, पं. मोतीविजयजी, श्री महेन्द्रविजयजी व अनेकों यतिओं का समूह चल रहा है। उनके पीछे अपने अधिकारियों सहित जावरा नवाब व उनका राज रिसाला चल रहा है।

उसके पीछे अपार जनसमूह चल रहा हैं। जुलूस ऋषभदेव जिनालय पर जाकर रुक जाता है। मंदिरजी में सामूहिक चैत्यवंदन होता है। फिर गुरुदेव खड़े होते हैं। पाँच नवकार बोलते हैं। फिर पालकी, चामर, छड़ी, सूरजमुखी, छत्र आदि अपने पास का समस्त परिग्रह त्याग करते हैं। वजीर हमीर विजयजी उन सभी वस्तुओं को जावरा श्रीसंघ के श्रावकों के सुपुर्द करते हैं। आज भी ये वस्तुएं जावरा श्रीसंघ के पास ऐतिहासिक धरोहर के रूप में संग्रहित है। अब दादा गुरुदेव श्री पूज्य पद से मुक्त हैं।

अनुपम त्याग की अद्‌भुत मिसाल

उन्होंने कायम कर दी है। साथ में आये यतिओं और उपासकों के चक्षु अश्रुओं से सजल हो जाते हैं। दादा गुरुदेव का भार उतर जाता है। भार उतरने पर व्यक्ति हलका हो जाता है लेकिन यहां जो भार उतरा है, वह शरीर का भार नहीं था, वह भार तो आत्मा पर था, आत्मा को अपार कष्ट दे रहा था। अतएव दादा गुरुदेव का मुखमंडल अपार प्रसन्नता व आत्मिक आनंद की आभा से दमकने लगता है। दीर्घकाल के बाद गुरुदेव के चेहरे पर उभरी एक विशिष्ट शांति के दर्शन होते हैं। दादा गुरुदेव ने आत्मिक शांति पाने के लिए आत्मिक शुद्धि पाने के लिए क्रांति का शंखनाद कर दिया था। यह शंखनाद अमोघ था, जिसने सारे दुषित वातावरण को बदल दिया था।

मुनियोग्य उपकरणों को उठाये हुए दादा गुरुदेव जिनालय से बाहर पधारते हैं। फिर सबकी निगाहें गुरुदेव की ओर है। गुरुदेव जिधर भी आगे बढ़े, उनके पीछे हमें रहना है। गुरुदेव का मार्ग ही सत्य मार्ग है। क्रियोद्धार का आधा कार्य निबट गया था, आधा कार्य बाकी था। गुरुदेव वहाँ से आगे कहाँ पधारते हैं? हम भी उनके पीछे चलेंगे।

दोष क्षम्य नहीं

एक छह खण्ड के अधिपति चक्रवर्ती अपने अखूट ऋद्धि वैभव को छोड़कर अनगार बनते हैं। वे अनगार कुछ स्खलंना करते हैं। तब सामान्य स्थविर मुनि भी उन्हें दोष सेवन का निषेध कर सकते है। क्या उस समय वे त्यागी चक्रवर्ती अपने दोष के बचाव के लिये अपने त्याग की दुहाई देंगे ? कोई चोदह पूर्वधर मुनिाज किसी श्रमणोपासक के समक्ष स्मृति दोष से अन्यथा कथन कर गये और वह श्रावक उन्हें प्रायश्चित लेने का कहे। तब क्या वे चौदह पूर्वधर मुनि अपने दोष के बचाव के लिये अपने अधीन ज्ञान की दुहाई देंगे ?

कोई कितनी ही ऋद्धि का त्यागी हो और कितना बड़ा ही ज्ञानी हो, उन्हें भी मोक्षमार्ग में दोष सेवन करने से, संघ की निर्मलता और उनके आत्महित के लिये रोका जाना अनिवार्य है। यदि वे आत्मा भी सच्चे साधक होते हैं तो वे अपने त्याग और ज्ञान की दुहाई देकर अपने अंश-मात्र दोष को भी न तो क्षम्य मानते हैं और न मनवाते हैं, क्योंकि ऐसा करने से उनका आचरित त्याग और अधीन ज्ञान तो दूषित होता ही है। किन्तु आगे का मार्ग भी अवरुद्ध हो जाता है और संघ में भी उनके निमित्त से हीनता आ सकती है। साधक को सदैव साधना की ओर ही दृष्टि रखना चाहिये। बड़ों के द्वारा किए हुए अनुशासन का दी हुई व्यवस्था का पालन करना ही छोटों का कर्त्तव्य है। आज्ञा में अपील नहीं समर्पणता में सवाल नहीं ।

ગુર્જર જૈન જયોત

(શાશ્વત ધર્મ ગુજરાતી આવૃત્તિ)

સંપાદક : સુરેશ સંઘવી

ફલેટ નં.બી-૧૦૩, બોરસલ્લી એપાર્ટમેન્ટ, ત્રીજે માળ,

ખાનપુર જી.પી.ઓ. નજીક, ખાનપુર, અમદાવાદ-૧. મો. : ૯૭૨૪૫૭૧૦૭૯

ભગવાન મહાવીરે શું કહ્યું ?

લેખક : આચાર્ય શ્રી જયંતસેનસૂરિ 'મધુકર'

એ સિવાય મુક્તિ નથી

"કડાણ કમ્માણ ન અત્થિ મોકખો"

(કરેલાં કર્મોનું ફળ ભોગવ્યા વિના છૂટકો નથી)

દીવાની જ્યોત ઉપર કોઈ પોતાની આંગળી રાખે તો શું થાય ? ગરમી લાગશે અને આંગળી બળવા લાગશે. દાઝવાનો અનુભવ થયા પછી આંગળી ત્યાંથી ખસેડી લેવામાં આવે તો પણ તેની વેદના થોડા દિવસો સુધી થતી રહેશે.

આ જ વાત, કર્મો અંગે પણ કહી શકાય છે. જે કોઈ, કર્મ કરે છે તેનો આત્મા તેની સાથે બંધાઈ જાય છે. શુભ કર્મોનું પણ બંધન થાય છે અને અશુભ કર્મોનું પણ બેડી સોનાની હોય કે લોઢાની, બાંધશે જરૂર. જે વ્યક્તિને બેડી પહેરાવે છે તેને નક્કી કરેલ સમય સુધી બંધનમાં રહ્યા પછી જ મુક્તિ મળે છે અને મુક્તિ મળતાં સુધી તેને દુઃખ ભોગવવું પડે છે. એ જ પ્રમાણે સારાં અથવા ખરાબ કર્મોનું બંધન પણ નક્કી કરેલ અવધિ સુધી રહે છે. અને ત્યાંસુધી દુઃખ ભોગવવું પડે છે - પછી તે અનુકૂળ (સુખ) હોય કે પ્રતિકૂળ (દુઃખ)

શુભાશુભ કર્મોનું જો બંધન થઈ ચૂક્યું છે તો તેનું શુભ કે અશુભ ફળ ભોગવવું જ પડે છે - ભવિષ્યમાં કર્મ ન કરીએ તો પણ કરેલાં કર્મોનું ફળ ભોગવવું જ પડે છે, એ સિવાય મુક્તિ મળી શકતી નથી. - ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર, ૪/૩

યુગનાયક ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ
શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની પંચ પીઠીકા
સૂરિમંત્ર સાનંદ આરાધના

આદર્શ કોલોની સ્થિત શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાનમંદિર નિમ્હાહેડા (રાજ.) ખાતે ચાતુર્માસ અર્થે બિરાજમાન પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર અને પ્રથમ શિષ્ય યુગનાયક ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.એ તેમના તપસ્વી જીવનમાં પ્રથમવાર વિશ્વશાંતિ અને જગતના જીવોના કલ્યાણ નિમિત્તે ૮૪ દિવસીય પાંચ પીઠીકા સૂરિમંત્ર આરાધનાનો પ્રારંભ કરેલ છે. આરાધના માટે સવારે રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાનમંદિરમાં જ આરાધના ખંડમાં એકાંતવાસ માટે પ્રવેશ કર્યો હતો.

પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.એ ઉક્ત આરાધનાનું પ્રતિપાદન કરવા સાથે જણાવ્યું હતું કે, સાધના જ અંતિમ જ્ઞાન છે. એનાથી જ્ઞાન અને આત્માસાધનાનો પ્રાદુર્ભાવ થાય છે. જીવો પ્રત્યે સૌહાર્દની ભાવના પ્રાપ્ત થાય છે. અરિહંત ભગવાનોએ પણ સાધનાના માધ્યમથી કેવળજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ કરી હતી. સાધનાના માધ્યમથી સ્વયંના કાર્યોનો હશ્ર કરી શિવશક્તિને પ્રાપ્ત કરી શકાય છે. આ આરાધના ભાવવિધિની સાથે કરાય છે. આની સાથે દ્રવ્ય વિધિના વિધાન પણ થતાં રહેશે. આ આરાધનામાં ૧૦૮ મણકાની માળાના માધ્યમથી ૮૪ દિવસોમાં સવા લાખ જાપ કરવામાં આવશે. પૂજ્યશ્રીએ કહ્યું કે, જગતમાં જીવ ન હોત તો જગતનું કોઈ ઔચિત્ય ન હોત, સંસાર નશ્વર છે. આરાધના વગરનું જીવન જલ બિન મછલી સમાન છે. ધર્મ આરાધના જ જીવનને સંસારની આવશ્યકતાનું ભાન કરાવે છે. એટલા માટે કિસાનોની ભાંતી સહુ પ્રાણી જગતના જીવનરૂપી ખેતરમાં ધર્મનું બીજ વાવવામાં આવે છે.

ઉક્ત સૂરિમંત્ર આરાધનાને લઈ સમાજજનોમાં હર્ષની લાગણી ફેલાઈ ગઈ હતી. પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિશ્રી સાથે ચાતુર્માસ બિરાજમાન વરિષ્ઠ મુનિરાજશ્રી વિરરત્નવિજયજી મ.સા., મુનિરાજ શ્રી વિધ્વદરત્નવિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી પ્રશમસેનવિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી તારકરત્નવિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી નિર્ભયરત્નવિજયજી મ.સા.ની નિશ્રામાં સંઘ અધ્યક્ષ

મનીષ બાબેલ તથા ચાતુર્માસ લાભાર્થીપરિવાર અને ચાતુર્માસ આયોજન સમિતિના અધ્યક્ષ રતનસિંહ પારખ, શેરસિંહ, પારસમલ, પ્રકાશચંદ્ર, દિલીપ, મનોજ અને લલિત પારખ વગેરે ૮૪ દિવસીય સૂરિમંત્ર આરાધનાની વ્યવસ્થાઓને અત્યંત સફળ બનાવવા ભારે જહેમત ઉઠાવી રહ્યા છે.

વર્તમાન ગચ્છાધિપતિશ્રી દ્વારા સૂરિમંત્ર આરાધનાના અંતર્ગત પ્રથમ પીઠીકા પૂર્ણ કરી દ્વિતિય પીઠીકામાં પ્રવેશ કરતાં સર્વત્ર સંઘમાં આનંદની અમી વર્ષા વરસી ગઈ હતી. એ પીઠીકા પણ સાનંદ સંપન્ન થઈ હતી. ત્યારબાદ ૮ ઓગષ્ટ ૨૦૨૦ના રોજથી તૃતિય પીઠીકાની સાધનામાં ગચ્છાધિપતિશ્રીની આરાધનાએ પ્રવેશ કર્યો હતો. આ અવસરે પણ વ્યાપકરૂપથી વંદનાઓ સમર્પિત કરવામાં આવી હતી.

ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્યશ્રીની સૂરિમંત્ર આરાધના સાનંદ સંપન્ન

શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થ ખાતે ચાતુર્માસ બિરાજમાન ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક સૂરિમંત્ર આરાધક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા.એ સૂરિમંત્રની આરાધના સાનંદ સંપન્ન કરી હતી. આ આરાધના તૃતિય પીઠીકાની હતી. શ્રાવણ સુદ-૩ ગુરુવારના રોજ આચાર્ય શ્રીમદ્ વિજયજયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના ૬૧માં જન્મદિવસની ઉજવણી કરવામાં આવી હતી. આ અવસરે તેમને મંગલ વધાઇ આપી હતી. બધા જ શિષ્યો અને ગુરુભક્તોએ સ્વસ્થ અને દિર્ઘાયુ હોવા સાથે સાથે એમના અનેક ઐતિહાસિક જિનશાસનના કાર્યોને સુસંપન્ન કરવા માટે મંગલકામના પાઠવી હતી.

આ અવસરે ચાતુર્માસ આયોજક સુરાણા (રાજ.) નિવાસી માતુશ્રી માલુદેવી પુખરાજજી છત્રાણી પાલગોતા ચૌહાણ પરિવાર દ્વારા સવારે ૧૦ કલાકથી શ્રી મહાવીર સ્વામી પંચકલ્યાણક પૂજા ભણાવાઇ હતી. પ્રભુજી અને ગુરુવર્યોને ભવ્ય અંગરચના કરાઇ હતી અને પ્રભાવના કરાઇ હતી. સાદગીપૂર્વક આ કાર્યક્રમમાં ઉપસ્થિત સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંત અને ગુરૂભક્તોએ કોરોના બચાવના નિયમોનું પાલન કરવા સાથે ભાગ લીધો હતો. પૂજ્ય આચાર્ય ભગવંત પંચપીઠીકા સૂરિમંત્ર આરાધના સુખશાતા પૂર્વક કરી રહ્યા છે.

ઉલ્લેખનીય છે કે, પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિશ્રીએ તા. ૪જુલાઇથી પંચપીઠીકા સૂરિમંત્ર આરાધનાનો ૮૪ દિવસીય પ્રારંભ કર્યો હતો. જ્યારે પૂજ્ય આચાર્યશ્રીએ તા. ૫ જુલાઇથી ૯૦ દિવસીય સૂરિમંત્ર આરાધનાનો પ્રારંભ કર્યો હતો.

સને ૨૦૨૦ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના ચાતુર્માસની યાદી

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ તથા પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્યદેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સમુદાયના આચાર્ય ભગવંતો તથા શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદ જે સ્થળે ચાતુર્માસઅર્થે બિરાજમાન હોય તે સ્થળે પૂજ્યશ્રીઓની સુખ-શાતા પુછવા અને દર્શન વંદનાર્થે જવા અ.ભા.શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદના કેન્દ્રીય અધ્યક્ષ તપસ્વી રત્ન શ્રી રમેશભાઈ ધરૂના નેતૃત્વ હેઠળ કેન્દ્રીય પદાધિકારીઓ દ્વારા દર વર્ષે આયોજન કરાય છે. તેવી જ રીતે મહિલા પરિષદ દ્વારા પણ આયોજન કરાય છે. જ્યારે આચાર્ય ભગવંતોના દર્શન-વંદનાર્થે જવા શ્રી સંઘો દ્વારા લકઝરી બસો દ્વારા સામુહિક પ્રવાસનું દર વર્ષે આયોજન કરાય છે. અત્યારે કોરોના મહામારીના કારણે સામુહિક પ્રવાસનું આયોજન થવું અશક્ય છે. કોરોના મહામારી એ વિશ્વભરમાં અરાજક્તા ફેલાવી કોઈનીય કસોટી કરવામાં કસર છોડી નથી. સહુના મનને અશાંત બનાવી દીધા છે ત્યારે સરકાર દ્વારા ઘડાયેલા નિયમોનું પાલન કરી સામુહિકરૂપે નહી પણ દસ-દસ વ્યક્તિનું ગ્રુપ બનાવી પૂજ્ય આચાર્ય ભગવંતો તથા શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોની સુખ-શાતા પૂછવા અને દર્શન-વંદનાર્થે જવા આયોજન કરી મનની શાંતિ માટે રૂડો અવસર પ્રાપ્ત કરવા જેવો છે. જ્યારે તપસ્વી જીવનમાં પ્રથમવાર વિશ્વશાંતિ અને જગતના જીવોના કલ્યાણ નિમિત્તે ૮૪ દિવસીય પાંચ પીઠીકા સૂરિમંત્રની એકાંતવાસમાં આરાધના સાનંદ સંપન્ન કરવાવાળા આપણા સરળ સ્વભાવી ગચ્છાધિપતિશ્રીઅને આચાર્યશ્રીના તેજસ્વી મુખકમળના દર્શન કરવાનો લ્હાવો પ્રાપ્ત કરવા જેવો છે. શ્રદ્ધાળુ ગુરુભક્તોની જાણકારી માટે આચાર્ય ભગવંતો તથા શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોના ચાતુર્માસ સ્થળની યાદી અત્રે પ્રસ્તુત કરેલ છે.

-: શ્રમણ વૃંદ :-

(૧) પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર યુગનાયક, ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., વરિષ્ઠ મુનિરાજશ્રી વિરરત્નવિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણા નિમ્હાહેડા (રાજ.)

(૨) ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક સૂરિમંત્ર આરાધક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ ઠાણા શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થ (રાજ.)

(૩) પ.પૂ. મુનિરાજશ્રી અપૂર્વરત્નવિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી વિનયરત્નવિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી અજિતસેનવિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણા, પાલિતાણા (ગુજરાત)

(૪) પ.પૂ. મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણા, પાટણ (ગુજરાત)

(૫) પ.પૂ. મુનિરાજ શ્રી વૈભવરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણા, સૂરત (ગુજરાત)

(૬) પ.પૂ. મુનિરાજ શ્રી સંયમરત્ન વિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી ભુવનરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણા, નીમચ (મ.પ્ર.)

(૭) પ.પૂ. મુનિરાજશ્રી જિનાગમરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણા, અમદાવાદ (ગુજરાત)

-: શ્રમણી વૃંદ :-

(૧) પ.પૂ. વયોવૃદ્ધા સાધ્વીજીશ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા., પ.પૂ. તપસ્વિની સાધ્વીજીશ્રી કનકપ્રભાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, અમદાવાદ (ગુજરાત)

(૨) સાધ્વીજીશ્રી પ્રિયદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા. અલવર (રાજસ્થાન)

(૩) પ.પૂ. સાધ્વીજીશ્રી કલ્પલતાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, રાજગઢ (મ.પ્ર.)

(૪) સાધ્વીજીશ્રી પુણ્યદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, રાણાપુર, (મ.પ્ર.)

(૫) સાધ્વીજીશ્રી મોક્ષગુણાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, અમદાવાદ, (ગુજરાત)

(૬) સાધ્વીજીશ્રી રત્નયશાશ્રીજી મ.સા., સાધ્વીજીશ્રી રંજનમાલાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, અમદાવાદ (ગુજરાત)

(૭) સાધ્વીજીશ્રી દિવ્યદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, પેપરાલ (ગુજરાત)

(૮) સાધ્વીજીશ્રી અવિચલદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, ખાચરૌદ (મ.પ્ર.)

(૯) સાધ્વીજીશ્રી અનુપમદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, પાલિતાણા (ગુજરાત)

(૧૦) સાધ્વીજીશ્રી અમિતદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, રતલામ (મ.પ્ર.)

(૧૧) સાધ્વીજીશ્રી અનંતદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, ભાયંદર (મુંબઇ)

(૧૨) સાધ્વીજીશ્રી વિદ્વદગુણાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા મન્દસૌર (મ.પ્ર.)

(૧૩) સાધ્વીજીશ્રી દર્શનકલાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, પાલિતાણા (ગુજરાત)

(૧૪) સાધ્વીજીશ્રી શાસનલતાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, સિયાણા (ગુજરાત)

(૧૫) સાધ્વીજીશ્રી તત્વલતાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, પાટણ (ગુજરાત)

(૧૬) સાધ્વીજીશ્રી અનેકાન્તલતાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, રેવતડા (રાજ.)

(૧૭) સાધ્વીજીશ્રી વિજ્ઞાનલતાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, પાલિતાણા (ગુજરાત)

(૧૮) સાધ્વીજીશ્રી કલ્પરેખાશ્રીજી મ.સા., સાધ્વીજીશ્રી પરમરેખાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા લાખણી (ગુજરાત)

(૧૯) સાધ્વીજીશ્રી ભક્તિરસાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, પાલિતાણા (ગુજરાત)

(૨૦) સાધ્વીજીશ્રી નયનપ્રભાશ્રીજી મ.સા., ભીનમાલ (રાજ.)

(૨૧) સાધ્વીજીશ્રી ચિરાગકલાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, અમદાવાદ (ગુજરાત)

(૨૨) સાધ્વીજીશ્રી ભાગ્યકલાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, આણંદ (ગુજરાત)

(૨૩) સાધ્વીજીશ્રી પ્રીતિદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, પાટણ (ગુજરાત)

(૨૪) સાધ્વીજીશ્રી સંવેગપ્રિયાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, પાલિતાણા (ગુજરાત)

(૨૫) સાધ્વીજીશ્રી અમૃતરસાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, મહિદપુર સીટી (મ.પ્ર.)

(૨૬) સાધ્વીજીશ્રી ચૈત્યપ્રિયાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, પાટણ (ગુજરાત)

(૨૭) સાધ્વીજીશ્રી કુમુદપ્રિયાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, પાટણ (ગુજરાત)

(૨૮) સાધ્વીજીશ્રી યોગનિધિશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, સૂરત (ગુજરાત)

(૨૯) સાધ્વીજીશ્રી જિતયશાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, પાલિતાણા (ગુજરાત)

પરિષદ સંદેશ

અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદની રાષ્ટ્રીય કાર્યકારીણી ગુજરાત, મધ્યપ્રદેશ, રાજસ્થાન, દક્ષિણ ભારત, મહારાષ્ટ્ર રાજ્યોના પદાધિકારીઓની એક મીટીંગ ઓનલાઇન દ્વારા તા. ૧૧-૯-૨૦૨૦ના રોજ રાત્રે ૯ કલાકે રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ તપસ્વી રત્ન શ્રી રમેશભાઇ ધરૂના પ્રમુખસ્થાને યોજાઇ હતી. આ મીટીંગ ઓનલાઇન પ્લેટફોર્મ યોજાઇ હતી. જેમાં સંગઠનાત્મક વિષયો સહિત કેન્દ્રી ઇકાઇ દ્વારા સંચાલિત વિભિન્ન યોજના પર વિચારવિમર્સ કરાયો હતો.

આ મીટીંગમાં અનિવાર્યરૂપથી રાષ્ટ્રીય-પ્રાદેશિક મળીને ૨૮ પદાધિકારીઓ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

વિશેષ કાર્યવૃત (૧) પદાધિકારીઓ દ્વારા સામુહિક સાંવત્સરિક ક્ષમાયાચના કરવામાં આવી હતી. (૨) કેન્દ્રીય ઇકાઇ દ્વારા સંચાલિત ઘેર ઘેર જ્ઞાનાર્જન, પ્રતિક્રમણ, પ્રતિયોગિતાના ક્રીયાન્વયન પર વિચાર વિમર્શ કરાયો હતો. (૩) સંગઠનાત્મક ગતિવિધિ અને સદસ્યતા અભિયાનની પરિષદ સેતુ યોજનાને ગતિ આપવા મંથન કરવામાં આવ્યું હતું. (૪) પ્રાદેશિક ઇકાઇઓમાં વિભિન્ન નગરોમાં પાઠશાળાની સ્થિતિ પર વિચારવિમર્શ કરવામાં આવ્યો હતો. (૫) અન્ય વિષયો પર અધ્યક્ષ મહોદયના નિર્દેશાનુસાર ચર્ચા કરવામાં આવી હતી.

ઓનલાઇન આ મીટીંગમાં માનનીયશ્રી શાંતિલાલ રામાણી, પરિષદ અધ્યક્ષ તપસ્વીરત્ન શ્રી રમેશભાઇ ધરૂ, પરિષદ મહામંત્રીશ્રી સુધિરજી લોઢા, શ્રી પ્રકાશજી હીરાણી, શ્રી રાષ્ટ્રીય ઉપાધ્યક્ષ શ્રી અરવિંદભાઇ દેસાઇ, શ્રી બાબુલાલજી કટારીયા સંઘવી, શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન દંગવાડાવાળા, શ્રી ભરતભાઇ વોહેરા (મુંબઇ), શ્રી મુકેશજી જૈન નાકોડા, શ્રી ભરતભાઇ (લાડુ), શ્રી સંજયજી કોઠારી, શ્રી શાંતિલાલજી ગોખરૂ, શ્રી રાજેશજી બાગરેચા, શ્રી અનિલજી ધારીવાલ, શ્રી બાબુલાલજી સવાણી, શ્રી દિનેશજી જૈન (ચેન્નઇ), શ્રી દિનેશજી દોશી, શ્રી સંજયજી અદાણી, શ્રી ચિરાગ ભંસાણી, શ્રી શૈલેષભાઇ ઓરા, શ્રી ભાવિક માજની, શ્રી અમૃતજી રોઢો (મૈસુર), શ્રી રાજકમલજી દુગ્ગડ વિગેરે ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

પાટણ નગરે પુણ્ય સપ્તમીની ઉજવણી

પાટણ નગરે ચાતુર્માસ સ્થિત બિરાજમાન મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્નવિજયજી, મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની પાવનકારી નિશ્રામાં કોરોના મહામારીના સરકારના નિયમોનું પાલન કરવા સાથે

ત્રિસ્તુતિક જૈન ઉપાશ્રયમાં અક્ષયતૃતિયા દિવસે વરસીતપના પારણા અને પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની તૃતિય વાર્ષિક પુણ્યતિથિ પુણ્યગુરૂ સપ્તમીની ઉજવણીનું આયોજન કરાયું હતું. પુણ્ય સમ્રાટની તૃતિય વાર્ષિક પુણ્યતિથિ ઉજવણી પ્રસંગ પર પાટણનગરમાં બિરાજમાન પંન્યાસ શ્રી ભવ્યદર્શન વિજયજી મ.સા. આદિ વિભિન્ન સમુદાયના શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. પુણ્ય સપ્તમી નિમિત્તે સવારે ૭ કલાકે ભક્તામ્બર સ્તોત્ર, ગુરૂ ગણ ઈક્કીસા પાઠ ૯ કલાકે, નવકાર મહામંત્રના ભાષ્ય જાપ ૧૦ કલાકથી ૧ કલાક સુધી ગુરૂ ગુણાનુવાદ કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. સાંજે ૬ કલાકે ગુરૂભક્તિ અને ૧૦૮ દિપકની રંગોળી સજાવાઈ હતી.

પુણ્ય સપ્તમી નિમિત્તે પાટણનગરમાં બિરાજમાન ત્રિસ્તુતિક સમુદાયના શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોએ આયંબિલ, ઉપવાસ, અઠ્ઠમ વિગેરે તપશ્ચર્યા કરી હતી અને સાધ્વીજીશ્રી કુમુદપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.એ મૌન અઠ્ઠાઈની તપશ્ચર્યા કરી હતી. શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણના સભ્યો દ્વારા એકત્રિત કરેલ રૂપિયાનું પુણ્ય સપ્તમીના દિવસે આર્થિક જરૂરિયાતમંદ પરિવારોમાં વિતરણ કર્યું હતું.

કોરોના મહામારીની ભયંકર આફત વેળાએ થરાદ પંથક જૈન સમાજના જરૂરિયાતમંદ પરિવારોની વહારે દાતા પરિવારો, ટ્રસ્ટો અને સંસ્થાઓના કાર્યકરો

શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોની ઉત્કૃષ્ટ સેવા - વયાવચ્ચ ભક્તિ કરવા શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ અમદાવાદ મોખરે... પરિષદ અધ્યક્ષ શ્રી ભરતભાઇ (લાડુ)ની નેત્રદિપક કામગીરી

સમગ્ર રાષ્ટ્રમાં જ્યારે પણ સંકટજનક પરિસ્થિતિનો સામનો કરવાનો સમય પ્રવર્તતો હોય ત્યારે માનવતાની મૂર્તિસમા થરાદ જૈન સમાજના દયાળુ દાતા પરિવારો, શ્રી સંઘો, પરિષદો, સામાજિક ટ્રસ્ટો, સેવાભાવી સંસ્થાઓ અને સમાજના કર્તવ્યનિષ્ઠ કાર્યકરો સહાય અર્થે દોડી જાય છે.

કોરોના મહામારીની ભયંકર આફત સામે લડવા અને કોરોના મહામારીને હરાવવા આપણા દેશના વડાપ્રધાન શ્રી નરેન્દ્રભાઈ મોદીએ તા. ૨૫ માર્ચ ૨૦૨૦ના રોજથી લોકડાઉન જાહેર કરતાં દેશના દરેક લોકો ઘરમાં બંધ થઈ ગયા હતા અને સંપૂર્ણ વહેવારો સ્થિત થઈ ગયા હતા. જેમ જેમ કોરોના મહામારીના કેસો વધતા ગયા તેમ તેમ લોકડાઉન પણ

લંબાવાતું ગયું. આવા કપરા સમયે દેશભરમાંથી ઉદ્યોગપતિ દાતાઓ ફિલ્મ કલાકારો, ટ્રસ્ટો, સંસ્થાઓ, ડોક્ટરો, નર્સો, પોલીસ કર્મચારીઓ અને દેશના લાખો સેવાભાવી કાર્યકરો કોરોનાગ્રસ્તોની સહાય અર્થે ઉભરી આવ્યા હતા. કોરોનો મહામારીએ સમગ્ર માનવ જાતને જુદા જુદા સ્તરે એવી ઝુડી છે કે તેની કળ વળતા ખાસ્સી વાર લાગશે. કળની તો ક્યાં વાત કરવી કેટલાય પરિવારોને તો ક્યાં ઉઝરડા પડ્યા છે તેની ખબર પડતાં પણ વાર લાગશે. આવી પડકારરૂપ આફતમાં થરાદ પંથક જૈન સમાજના મધ્યમવર્ગના પરિવારો પણ મુશ્કેલીમાં મુકાયા હતા. તે માટે સમાજના ઉદાર સખાવતી પરિવારો દ્વારા જરૂરિયાતમંદ પરિવારોને રોકડ રકમ લેવા માટે અનુરોધ કરાયો હતો અને જરૂરિયાતમંદ પરિવારોએ તેમની બેંકનો ખાતા નંબર મૂકતાં તેમના ખાતામાં રોકડ રકમ જમા થઈ ગઈ હતી. લગભગ જરૂરિયાતમંદ પરિવારને રૂા. ૧ લાખથી વધુ રોકડ રકમ પ્રાપ્ત થઈ હતી. આ માટે શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘોની આજ્ઞાથી ટ્રસ્ટો, મંડળો, સંસ્થાઓના કાર્યકરોએ ભારે જહેમત ઉઠાવી હતી. લોકડાઉન વેળાએ રોજ પ્રતિરોજ ધર્મદિવાકર, ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. તેમજ આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સમસ્ત શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના શ્રાવકો તેમજ વિશ્વભરના લોકોને પોતાના ઈષ્ટદેવનું સ્મરણ કરવા અને હિંમત રાખવા સંદેશા પાઠવતા રહ્યા હતા તેમજ ખાસ ભાર આપીને જણાવવામાં આવ્યું હતું કે, દરેક શ્રાવકના ઘરની નજીક ઉપાશ્રયોમાં બિરાજમાન શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોની દેખરેખ રાખજો. સમસ્ત સમુદાયના શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોની ઉત્કૃષ્ટ સેવા વયાવચ્ચ ભક્તિ કરવામાં શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ અમદાવાદ મોખરે રહી હતી. અમદાવાદ પરિષદના અધ્યક્ષશ્રી ભરતભાઈ (લાડુ)એ રાત-દિવસ જોયા વિના શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોની ઉત્કૃષ્ટ સેવા વયાવચ્ચ ભક્તિની નેત્રદિપક કામગીરી કરી હતી અને અત્યારે પણ તે સેવામાં ખડેપગે કાર્યરત છે. જ્યારે શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમાજના ઘેર ઘેરથી રોટલી-શાક, દાળ ભાત વિગેરે ઉઘરાવી ગરીબ પરિવારોના ઘેર ઘેર પહોંચાડવાની નેત્રદિપક કામગીરી તરૂણ પરિષદે કરી હતી. શ્રી અમદાવાદ સંઘની આજ્ઞાથી અદાણી શાંતાબેન શાંતિલાલ ભુદરમલભાઈ પરિવાર દ્વારા મીઠાખળી ખાતેની લેમન-ટી આધુનિક હોટલમાં થરાદ જૈન સમાજના કોરોનાગ્રસ્ત વ્યક્તિને ૧૪ દિવસ કોરોન્ટાઈન રહેવા-જમવાની ઉત્તમ વ્યવસ્થા કરાઈ હતી, જે અનુમોદનીય બની રહી છે.

ખાસનોંધ : અમદાવાદ, મુંબઈ, સુરત જે જે સ્થળોએથી દાતા પરિવારો દ્વારા થરાદ જૈન સમાજના જરૂરિયાતમંદ પરિવારોને રોકડ રકમ ફાળવવામાં આવી હતી, તે દાતા પરિવારોના નામ અત્રે પ્રસ્તુત કરેલ નથી. કારણ કે કોઈ પરિવારનું નામ ભુલથી રહી જાય તો પક્ષપાત કર્યો કહેવાય માટે ક્ષમા...

આવનાર આર્થિક સમસ્યાને ઓળખો, સાદાઈપૂર્વકનું જીવન જીવવું પડશે

તાજેતરમાં ગુજરાત સમાચારની એક કોલમમાં વાંચવા મળ્યુ કે, તેમાંથી કેટલોક સારાંશ લઈ સમાજજનોએ સાદાઈપૂર્વકનું જીવન જીવવું પડશે અને આવનાર આર્થિક સમસ્યાને ઓળખવી પડશે.

દેશના બે કરોડ લોકો બહુ ટૂંકા સમયમાં મધ્યમવર્ગમાંથી ગરીબીની રેખા નીચે ખસી જવાનો અણસાર જાણીતા અર્થશાસ્ત્રીઓએ આપ્યો છે. અહેવાલ બતાવે છે કે, ભારતમાં પ્રથમ તબક્કામાં બે કરોડ નાગરિકો કે જેઓ મધ્યમ કે ઉચ્ચ મધ્યમ વર્ગનું પારાવારિક જીવન જીવતા હતા તેઓ બહુ નજીકના ભવિષ્યમાં રેશનીંગની લાઇનમાં ઉભેલા જોવા મળશે. બે કરોડ નાગરિકોનો આ પ્રથમ તબક્કો છે. હકીકતમાં કેટલાય કરોડ લોકો પણ આ જ રસ્તે પતન પામવાના છે એવું જણાઈ રહ્યું છે. કોરોનાને કારણે જિંદગીના કડવા ઘુંટડાઓ ભારતીય સમાજે ગળે ઉતારવાના છે. અનલોક થયા પછી બજારોમાં સન્નાટો ફેલાયો છે અને આગળના ભવિષ્યનો વિચાર કરીને નાગરીકોએ ખરીદી કરવાનું મુલતવી રાખ્યું છે. એ જોતાં સાવ જીવન જરૂરિયાતની ફરજિયાત ચીજવસ્તુઓ સિવાય બીજી કોઈપણ ચીજવસ્તુઓની માંગ એકાએક વધે તેવા કોઈ સંજોગો અત્યારે દેખાતા નથી. કોરોનાને કારણે દેશનું આખું ચિત્ર બદલાઈ ગયું છે. ભારતના મોટા શહેરોના રસ્તાઓ પર અનલોક થયા પછી પણ ટ્રાફિક બહુ ઓછો છે. દેશના લાખો લોકોને પોતાની નોકરી, કે વ્યવસાય બદલવાની સ્થિતિ આવી છે. લોકડાઉનને કારણે ઘણા બધા પરિવારોનું અર્થતંત્ર ડામાડોળ થઈ ગયું છે. અગાઉની જીવનશૈલી સાદગીપૂર્ણ હોય તો બહુ વાંધો નહીં આવે, પરંતુ અગાઉ જેમણે ઠાઠમાઠ ભોગવેલા છે એમને માટે હવે સાદગી અપનાવવી ફરજિયાત છે. નવી શ્રીમંતાઈમાં જિંદગીની મજા લેતા હતા, તેમણે બે પગથિયાં નીચે ઉતરવાનું નક્કી છે. જેમની પાસે પેઢી દર પેઢીની પરંપરાગત શ્રીમંતાઈ છે અને જેમના વડીલ પૂર્વજોએ જાતે ત્યાગ કરીને બહુ કરકસરથી સંપત્તિઓનું સર્જન કરેલું છે તેમને બહુ વાંધો નહીં આવે. પણ મધ્યમવર્ગના લોકોએ બેફામ ખર્ચ બંધ કરી દેવા પડશે. પાંચસોની સાડી પહેરો કે પચાસ હજારની સાડી પહેરો, પાંચસોની પેન્ટ-શર્ટની જોડી પહેરો કે પાંચ હજારનો શુટ, માસ્કથી ઢંકાયેલ મુખ હોય તેમણે ઓળખવાનું કોણ ? મોંઘીદાટ હોટલોમાં જવાનું બંધ કરવું પડશે.

એક વખતનું મોંઘી હોટલનું જે બીલ ચૂકવાય તેટલા નાણાંથી એક માસનું કરિયાણું ઘરમાં ભરી શકાય ! દોઢસો રૂપિયાનો ૧ ઢોસો, ૧ પિત્ઝા, ૧ ડીસ નુડલ્સ જેવી બિન રોગપ્રતિકારક શક્તિ ધરાવતી વાનગીઓ આરોગવાનું બંધ કરવું પડશે. ઉક્ત દોઢસોની વાનગી ઘરે બનાવો તો રૂ. ૨૦માં જ પડશે ! ચહેરાને સુંદર બનાવવા દુધની મલાઈ અને હળદરનું મિશ્રણ કરી તેનો પ્રયોગ ઘરે કરવો પડશે. મોંઘાદાટ પ્રસાધનો ખરીદવાનું બંધ કરવું પડશે. રૂ. ૧૦૦૦થી રૂ. ૨૦૦૦ સુધીના બુટ-ચંપલ પહેરનારને બસો-ત્રણસોના બુટ-ચંપલથી ચલાવવું પડશે. ચાલીને જઈ શકાય તેટલું ચાલી જઈને ગાડી-બાઈક કે સ્કુટરમાં વપરાતા પેટ્રોલ-ડીઝલનો બચાવ કરવો પડશે. બિનજરૂરી ટ્રાવેલીંગ કરવાનું ટાળવું પડશે. ઘરમાં પંખા-લાઈટ-એસી વિગેરેનો જરૂર પુરતો ઉપયોગ કરી વીજળી બિલનો બચાવ કરવો પડશે. રૂ. ૨૦૦ થી રૂ. ૩૦૦ની ટીકીટ લઈ મલ્ટીપ્લેક્સ સિનેમા ઘરમાં ફિલ્મ જોવાનું ટાળવું પડશે. આજની આર્થિક સમસ્યાને ધ્યાનગ્રસ્ત કરી કરકસરથી સાદાઈપૂર્વકનું જીવન નહીં વ્યતિત કરવામાં આવે તો એક જ વ્યક્તિની આવકથી નિભાવ થતા પરિવારોની સ્થિતિ કફોડી બની શકવાની પુરેપુરી શક્યતા છે, માટે આના કરતાં પણ વધારે સંકટભરી આવનાર આર્થિક સમસ્યાને ઓળખવી પડશે.

પ્રદૂષણના રૂંધણથી મુક્ત થવા, વતનની શુદ્ધ હવા ખાવા અને સ્વાસ્થ્યરૂપી રાહતનો દમ લેવા થરાદ પંથક જૈન સમાજના નિવૃત્ત વડીલોને વતનની ધન્ય ધરા આવકારવા આતુર....

વતનપ્રેમી ઉદાર સખાવતી પરિવારોને નમ્ર વિનંતી

ભારતક્ષેત્રે ભારત વર્ષમાં ગૌરવવંતી ગુજરાત રાજ્યની ધન્ય ધરા પર ધાર્મિક્તાની છોળો અવિરત ઉડતી રહી છે. ગુજરાત પ્રદેશની ધરતી ધાર્મિક્તા, માનવતા અને શૂરવીરતાના વારસાથી ધબકી રહી છે. આદિ કાળથી આ ગુજરાતની ભૂમિએ પોતાની આગવી ઓળખ જાળવી રાખી છે. પૂર્વકાળના પરાક્રમી વડવાઓ અને દાનવીરોની જન્મદાત્રી તેમજ ધાર્મિકક્ષેત્રે અને સામાજિક ક્ષેત્રે ઝળકેલી અનેક પ્રતિભાઓને જન્મ આપનારી આ ગરવી ગુજરાતની ધરાની ગૌરવ ગાથાના ઐતિહાસિક પૃષ્ઠો સોનેરી અક્ષરોએ લખાયેલા છે. વર્તમાનકાળમા પણ ગુજરાત અને તેમાંય થરાદ પંથક જૈન સમાજની પ્રજાનો સંસ્કાર વારસો, ધર્મપ્રિયતા, સમાજપ્રિયતા, માનવપ્રિયતા અને શૌર્યતા હજુય

અકબંધ જળવાઇ રહી છે.

આજે પણ દેશના દરેક ભાગોમાં સ્થાઇ થઇ વ્યવસાય ક્ષેત્રે કીર્તિ અને સફળતા મેળવનાર થરાદ પંથક જૈન સમાજના પરિવારો ભૌતિક્તાની ભરમાર અને સુખ સમૃદ્ધિની છોળો વચ્ચેય ધર્મ-માનવતા અને ગુરૂ પ્રત્યેની શ્રદ્ધાભક્તિને ભુલ્યા નથી.

છેલ્લા બે-ત્રણ દાયકાથી ભારતભરના શહેરો તરફની દોટમાં નાના ગામોની વસતી ઘટવા માંડી છે. વર્તમાનકાળમાં થરાદ તેમજ થરાદની આજુબાજુના ગામોમાં જૈનોની વસતી અલ્પ માત્રામાં થઇ ગઇ છે. થરાદ પંથક જૈન સમાજના મુંબઇ-સુરત, અમદાવાદ જેવા મોટા શહેરોમાં સ્થાઇ થયેલ કેટલાય પરિવારોની સ્થિતિ ન સહેવાય કે ન કહેવાય, તેવી થઇ ગઇ છે. લોકડાઉનના કારણે ઘણા બધા પરિવારોનું અર્થતંત્ર ડામોડાળ થઇ ગયું છે. પ્રદુષણથી રૂંધાતા કેટલાય નિવૃત્ત વડીલોને વતનમાં રહી શુદ્ધ હવા ખાઇ સ્વસ્થ રહેવાની ઇચ્છા છે, પરંતુ ત્યાં થોડી ઘણી સગવડ મળે ? તો કોરોના મહામારી અને પ્રદુષણના રૂંધણમાંથી મુક્ત થઇ વતનની શુદ્ધ હવા ખાવા અને સ્વાસ્થ્ય રૂપી રાહતનો દમ લેવા તૈયારી કરે એમ છે અને માદરેવતનની ધન્યધરા પણ આવકારવા આતુર છે.

શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ, મુંબઇ, સુરત, આણંદ, નડીઆદ, રાજકોટના અગ્રણીઓ અને વતનપ્રેમી ઉદાર સખાવતી પરિવારોને નમ્ર વિનંતી છે કે, થરાદ નગરને હર્યુભર્યુ કરવા અને કરોડોના ખર્ચે નિર્માણ પામેલ દેરાસરો, ઉપાશ્રયો, કુળદેવી માતાજીના મંદિરોની સાચવણી માટે ગંભીર નોંધ લઇ વજનદાર ઠોસ આયોજન કરવાની તાતી જરુર છે. ચાર-પાંચ વર્ષ અગાઉ થરાદ જૈન સમાજના અગ્રણીય વતનપ્રેમી મોટાકાકાના હુલામણા નામથી પ્રચલિત શ્રી ચંદ્રકાન્ત ભુદરમલભાઇ વોરાએ પણ થરાદનગરને જૈનોની વસ્તીથી હર્યુભર્યુ કરવા તેમના ઉત્કૃષ્ટ ભાવો પ્રગટ કર્યા હતા. પરંતુ ત્યારની વાત જુદી હતી અને આજના સમયની વાત જુદી છે. વર્તમાન સમયમાં કોરોના મહામારીએ હાહાકાર મચાવી દીધો છે, અને ક્યાં સુધી આ મહામારી ચાલુ રહેશે તેનું કોઇ ભવિષ્ય નથી. આવા સંજોગોમાં કેટલાય પરિવારોના જવાબદાર વ્યક્તિની માનસિક સ્વસ્થતા પણ બગડી શકે તેમ છે. થરાદ પંથક જૈન સમાજના ઉદાર સખાવતી દાતા પરિવારોનો સંપર્ક કરી અગ્રણીઓ એક જંગી ફંડ એકઠું કરી ઠોસ આયોજન દ્વારા સવારની નવકારશી, બપોર-સાંજના ભોજનની વ્યવસ્થા, બિલકુલ ચાલી શકતા ન હોય તેવા વૃદ્ધ-વૃદ્ધા માટે ટીફીનની વ્યવસ્થા

કરવામાં આવે તો નિશ્ચિતપણે થરાદનગર ધીમે ધીમે હર્યું ભર્યું રહેશે. આની સામે એક મોટો પ્રશ્ન થઈને ઊભો રહેશે સ્વમાનનો ? તેનો ઉકેલ છે કે જે વડીલોના પરિવારો આર્થિક રીતે સદ્ધર છે તે ફંડમાં ફાળો આપી શકે. આવા આયોજનમાં સામુહિક પરિવારો જોડાય તો કોઈનું સ્વમાન હણાય નહીં. માત્ર શારીરિક સ્વસ્થતા માટે ઠોસ આયોજન કરવાની તાતી જરુર છે. જો ઉક્ત આયોજન થાય તો પ્રદુષણ રહિત શુદ્ધ હવા પાણીના કારણે નિવૃત્ત વડીલ પરિવારોનું સ્વાસ્થ્ય એકદમ સ્વચ્છ રહે અને શહેરોના પ્રદુષણમાં રહી દવા ખાવામાંથી મુક્તિ મળે. શહેરમાં નાના ફ્લેટમાંથી બે-ત્રણ વ્યક્તિ વતનમાં રહે તો શહેરના ફ્લેટમાં મોકળાશ થાય તેથી શહેરી પરિવારજનોનું કોરોના ડીસ્ટન્સ પણ જળવાઈ રહે.

આ કોઈ તરંગી સુચન નથી પણ આ સમયની માંગ છે અને તાતી જરૂર છે. થરાદનગરના દરેક ઘર ખુલ્લા થઈ જશે તો દરેક વર્ષે સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોના ચાતુર્માસનો પુણ્યવંતો લાભ મળી શકશે. થરાદ પંથક જૈન સમાજના શુભચિંતકો ઉંડું ચિંતન કરી ઠોસ આયોજન કરે તો સફળતા ચોક્કસ મળશે, તેમાં શંકાને સ્થાન નથી.

વાર્યા ના વરે તે હાર્યા વરે

વર્તમાન સમયમાં તેવી પરિસ્થિતિનું નિર્માણ થઈ રહ્યું છે

આજના આ યુગમાં ઘણા મધ્યમવર્ગના વ્યક્તિઓ નોકરી અથવા નાનો-મોટો વ્યવસાય કરી માંડ માંડ સાદાઈપૂર્વક જીવન વ્યતિત કરવા મથામણ કરતાં હોય છે. કાળઝાળ મોંઘવારીમાં ડગમગતી જીવનની નાવને સ્થિર રાખવા જુની પ્રથાઓને વળગી રહી બિનજરૂરી ખર્ચનો કાપ મુકવા અને જુનાજડ રીવાજોમાં પરિવર્તન લાવવા દશ વર્ષ પૂર્વે લોકાચાર વિષય પર મધુકર મનીષીમાં અને તાજેતરમાં શાશ્વત ધર્મ ગુર્જર જૈન જ્યોત, ગુજરાતી વિભાગમાં લગ્નોત્સવમાં થતા ફાજલ ખર્ચનો બચાવ કરવા અમારા મંતવ્યો રજુ કર્યા હતા. જેનો સમાજના વ્યક્તિઓ તરફથી મોટા પ્રમાણમાં પ્રતિસાદ મળ્યો છે.

વર્તમાનમાં આપણે અને આપણો થરાદ પંથક જૈન સમાજ જે સ્થિતિમાંથી પસાર થઈ રહ્યો છે એ સ્થિતિનું કયું નામ આપવું ? અત્યારે આપણે જે સમસ્યાઓમાંથી પસાર થઈ રહ્યા છીએ એ સમસ્યાઓ ઘણી જ હાડમારી અને અર્થ વગરના ખર્ચ બાબતની છે આપણી પરંપરાથી ચાલી આવતી પ્રથાનું સમય મુજબ પરિવર્તન ન લાવવાના કારણે આર્થિક સ્થિતિની વેદનાથી કણસતો

માણસ ચીસ પણ પાડી શકતો નથી. એ વેદનાને મુંગા મોંઢે સહન કરી લેતો હોય છે. સમય મુજબ જુના રીતરિવાજોમાં પરિવર્તન લાવવા અમારા દ્વારા પ્રકાશિત થતા મધુકર મનીષી સાપ્તાહિકમાં અમારું મંતવ્ય રજુ કર્યું હતું કે બે-ત્રણ દાયકા પૂર્વે થરાદ જૈન સમાજમાં કોઇ સ્વજનનું અવસાન થતું ત્યારે લોકાચારનો વહેવાર એક અઠવાડિયા સુધી ચાલતો હતો. તે સમય એવો હતો કે મોટાભાગના જૈન પરિવારો માદરે વતન થરાદમાં વસવાટ કરતા હતા અને ૮૦ ટકા ઘરો ખુલ્લા હતાં અને દરેક શેરીમાં કાકા-બાપાના ઘરો આજુબાજુમાં જ હતા જેથી ગામોગામથી લોકાચાર (સથવારો) કરવા આવતા સગાં-સ્નેહીઓની વ્યવસ્થા થઈ શકતી હતી, તેમજ (જારો) જમવા માટે કાંસાની થાળીઓ વિગેરેની સગવડ શ્રી સંઘ તરફથી મળી રહેતી હતી. ત્યારે જે ઘરમાંથી પોતાના સ્વજને અંતિમ વિદાય લીધી હોય તે વ્યક્તિ ગળાડૂબ શોકમાં ડુબેલો હોય અને તે જ ઘરમાં શુદ્ધ ઘીના ડબ્બા ઠલવાયા, ઘીની વાડી ઉંધીવાળી ઘી પીરસાય તે તો બીલાડાઓને ગમતી હોય તેવી જડ પ્રથા કહેવાય. આ જડ પ્રથાને નેસ્તનાબૂદ કરી દેવી જોઇએ. સમયના વહેણ મુજબ થરાદ જૈન સમાજના પરિવારો ધીમે ધીમે વ્યવસાય અર્થે જુદા જુદા શહેરોમાં સ્થાઇ થવા લાગ્યા. તે માટે અમારું મંતવ્ય રજુ કર્યુ હતું કે લોકાચાર કરવા આવતા સગા-સ્નેહીજનોની થરાદની પ્રથા મુજબ વ્યવસ્થા કરવા ઘણી મુશ્કેલીઓનો સામનો કરવો પડે જેથી સથવારાની પ્રથાને બંધ કરી દેવી જોઇએ અને નજીકના લોહીનો સંબંધ ધરાવતી વ્યક્તિઓએ જ આવી સ્વજન ગુમાવેલા વ્યક્તિને આશ્વાસન આપી મદદરૂપ થવું જોઇએ. તેમના ભારરૂપ થવું ન જોઇએ. કોઇ દુરના સગાનું અવસાન મુંબઇ ખાતે થયું હોય તો એક વ્યક્તિને થરાદથી મુંબઇ જવાનો ખર્ચ રૂા. ૨૦૦૦, સુરત જવાનો ખર્ચ રૂા. ૧૫૦૦, અમદાવાદ, નડીયાદ, આણંદનો ખર્ચ રૂા. ૧૦૦૦. આ ખર્ચ ઉપરાંત આવવા-જવાની હાડમારી અને જેમના ઘેર જવાનું છે તેને ભારરૂપ બનવાનું. આનો અર્થ એવો નથી, મોતનો મલાજો ન સાચવવો...

સ્વજનના અવસાન માટે દુઃખ વ્યક્ત કરવું અને મોતનો મલાજો સાચવવો તે તો આપણી સંસ્કૃતિ છે. થરાદ પંથક જૈન સમાજનું સંગઠન અને આત્મિયતા એટલી મજબુત છે કે અન્ય સમાજોએ તેના સંગઠનના દાખલા આપવા પડે છે. ભારતભરના જે જે શહેરોમાં થરાદ પંથક જૈન સમાજના પરિવારો વસવાટ કરી રહ્યા છે તે શહેરમાં કોઇના ઘેર સાજુ-માંદુ હોય કે કોઇના ઘેર અવસાન જેવી ઘટના બની હોય ત્યારે મોટી સંખ્યામાં થરાદવાસીઓ દોડી જઇ

શોકમાં ડુબેલ સ્વજન પરિવારને આશ્વાસન આપી આવતા હોય છે. માટે લોહીનો સંબંધ ધરાવતી નજીકની વ્યક્તિ સિવાય કોઈએ લોકાચાર કરવા બહારગામ જવું જોઈએ નહીં, તેમને સારી ભાષામાં સારા શબ્દો લખી શ્રદ્ધાંજલિ અર્પણ કરતો પત્ર પાઠવી દેવો. અગર વોટ્સઅપ કરી દેવો જોઈએ. અને સ્વજનના અવસાન નિમિત્તે તેમના આત્મશ્રેયાર્થ પુણ્યાપાર્જન કરતા સાતક્ષેત્રમાંથી કોઈ એક ક્ષેત્રમાં રકમ લખાવી તેની પાવતી સ્વજન પરિવારના ઘેર મોકલી આપવી જોઈએ. હાડમારી વેઠીને વાહનભાડાનો વ્યર્થ ખર્ચ કરીને કોઈ વળતર મળવાનું નથી પણ સાત ક્ષેત્રમાં લખાવેલી નાની રકમ પણ સ્વજનને સાચી શ્રદ્ધાંજલિ અર્પણ કરી કહી શકાય.

અમે તે સમયે અમારું મતવ્ય રજુ કર્યું હતું ત્યારે કોણ માનવાનું હતું, એટલે જ વાર્યા ના વરે તે હાર્યા વરે... કોરોના મહામારીના કારણે વર્તમાન સમયમાં અમારા મંતવ્ય મુજબની પરિસ્થિતિનું નિર્માણ થઈ ચુક્યું છે. પરંતુ સ્વજનના અવસાન નિમિત્તે તેમની આત્માની શાંતિ અને તેમના આત્મશ્રેયાર્થે કોઈએ સાતક્ષેત્રમાંથી એકે ક્ષેત્રમાં રકમ ફાળવી હોય તેવું મારા સિવાય કોઈ જાણવા મળ્યું નથી. લોકડાઉનના કારણે છ માસ દરમ્યાન અમદાવાદ - થરાદ - મુંબઈ - આણંદ - સુરત વિગેરે શહેરોમાં કેટલાય સ્વજનો અવસાન પામ્યા ત્યારે મૃતકના પરિવારજનો તરફથી વોટ્સઅપ પર જણાવવમાં આવતું હોય છે કે લોકાચાર અર્થે અગર સ્મશાનયાત્રામાં જોડાવવા બહારગામથી કોઈએ આવવું નહીં. કોરોના મહામારી ક્યારે ખતમ થશે તે કોઈ કહી શકે તેમ નથી. છતાં કોરોના મહામારી ખતમ થયા પછી પણ આ પ્રથા જળવાઈ રહે તો બહાગગામથી જવા-આવવાની હાડમારી ઓછી, ઘરધણીને વ્યવસ્થા કરવાની ચિંતા ઓછી અને ખોટા ખર્ચનો બચાવ... આજ રીતે લગ્નોત્સવમાં થતાં ફાજલ ખર્ચમાં કાપ મુકવા માટે સપ્ટેમ્બર-૨૦૨૦ના શાશ્વત ધર્મ ગુર્જર જૈન જ્યોત - ગુજરાતી વિભાગમાં લેખરૂપે પ્રસિદ્ધ કરેલ. જેનો સારો એવો પ્રતિસાદ મળે છે અને થરાદ પંથક જૈન સમાજના શુભચિંતકોએ મોબાઈલ પર શુભેચ્છા પાઠવેલ હતી. લોકડાઉન પછી જેટલા લગ્નોત્સવ યોજાયા તે સાદાઈપૂર્વક જ યોજાયા હતા. સમાજના શુભચિંતક તરીકે સુરેશ સંઘવીની મધ્યમ વર્ગના પરિવારોને ખાસ વિનંતી છે કે કોઈની દેખાદેખી કર્યા વિના સાદાઈપૂર્વકનું જીવન વ્યતિત કરી શાંતિપૂર્વકની રાત્રિ નિંદ્રા લેવી ખાસ આવશ્યક છે. હું પણ મધ્યમવર્ગનો જ સમાજપ્રેમી વ્યક્તિ છું. આપણે સહુએ સાથે મળીને શ્રીસંઘ, મંડળ, પરિષદના ખરા અર્થમાં શુભચિંતક

બની તેમના દ્વારા થઈ રહેલ માનવસેવા, સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોની વૈયાવચ્ચ ભક્તિ વિગેરે પરિષદના ખરા અર્થમાં શુભચિંતક બની તેમના દ્વારા થઈ રહેલ નેત્રદિપક કામગીરીને પ્રોત્સાહિત કરી થરાદ પંથક જૈન સમાજની આત્મિયતાને જાળવી રાખવાની છે.

ભારતભરના શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘોમાં ધર્મ પ્રભાવક કાર્યક્રમો સંપન્ન

ભારતભરના શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘોમાં પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સમુદાયના ગચ્છાધિપતિશ્રી, આચાર્યશ્રી તથા તેમના આજ્ઞાનુવર્તીશ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતો જે સ્થળે ચાતુર્માસ બિરાજમાન છે તેમની પાવનકારી નિશ્રામાં કોરોના મહામારીને ધ્યાનગ્રસ્ત કરી સરકારના નિયમોના પાલન કરવા સાથે સાદાઈપૂર્વક ચાતુર્માસ પ્રવેશ, નવકાર મહામંત્રની નવ દિવસીય આરાધના, શ્રી નેમિનાથ ભગવાનના જન્મ કલ્યાણકની ઉજવણી, પર્યુષણ મહાપર્વ દરમ્યાન તપ-જપ-આરાધના અને ક્ષમાપના વિગેરે ધર્મ પ્રભાવક કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા.

क्षमापना

कुलदीप 'प्रियदर्शी'
हास्य-व्यंग्य कवि, राष्ट्रीय गीतकार,
कवि सम्मेलन सूत्रधार,
स. सम्पादक-
यतीन्द्र वाणी हिन्दी पाक्षिक
लेखक, सम्पादन, अनुवादक,

वर्ष भर में एक बार, आता है श्रीमान ।
हर अपराध की माफी, देता पर्व महान ।।
विगत वर्ष में हुई यदि, हमसे कोई भूल ।
माफ करें अरु ना रखें, अन्तर में कुछ शूल ।।
मन-वच-काया से हुए, जाने या अनजान ।
उन अपराधों की हमें, माफी दें श्रीमान ।।
गुनाह गर कोई हुआ, जाने या अनजान ।
हाथ जोड़ हम माँगते, क्षमा-दान श्रीमान ।।

कल्पना, सुरभि, दीक्षा, प्रज्ञा
एवं डाँगी पारदर्शी परिवार

पारदर्शी कम्प्यूटर्स, 261, ताम्बावती मार्ग, आयड़, उदयपुर-313 001
3, सागर कॉलोनी, कालकामाता रोड़, उदयपुर-313 001
M. 94137-63991, 94616-15429 priyadarshikuldeep@gmail.com

कुमकुम सने पगलिये

सूरिमंत्र आराधना की निर्विघ्न सम्पन्नता हेतु शहरों में नवकार मंत्र जाप

पुण्य सम्राट श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के पट्टधरद्वय गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. तथा जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. ने 84 दिवसीय सूरिमंत्र की आराधना अपने चातुर्मास स्थल क्रमशः निम्बाहेड़ा तथा श्री भांडवपुरतीर्थ पर एकांतवास करते हुए सम्पन्न की। आराधना 4 जुलाई से प्रारंभ हुई, इसमें छह विगय के त्याग की तपस्या अत्यंत कठिन रहती है। यह आराधना निर्विघ्न सम्पन्न हो, इस हेतु श्रीसंघ, परिषद तथा पाठशाला परिवार के तत्वावधान में प्रतिदिन एक घंटा अखण्ड नमस्कार महामंत्र का जाप आयोजित किया गया। इस लड़ी को 84 दिन तक विभिन्न शहरों में पूर्ण किया गया। इस आराधना का शुभारंभ 5 जुलाई से प्रातः 9 बजे से 10 बजे तक दलौदा पाठशाला से किया गया। बाद में प्रतिदिन एक घंटे जाप की झड़ी चली जिसमें मंदसौर, जावरा, नामली, ढोढर, पिपलौदा, बड़ावदा, नागदा, खाचरौद, बड़नगर, भाट पचलाना, महिदपुर रोड़, महिदपुर सीटी, चौमहाला, सूरत, नीमच, निम्बाहेड़ा, इंदौर, धार, दसई, अहमदाबाद, लाबरिया, राजगढ़, टांडा, बाग, रिंगनोद (राजगढ़), कुक्षी, मनावर, नड़ियाद, भाबरा, खट्टाली, अलीराजपुर, जोबट, पारा, रानापुर, थांदला, मेघनगर, कुशलगढ़, खवासा, झाबुआ, पेटलावद, करवड़, सारंगी, रतलाम, उज्जैन, कालूखेड़ा, आलोट, रिंगनोद (रतलाम), जापान, रोजाना, ताल, रायपुरिया, नारायणगढ़, जावद, निकुम्भ, बड़वाह, निनोता, रंभापुर, छोटीसादड़ी, मैसूर, बीजापुर, बेंगलोर, कोयम्बटुर, हुबली, सैलाना, बदनावर, लाखनी, मक्सी, कुकडेश्वर, डीसा, नागपुर, आणन्द, निसरपुर, वरमण्डल, अंजड़, पूना, मुंबई, प्रीतमनगर, बामनिया, नैल्लोर, नड़ियाद, विजयवाड़ा, भरतपुर, जोधपुर, जालोद, थराद जाकर आदि ने भाग लिया। 26 सितम्बर को दलौदा में जाप तथा स्नात्र पूजा के पश्चात् जाप का समापन हुआ।

– संगीता पोरवाल, दलौदा (जि. मंदसौर (म.प्र.) राष्ट्रीय शिक्षा मंत्री, महिला परिषद

श्रीसंघ ने ज्ञानोत्सव मनाया

गुजरात के पाटण नगर में गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराजा के पट्टधर गच्छाधिपति श्री नित्यसेन सूरिश्वरजी महाराज एवं आचार्य श्रीमद् जयरत्नसूरीश्वरजी महाराज के आज्ञानुवर्ती श्रमण-श्रमणी भगवंत 29 ठाणा चातुर्मास हेतु बिराजमान हैं, पुण्य सम्राट युग प्रभावक गुरुदेव श्री के शिष्यरत्नों का जबसे अध्ययन हेतु पाटण पदार्पण हुआ है तब से अभी तक विभिन्न ग्रंथो का संस्कृत टीका सहित अध्ययन निरन्तर हो रहा है, व्याकरण साहित्य का अमूल्य ग्रंथ श्री सिद्ध हेम व्याकरण का अध्ययन पूर्ण होने पर त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण ने ज्ञान का पूजन कर ज्ञानोत्सव मनाया।

इस प्रसंग पर श्री सिद्ध हेम ज्ञानपीठ के अध्ययन कक्ष को विभिन्न रंगों के फूलों की आकर्षक रंगोली एवं अन्य सजावट की सामग्री से संपूर्ण कक्ष को भव्य रूप से सजाया गया ओर हाथी की प्रतिकृति को सजाकर उस पर सिद्ध हेम व्याकरण ग्रंथ को स्थापित कर विविध प्रकार से पूजन किया गया।

कार्यक्रम में पाटण में बिराजमान अनेक समुदायों के श्रमण-श्रमणी भगवंत की पावन निश्रा ओर त्रिस्तुतिक जैन संघ के सदस्य, पाटण जैन संघ के अग्रणी एवं पंडित श्री चंद्रकान्तभाई, पंडित श्री राजुभाई जिला कलेक्टर, पालिका चिफ ऑफिसर सहित अनेक लोग उपस्थित रहे। करीबन 3 घंटे चले ज्ञानोत्सव में मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी महाराज एवं मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी महाराज आदि ने ज्ञान के महत्व पर प्रवचन दिया और पंडित श्री एवं जिला कलेक्टर आदि के वक्तव्य हुए।

उन्होंने कहा कि समय की अनुकूलता को ध्यान में रखते हुए धर्मचर्चा भी जरूरी है। हमारी दिनचर्या में धार्मिक कार्यक्रमों का विशेष महत्त्व है। हमें इस प्रकार के कार्यक्रम के दौरान शिक्षाप्रद जानकारी मिलती है।

साध्वीवृन्द से क्षमापना

बेंगलुरू । यहाँ विजयनगर क्लबरोड़ स्थित श्री संभवनाथ जैन मंदिर के तत्वावधान में चातुर्मासार्थ विराजित आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की समुदायवर्तिनी साध्वीश्री सूर्योदयाश्रीजी, कैलाशश्रीजी,

विपुलदर्शिताश्रीजी आदि ठाणा-3 को वंदन करने अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा बेंगलुरू के पदाधिकारी गुरुवार सुबह पहुँचे। परिषद के अध्यक्ष डूंगरमल चोपड़ा ने बताया कि सर्व प्रथम पदाधिकारियों ने साध्वीजी के दर्शन कर शीश वंदन किया।

इस अवसर पर परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रकाश हिराणी ने साध्वीजी म. सा. को परिषद द्वारा पूरे वर्ष में जाने-अनजाने में कुछ कहने में या सुनाने में आया हो तो सवंत्सवरी प्रतिक्रमण करते हुए सभी जीवों से क्षमा याचना अर्थात मिछामी दुक्कडंम किया। अनेक धार्मिक विषयों पर चर्चा भी की। परिषद अध्यक्ष डुंगरमल चौपड़ा ने साध्वीजी को बेंगलूरू परिषद द्वारा नियमित रूप से सामाजिक - रचनात्मक एवं कोरोनाकाल में जीवदया इत्यादि के किए गए कार्यों की जानकारी दी।

इस अवसर पर साध्वीजी ने परिषद की समस्त गतिविधियों पर संतोष व्यक्त करते हुए आशीर्वादी अनुमोदना के साथ ही गुरु गच्छ की महिमा बढ़ाते रहने की प्रेरणा दी व मांगलिक प्रदान की। इस कार्यक्रम में दक्षिण प्रांतीय अध्यक्ष बाबुलाल सवानी, मंत्री नेमीचंद संघवी, कोषाध्यक्ष रमेश जैन भी उपस्थित रहे।

✲ **महिदपुर ।** साध्वी डॉ. अमृतरसाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री निरागरसाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री जिनांशरसाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 के सानिध्य में चार्तुमासिक आराधनाएँ कोविड-19 का पालन करते हुए चल रही है। इसी कड़ी में रमेश काका मेहता श्री पुत्रवधु एकता-पंकज मेहता ने सिद्धी तप की तपस्या पूर्ण की। तपस्या की पूर्णाहुति पर साध्वीवर्या ने तप की महत्ता पर प्रकाश डाला। त्रिस्तुतिक श्रीसंघ की ओर से तपस्वी को अभिनंदन भेंट कर तपस्वी का बहुमान किया। साध्वीवर्या की प्रेरणा व सानिध्य में 110 दिवसीय श्रेणी तप की तपस्या श्रीमती माया - पारस लुणावत व श्रीमती संगीता- अतुल मेहता की चली। 9 उपवास व 8 उपवास की अनेक तपस्या पर्यूषण पर्व के दौरान सम्पन्न हुई। सभी तपस्वियों का श्रीसंघ की ओर से बहुमान किया गया। संवत्सरी प्रतिक्रमण कर क्षमापर्व मनाया।

✲ **महिदपुर ।** सरल स्वभावी साध्वी डॉ. अमृतरसाश्रीजी म. के 41 वे वर्ष में प्रवेश पर सेवाभावी साध्वी श्री जिनांशरसाश्रीजी म.सा. ने 41 दिवसीय आयंबिल तप की तपस्या पूर्ण की। तप के अनुमोदनार्थ तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन राजेन्द्रसूरी ज्ञान मंदिर में किया गया।

सोमवार को चौविसी गान व

मंगलवार को सामायिक मण्डल का आयोजन रमेशचन्द्र नेमीचंद लुणावत परिवार की ओर से किया गया। बुधवार को श्री राजेन्द्रसूरि महिला मण्डल द्वारा दादा गुरुदेव की अष्टप्रकारी पूजन नरेन्द्र कुमार मोतीलाल धाड़ीवाल परिवार की ओर से पढ़ाई गई। सायंकाल दादागुरुदेव व जयंतसेन सूरिजी की आरती उतारी गई। साध्वी डॉ. अमृतरसाश्रीजी म.सा. के सान्निध्य में ज्ञानपिपासु साध्वी श्री निरागरसाश्रीजी म. सा. की आयंबिल तप की तपस्या निरंतर चल रही है।

गुजरातीवासी म.सा. का हिन्दी प्रेम - प.पू. साध्वी डॉ. अमृतरसाश्रीजी म.सा. की मातृभाषा गुजराती होने के बावजूद आपने दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् बी.ए., एम.ए. हिन्दी में अध्ययन कर 'महापाध्याय यशोविजयजी के दार्शनिक चिंतन' विषय में पीएचडी की उपाधि ग्रहण की। 40 वर्ष पूर्व 26 सितम्बर 1980 को अहमदाबाद में आपका जन्म हुआ। राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. के हाथों 17 फरवरी 2020 को पालिताणा तीर्थ में भगवती दीक्षा ग्रहण की. आप अब हिन्दी में फर्राटे से लेखन तथा वाचन करती हैं।

त्रिस्तुतिक समुदाय चातुर्मास सुची सन् -2020

त्रिस्तुतिक जैनाचार्य विश्व पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के प्रशिष्य युग प्रभावक, पुण्य सम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के पट्टधर गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. एवं आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती श्रमण-श्रमणी भगवंतों की चातुर्मास सूची - **(1) निम्बाहेड़ा (राजस्थान)** 1. गच्छाधिपति आचार्य देव श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरिश्वरजी म.सा. , 2. वरिष्ठ मुनिराज श्री वीररत्न विजयजी म.सा. 3. मुनिराज श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा. 4. मुनिराज श्री विद्वदरत्न विजयजी म.सा. 5. मुनिराज श्री प्रशमसेन विजयजी म.सा. 6. मुनिराज श्री तारकरत्न विजयजी म.सा. 7. मुनिराज श्री निर्भयरत्न विजयजी म.सा. **चातुर्मास स्थल** - राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञानमंदिर, आदर्श कॉलोनी, पो. निम्बाहेड़ा, जिला चित्तोड़गढ़ (राज.) 312601

(2) भाण्डवपुर तीर्थ (राजस्थान)

1. आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा. 2. मुनिराज श्री अशोकविजयजी म.सा. 3. मुनिराज श्री आनंद विजयजी म.सा. 4. मुनिराज जिनरत्नविजयजी म.सा. 5. मुनिराज श्री पुष्पदंत विजयजी म.सा. **चातुर्मास स्थल** - श्री महावीर स्वामी जैन पेढ़ी, पो. भाण्डवपुर तीर्थ, जि. जालोर (राज.) 343022

(3) पालीताणा (गुजरात)

1. मुनिराज श्री अपूर्वरत्नविजयजी म.सा. 2. मुनिराज श्री विनयरत्नविजयजी म.सा. 3. मुनिराज श्री अजितसेन विजयजी म.सा. चातुर्मास स्थल - श्री यतीन्द्र भवन, जैन धर्मशाला, तलेटी रोड़, पोस्ट – पालीताणा जिला- भावनगर (गुज.) 364270

(4) पाटण (गुजरात)

1. मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा. 2. मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. 3. मुनिराज श्री प्रत्यक्षरत्नविजयजी म.सा. 4. मुनिराज श्री पवित्ररत्नविजयजी म.सा. 5. मुनिराज श्री निक्षेपरत्न विजयजी म.सा. 6. मुनिराज श्री नैमिशरत्न विजयजी म.सा. 7. मुनिराज श्री साध्यरत्न विजयजी म.सा. चातुर्मास स्थल - त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय श्री राजेन्द्र सुरी जैन ज्ञान मंदिर, पंचासरा मन्दिर के पीछे, पो. पाटण (गुजरात) 384205

(5) सुरत (गुजरात)

1. मुनिराज श्री वैभवरत्न विजयजी म.सा. 2. मुनिराज श्री शंखेशरत्न विजयजी म.सा. 3. मुनिराज श्री गोयमरत्न विजयजी म.सा. 4. मुनिराज श्री राजयोग विजय जी म.सा. चातुर्मास स्थल - राजेन्द्र सूरी जैन ज्ञान मंदिर, प्रगति नगर सोसायटी, कृष्ण नगर सोसायटी के सामने , चोकसी वाडी के पास, पो. अडाजण, सुरत (गुजरात)

(6) नीमच (मध्यप्रदेश)

1. मुनिराज श्री संयमरत्न विजयजी म.सा. 2. मुनिराज श्री भुवनरत्न विजय जी म.सा. चातुर्मास स्थल - श्री महावीर स्वामी जैन मंदिर, विकास नगर, पो. नीमच (मध्यप्रदेश) 458441

(7) मीठाखली / अहमदाबाद (गुजरात)

1. मुनिराज श्री जिनागमरत्न विजयजी म.सा. 2. मुनिराज श्री निर्दोशरत्न विजयजी म.सा. 3. मुनिराज श्री निर्वाणरत्न विजयजी म.सा. 4. मुनिराज श्री निधानरत्न विजयजी म.सा. 5. मुनिराज श्री जंबुसेन विजयजी म.सा. 6. मुनिराज श्री सुधर्मसेन विजयजी म.सा. चातुर्मास स्थल- श्री यतीन्द्रसूरी आराधना भवन, महेन्द्रा कोटक बैंक के पीछे पेटालोंन शोरूम के सामने, लॉ गार्डन रोड़ मीठाखली पो. अहमदाबाद (गुजरात) 380009

(8) मीठाखली / अहमदाबाद (गुजरात) 1. साध्वी श्री स्वयंप्रभाश्रीजी म.सा. 2. साध्वी श्री कनकप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा चातुर्मास स्थल- श्री राजेन्द्र सूरी आराधना भवन मेडीसर्ज हास्पिटल के पास, मीठाखली, पो. अहमदाबाद (गुज.) 380009

(9) अलवर (राज.) साध्वी श्री प्रियदर्शनाश्रीजी आदि ठाणा चातुर्मास स्थल- राज राजेन्द्रसुरी जैन गुरु मंदिर श्री जैन संत वाटिका, कटी घाटी, पोस्ट अलवर (राज.) 301001

(10) राजगढ़ (मध्यप्रदेश) साध्वी

श्री कल्पलता श्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल-** श्री राजेन्द्र भवन, महात्मा गांधी मार्ग, राजगढ़ (धार) म.प्र. 454116

(11) भाण्डवपुर तीर्थ (राज.) साध्वीश्री सूर्यकिरणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - श्री महावीर स्वामी जैन पेढ़ी पो. भाणाडवपुर तीर्थ, जि. जालोर (राज.) 343022

(12) बेंगलुरू (कर्णाटक) साध्वीश्री सूर्योदया श्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - Shri Sambhavnath Jain Mandir 25/26 1st main, RPC Layout, Opposite Vijaynagar club, Vijaynagar, Bangalore- 460040

(13) नागेश्वर तीर्थ (राजस्थान) साध्वी श्री आत्मदर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - वासुपूज्य स्वामी राजेन्द्र सूरी गुरु मंदिर पो. नागेश्वर तीर्थ (उन्हेल) जि. झालावाड़ (राज.) 326515

(14) राणापुर (म.प्र.) साध्वी श्री पूण्यदर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - राजेन्द्र सूरि जैन ज्ञानमंदिर, महात्मा गांधी मार्ग, पो. राणापुर, जि. झाबुआ (म.प्र.) 457993

(15) अहमदाबाद (गुज.) साध्वी श्री मोक्षगुणा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - राजेन्द्र सूरी स्वाध्याय मंदिर पाछीया पोल, रीलीफ रोड़, अहमदाबाद (गुज.)

(16) अहमदाबाद (गुज.) साध्वी श्री रत्न यशा श्री जी म.सा. साध्वी श्री रंजन माला श्री जी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - राजेन्द्र सूरि जैन ज्ञान मंदिर, तुलसी विहार सोसायटी, पो. खानपुर, अहमदाबाद (गुज.) 30001

(17) पेपराल तीर्थ (गुज.) साध्वी श्री दिव्यदृष्टा श्री जी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - गुरु जयन्तसेन शासन प्रभावक ट्रस्ट पो. पेपराल, जि. बनासकांठा (गुज.)

(18) खाचरौद (म.प्र.) साध्वी श्री अविचलदृष्टा श्री जी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - राजेन्द्र सूरि जैन पोषधशाला, लीमडावास, महावीर मार्ग पो. खाचरौद, जि. उज्जैन (म.प्र.) 456335

(19) पालीताणा (गुज.) साध्वी श्री अनुपमदृष्टाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - यतीन्द्र भवन धर्मशाला, तलेटी रोड़, पो. पालीताणा, जि. - भावनगर (गुज.) 364270

(20) रतलाम (म.प्र.) साध्वी श्री अमीतदृष्टाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - नीमवाला उपाश्रय कोठारी वास, रतलाम (म.प्र.) 457001

(21) खेतवाडी/ मुंबई (महा.) साध्वी श्री अनंतदृष्टाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - श्री राजेन्द्र सूरी जैन ज्ञान मंदिर 10 वीं, खेतवाडी लेन, मुंबई (महाराष्ट्र) 400004

(22) झाबुआ (म.प्र.) साध्वी श्री

विद्वदगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - आदिनाथ जैन मंदिर, एम.जी. रोड़, पो. झाबुआ (म.प्र.) 457661

(23) रंभापुर (म.प्र.) साध्वी श्री दर्शितकलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - श्री राज राजेन्द्र जयंत जैन ज्ञान मंदिर, मु.पो. रम्भापुर, तह. मेघनगर, जि. झाबुआ (म.प्र.) 457779

(24) पालीतणा (गुज.) साध्वी श्री दर्शनकलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - यतीन्द्र भवन धर्मशाला तलेटी रोड़, पो. पालीताणा, जि. भावनगर (गुज.) 364270

(25) सियाणा (राज.) साध्वी श्री शासनलता श्री जी म.सा., साध्वी श्री अनेकान्तलता श्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - श्री सुविधिनाथ जैन श्वेताम्बर पेढ़ी, मेन बाजार पो. सियाणा, जि. जालोर (राज.) 343024

(26) पाटण (गुज.) साध्वी श्री तत्वलत्ता श्री जी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - श्री राजेन्द्र सूरी जैन ज्ञान मंदिर पंचासरा पार्श्वनाथ मंदिर के पीछे पो. पाटण (गुज.) 384205

(27) पालीताणा (गुज.) साध्वी श्री विज्ञानलत्ता श्री जी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - यतीन्द्र भवन धर्मशाला, तलेटी रोड़, पो. पालीताणा, जि. भावनगर, 364270

(28) पालीताणा (गुज.) साध्वी श्री चारित्रकलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - यतीन्द्र भवन धर्मशाला, तलेटी रोड़, पो. पालीताणा, जि. भावनगर (गुज.) 364270

(29) लाखणी (गुज.) साध्वी श्री कल्परेखाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री परमरेखा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - राजेन्द्र सूरि जैन ज्ञान मंदिर पो. लाखणी, जि. बनासकांठा (गुज.) 385541

(30) पालीताणा (गुज.) साध्वी श्री भक्तिरसाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - यतीन्द्र भवन धर्मशाला, तलेटी रोड़, पो. पालीताणा, जि. भावनगर (गुज.) 364270

(31) अहमदाबाद (गुज.) साध्वी श्री अध्यात्मकला श्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - श्री राज राजेन्द्र नगर, अशोक विहार, इंजीनियरींग कॉलेज के सामने, गांधीनगर हाईवे, पो. मोटेरा, जि. गांधी नगर।

(32) नागदा (म.प्र.) साध्वी श्री मैत्रीकलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - श्री पार्श्वनाथ पाठशाला भवन, रानीलक्ष्मी मार्ग नागदा जक्शन, जि. उज्जैन (म.प्र.) 456335

(33) भीनमाल (राज.) साध्वी श्री नयनप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - महावीर स्वामी जैन मंदिर, पुराना पोस्ट ऑफिस के पास, पो.

भीनमाल, जि. जालोर (राज.) 343029

(34) अहमदाबाद (गुज.) साध्वी श्री भाग्यकलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - राजेन्द्र सूरि जैन ज्ञान मंदिर रतनपोल, हाथीखाना, अहमदाबाद (गुज.) 380001

(35) अहमदाबाद (गुज.) साध्वी श्री चिरागकला श्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - राजेन्द्र सूरि जैन ज्ञान मंदिर, देव अर्चन अपार्टमेंट, पो. पालडी / अहमदाबाद (गुज.)

(36) भाण्डवपुर तीर्थ (राज.) साध्वी श्री काव्यरत्नाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - श्री महावीर स्वामी जैन पेढ़ी, पो. भाण्डवपुर तीर्थ, जि. जालोर (राज.) 343022

(37) पाटण (गुज.) साध्वी श्री प्रितीदर्शना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - राजेन्द्र सुरी जैन ज्ञान मंदिर, पंचासरा मंदिर के पीछे, पो. पाटण (गुज.) 384205

(38) पालीताणा (गुज.) साध्वी श्री संवेगप्रियाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - यतीन्द्र भवन धर्मशाला, तलेटी रोड़, पो. पालीताणा, जि. भावनगर (गुज.) 364270

(39) महिदपुर सीटी (म.प्र.) साध्वी श्री अमृतरसाश्रीजी आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - राजेन्द्र सूरि जैन ज्ञान मंदिर, चौक बाजार, पो. महिदपुर सीटी, जि. उज्जैन (म.प्र.) 456443

(40) पाटण (गुज.) साध्वी श्री चैत्यप्रियाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - राजेन्द्र सुरी ज्ञान मंदिर, पंचासरा मंदिर के पीछे, पो. पाटण (गुज.) 384205

(41) पाटण (गुज.) साध्वी श्री कुमुदप्रिया श्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - राजेन्द्र सुरी जैन ज्ञान मंदिर पंचासरा मंदिर के पीछे, पो. पाटण (गुज.) 384205

(43) राजकोट (गुज.) साध्वी श्री आज्ञानिधी श्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - राजेन्द्र सूरि जैन ज्ञान मंदिर, दिवानपुरा सेरी नं. 1, नियर धमेन्द्र रोड़, राजकोट (गुज.)

(44) पार्ला (वेस्ट) मुंबई (महा.) साध्वी श्री रिद्धीनिधी श्री जी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - राज राजेन्द्र सूरीश्वरजी जैन ज्ञान मंदिर, साउथ पाउंड रोड़, जैन मंदिर के सामने, विले पार्ले-वेस्ट मुंबई- 400056

(45) मीठाखली/ अहमदाबाद (गुज.) साध्वी श्री सिद्धीनिधी श्री जी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - मालीक का बंगला, अंडर ब्रिज के पास, पो. मीठाखली, अहमदाबाद (गुज.)

(46) भायन्दर (महा.) साध्वी श्री श्रद्धानिधी श्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल** - श्री राजेन्द्र सूरी जैन

ज्ञान मंदिर, 60 फुट रोड़, 52 जिनालय के पास, पो. भायंदर, जिला थाणे (महा.)।

(47) भारत नगर/ मुंबई (महा.) साध्वी श्री राजनिधी श्री जी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल -** श्री भारत नगर जैन संघ, बालाराम स्ट्रीट, भारत नगर, ग्रांड रोड़, मुंबई 400007

(48) पाल/सुरत (गुज.) साध्वी श्री विरागनिधी श्री जी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल -** राजेन्द्र सूरि जैन ज्ञान मंदिर सहस्त्रफणा रेसीडेंसी सोम चिंतामणि के सामने, पो. पाल, सुरत (गुज.) 395009

(49) पालड़ी, अहमदाबाद (गुज.) साध्वी श्री लब्धीनिधी श्री जी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल -** वैशाली फ्लेट, चिंतामणि जैन मंदिर की गली, पो.पालडी / अहमदाबाद (गुज.)

(50) पालीताणा (गुज.) साध्वी श्री अरिहंत निधि श्री जी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल -** यतीन्द्र भवन धर्मशाला, तलेटी रोड़, पो. पालीताणा, जि. भावनगर (गुज.) 364270

(51) उमरा, सुरत (गुज.) साध्वी श्री मेरुनिधी श्री जी. म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल -** राजगृही एपार्टमेंट, फर्स्ट फ्लोर, बी.एच. शोपींग सेन्टर पारले पांईन्ट पो. उमरा/ सुरत (गुज.) 395007

(52) पालीताणा (गुज.) साध्वी श्री जितयशा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा **चातुर्मास स्थल -** यतीन्द्र भवन धर्मशाला, तलेटी रोड़, पो. पालीताणा, जि. भावनगर (गुज.) 364270

समुदाय सूची (सन् 2020) - साधु भगवंत-34/ साध्वी भगवंत -209/कुल ठाणा -243/चातुर्मास स्थल-52/नुतन दीक्षित -5/

* ब्रजेश बोहरा (नागदा, म.प्र.)

श्रीसंघ व परिषद् के राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी 9827244175

श्री शत्रुंजय महातीर्थ

* सिद्धाचल तीर्थाधिराज श्री आदिनाथ भगवान का जो व्यक्ति 108 पानी के कलस भरकर स्नात्र महोत्सव करता है, उस व्यक्ति का अगर मघा, मूल विगेरे अशुभ नक्षत्र में जन्म हुआ हो तो भी सभी दोष नष्ट हो जाते हैं। * 500 वर्ष पहले देव मंगल मणि ने चंदन तलावड़ी के पास में अट्ठम किया था उस समय कपर्दि यक्ष ने आदिनाथ की रत्नमय प्रतिमा बतायी, जिससे तीसरे भव में मोक्ष में जायेंगे।* भरत चक्रवर्ती के जीर्णोद्धार करान के बाद 10 लाख खेचर (विद्याधर) ने ऐसा अभिग्रह किया कि हम यहाँ पर हमेशा जिनपूजा करेंगे । * देवदत्त ने जब पुण्डारिक गणधर के पास संयम लिया तब 10, 000 जैन श्रावकों ने संयम लिया। - आत्मोद्धारक

श्री संघ सौरभ

सुश्राविका बांठिया का निधन

महिदपुर। त्रिस्तुतिक जैन श्री संघ के अध्यक्ष मुकेश बांठिया की मातोश्री व सिरेमल बांठिया की धर्मपत्नी समकित व संयम की दादीजी, वरिष्ठ सुश्राविका श्री सुदर्शना बांठिया का 80 वर्ष की उम्र में देवलोकगमन हो गया। आपके देवलोकगमन के समाचार जानकर प.पू. गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने बांठिया परिवार को धर्मलाभ प्रदान करते हुए कहा कि वे धर्मआराधिका श्राविका थी। देवगुरु-साधु-साध्वी भगवंतों के प्रति वैयावच्च के उत्तम भाव थे। उनकी आत्मा जहाँ भी हो परम सुख को प्राप्त करें। परिवारजन सभी मिलकर उनकी आत्मशांति हेतु ज्यादा से ज्यादा महामंत्र, नवकार के जाप करें। निधन पर त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ व समाजजनों ने उनके धार्मिक कार्यों व सामाजिक योगदान का स्मरण कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रकाश चत्तर का निधन

महिदपुर। महिदपुर रोड़ श्रीसंघ के वरिष्ठ श्रावक गुरुभक्त प्रकाश चत्तर का हृदयगति रूक जाने से इंदौर में निधन हो गया। राजेन्द्रसूरि पाठशाला के माध्यम से आपने 50 से अधिक युवक-युवतियों को पंच प्रतिक्रमण व दो प्रतिक्रमण तथा अनेक सूत्र कंठस्थ कराए। आपकी प्रेरणा से व मार्गदर्शन में महिदपुर रोड़ के अनेक युवा पयूर्षण पर्व के दौरान 8 दिन तक सूत्र का वाचन करने बाहरगांव के श्रीसंघों में जाते है व प्रतिक्रमण आदि धार्मिक क्रिया सम्पन्न कराते हैं। समाज में उनके योगदान का स्मरण कर महिदपुर रोड़ व महिदपुर जैन श्रीसंघ भावांजलि प्रदान करता है।

श्री पामेचा का निधन

नीमच। विगत दिनांक 29 मई 2020 को श्रीमती कमलाबाई पामेचा पत्नी श्री शांतिलालजी पामेचा का स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ व्यवहार कुशल गुरुभक्त महिला थीं। त्रिस्तुतिक समाज में शोक छा गया।

* खाचरौद स्थित श्री राज राजेन्द्र जयंतसेन विद्यापीठ में 74 वां स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। मुख्य अतिथि शिक्षण समिति के पदाधिकारी थे।

परिषद प्रांगण से

प्रतिक्रमण कंठस्थ स्पर्धा में भाग लीजिये

मुंबई। आचार्यश्री धनचंद्रसूरीजी म.सा. स्वर्गारोहण शताब्दी प्रसंगे (भाद्रपद सुदी एकम)। श्री सौ.बृ. त्रिस्तुतिक जैन श्वे. संघ अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा प्रतिक्रमण कंठस्थ स्पर्धा का आयोजन किया गया जिसमें आकर्षक पुरस्कार राशि भाग्यशाली प्रतिभागियों में वितरण का प्रावधान है।

इसकी पावन प्रेरणा वर्तमान गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरिजी म.सा. आचार्यदेवेश श्रीमद् विजय जयरत्नसूरिजी म.सा. द्वारा प्राप्त है।

स्पर्धा विषय विवरण - 1. विषय वस्तु- राई देवसीय या पंच प्रतिक्रमण पूरी तरह से विधि सहित कंठस्थ करके स्वयं करे एवं अन्य को करा सके इस तरह पारंगत होना है। प्रतियोगिता दो वर्गों में आयोजित है - 1. राई देवसीय प्रतिक्रमण 2. पंच प्रतिक्रमण

2. उद्देश्य :- यह प्रतियोगिता बच्चों को प्रतिक्रमण कंठस्थ हो सके, इस उद्देश्य से आयोजित की जा रही है। जिन्हें प्रतिक्रमण पूर्ण रूप से कंठस्थ है, कृपया वो इसमें सहभागिता न करें।

3. समयावधि- प्रतिभागी को 30 अप्रैल 2021 तक प्रतिक्रमण पूरी तरह कंठस्थ याद करना है।

4. प्रक्रिया जो भी इस प्रतियोगिता में हिस्सा ले रहे है उन्हें प्रतिक्रमण याद करने के बाद दिनांक 1 मई से 10 मई 2021 के मध्य संपर्क सूत्र पर सूचित करना होगा। टेलीफोनिक या स्थानीय टेस्ट के बाद योग्य प्रतिभागियों में भाग्यशालियों का चयन ड्रॉ के द्वारा किया जायेगा।

5. पुरस्कार दोनों वर्गों में ड्रा द्वारा निर्णित विजेताओं को अग्रांकित राशियों से पुरस्कृत किया जायेगा। रात्रि-देवसिय प्रतिक्रमण में -

1. प्रथम – रु. 31000 रु., 2. द्वितीय– रु. 21000 रु., 3. तृतीय– रु. 15000 रु., 4. चतुर्थ– रु. 11000 रु., 5. पंचम– रु. 9000 रु. 41. प्रोत्साहन– रु. 5000 रु.

पंच प्रतिक्रमण में –

1. प्रथम – रु. 51000 रु. , 2. द्वितीय रु. –31000 रु., 3. तृतीय– रु. 21000 रु., 4. चतुर्थ– रु. 15000 रु., 5. पंचम– रु. 11000 रु., 15 प्रोत्साहन राशि – रु. 5000 रु.।

6. आयु सीमा – प्रतियोगिता 23 वर्ष से कम आयु वर्ग के लिये आयोजित है। अर्थात 1 अगस्त 1997 के बाद जन्में सभी प्रतिभागी इस स्पर्धा हेतु पात्र है।

7. टेलीग्राम ग्रुप– पंजीयन करने वाले सभी प्रतिभागियों को नीचे दिये गये स्पर्धा पर क्लिक करना है ताकि सभी को समय-समय पर आवश्यक दिशा निर्देश दिये जा सके। यदि आपके मोबाइल में नहीं है तो कृपया इनस्टॉल करने के बाद किक हो जाये।

https : bit-ly/telegrameRJN

8. पंजीयन– प्रतिस्पर्धा में सम्मिलित सभी प्रतिभागी को दिये गये स्पर्धा पर क्लिक कर स्वयं को पंजीकृत करना है। जिसकी अंतिम तिती 30 सितम्बर 2020 है। कृपया शीघ्र रजिस्ट्रेशन करें।

प्रतियोगिता संबंधी किसी भी जानकारी हेतु संपर्क करें –

रमेशभाई धरु (राष्ट्रीय अध्यक्ष)
मो. 93222-27033
राजेश वागरेचा (राष्ट्रीय संगठन मंत्री)
मो. 96301-96196
भरतभाई वोरा (राष्ट्रीय शिक्षा मंत्री)
मो. 99303-54186
भाविक भाजनी
(राष्ट्रीय सह शिक्षामंत्री)
मो. 93288-26225

लाभार्थी परिवार – 1. श्रीमती कांताबेन बाबुलाल वोरा परिवार रमेशभाई नड़ियाद । 2. स्व. अलकाबेन भरतभाई वाघजीभाई वोहरा परिवार, मुंबई। 3. विजयाबेन बचुभाई चीमनलाल धरु परिवार रमेशभाई धरु, मुंबई । 4. श्री प्रकाशजी तगराजजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा-बैंगलोर। 5. श्री चंद्रशेखरजी मनोजजी मुकेशजी जैन नाकोड़ा हीरो, झाबुआ।

जय राजेन्द्र, जय जयंत ।

:: निवेदक ::

रमेश धरु (राष्ट्रीय अध्यक्ष)
प्रकाश हीराणी (वरिष्ठ उपाध्यक्ष)
सुधीर लोढ़ा (राष्ट्रीय महामंत्री)
भरतभाई वोरा (राष्ट्रीय शिक्षामंत्री)

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद इस शाखा अध्यक्ष आवश्यक रूप से इस संदेश को संघ में प्रसारित कर प्रतिभागियों को प्रेरित करें।

घर-घर ज्ञानार्जन स्पर्धा

मुंबई। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा चरणबद्ध रूप से सूत्र याद करवाकर बच्चों एवं बड़ों को गुरु वंदन, सामायिक, मंदिर विधि, देववंदन, प्रतिक्रमण आदि में पारंगत बनाने के लिये घर बैठे अपनी सुविधानुसार सूत्र याद कराने के लिये **'घर-घर ज्ञानार्जन'** कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है।

इस मैसेज के साथ वॉटसऐप ग्रुप की स्पर्धा प्रेषित की जा रही है साथ ही सूत्रों के नाम भी दिए गए हैं। 'जो सूत्र याद करना है, उस सूत्र वाले ग्रुप में एड हो जाये।' एक बार एड होने के बाद आगे के निर्देश आपको प्रतिदिन ग्रुप पर दिए जाएंगे। शिक्षण कार्य 25 अगस्त से विधिवत प्रारंभ हो चुका है. आपको जो सूत्र याद करना है उसके अनुसार इन वॉट्सऐप ग्रुप में एड हो जाये।

प्रथम चरण- सूत्र नवकार, पंचंदिय, खमासमण, इच्छकार, इरियावाही, तरस्स उत्तरी, अन्नथ, लोगस्स, वांदणा, अब्भुठ्ठीयों, गुरु वंदन विधि।

द्वितीय चरण- सूत्र- करेमि भंते, समाइयवयजुत्तो, सामायिक विधि, जंकिंचि, नमुत्थुणं, जावंति, जावंत, नमोर्हत, उवस्सग्गहरं, जय वीयराय, अरिहंत चेइयाणं, एक चैत्यवंदन, एक स्तुति, चैत्यवंदन विधि।

तृतीय चरण - सूत्र- कल्लाणकंदं, संसारदावा, पुक्खरवरदी, सिद्धाणं, बुद्धाणं एक चैत्यवंदन, एक स्तुति, देववंदन विधि, दो पच्चक्खाण, दो स्तवन।

चतुर्थ चरण- सूत्र-भगवानादि वंदन देवसि पडिक्कमणे, इच्छामि ठामि, नाणम्भि दंसणम्भि, जग चिंतामणि, सात लाख, अठारह पाप वंदितु।

पंचम चरण- आयरिय, नमोस्तु वर्धमानाय, विशाललोचन्, अढाइजेसु, वरकनक, चउक्कसाय, भरहेसर, सकल तीर्थ, देवसिय प्रतिक्रमण विधि, राय प्रतिक्रमण विधि।

षष्ठ चरण- सूत्र-स्नातस्या, सकलार्हत, अजितशांति, अतिचार, पक्खी प्रतिक्रमण विधि।

सप्तम चरण- संतिकरं, तिजय पहुत्त, नमिऊण, भक्तामर, कल्याण मंदिर, बृहदशांति, पौषध विधि।

- राजेश वागरेचा (राष्ट्रीय संगठन मंत्री)

जैन विश्व

* तेरापंथ धर्म संघ के आचार्य श्री महाश्रमणजी म. ने हैदराबाद में कहा कि हमें नेता नहीं, ऐसे श्रावक चाहिये जो कार्यकर्ता हों। ज्ञान, ध्यान भी हो लेकिन उससे भी श्रेष्ठ निःस्वार्थ भाव से शारीरिक तथा मानसिक सेवा की अंतरप्रेरणा हो।

* स्थानकवासी सुदर्शन संघ के आचार्य श्री नरेशचंद्रजी म. ने कहा है कि संवत्सरी प्रतिक्रमण पंचमी के अलावा करने का कोई औचित्य नहीं है।

* राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले के बिजापुर थाना क्षेत्र में 9 अगस्त को पचुमंडल ग्राम में अच्छी बरसात के लिये एक भैंसे की बलि दिये जाने के मामले पुलिस ने एक भैसे सहित 10 लोगों को नामजद किया है।

* फ्रांस से भारत द्वारा क्रय पाँच रफेल हवाई जहाजों को भारतीय वायुसेना के जो पाँच जांबाज पायलट उड़ाकर लाये उनमें एक जैन समाज के श्री सौरभ अंबरेरा (जैन) भी है।

* अयोध्या में श्री राम मंदिर भूमि पूजन निमित्ते अहमदाबाद में श्री सीमंधर स्वामी जैन संघ द्वारा रांगोली, दीयों तथा रंग-बिरंगी रोशनी से श्रृंगार किया गया।

* सूरत में श्रीमद् विजय शांतिचन्द्र सूरीश्वरजी म. के पट्टधर श्रीमद् विजय जिनचन्द्रसूरीश्वरजी म. का कालधर्म 96 वर्ष की आयु में हो गया। आपने 54 वर्ष दीक्षा पर्याय का पालन किया.

* कच्छ में 72 जिनालय तीर्थ पर अंचलगच्छाधिपति श्री गुणोदय सागरसूरीश्वरजी म. ने वचन धर्म प्राप्त किया।

* पालीताना तीर्थ को पर्यटन की दृष्टि से सी-जैन टूरिस्ट बेस्ट स्थल विकसित करने की केन्द्र शासन की योजना का जैन समाज द्वारा भारी विरोध हो रहा था। अ.भा. श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक युवक महासंघ के अध्यक्ष श्री सुनीलजी सिंघी ने नई दिल्ली में केन्द्रीय पर्यटन मंत्री से चर्चा कर जैन समाज के विरोध से अवगत किया जिस पर केन्द्रीय मंत्री द्वारा आश्वासन दिया गया कि पालीताना तीर्थ की छेड़छाड़ नहीं की जायेगी।

चेन्नई। तेलंगाना-आंध्रप्रदेश के प्रमुख

हिंदी समाचार -पत्र 'डेली हिंदी मिलाप' ने हिंदी दिवस पर साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग की कविता 'ठहरो मानव' को पुरस्कृत किया।

इसी प्रकार डॉ. धींग के सहयोग से उनकी धर्मसहायिका सीमा धींग द्वारा लिखित निबंध 'संचार माध्यम और हिंदी' को चेन्नई (तमिलनाडु) के मुख्य हिंदी अखबार 'राजस्थान पत्रिका' ने पुरस्कृत किया।

* खातरगच्छ के आचार्य श्री जिनपीयूषसूरीश्वरजी म. ने 41 दिवसीय सूरिमंत्र की तृतीय पीठिका तथा पंचम पीठिका 41 दिवसीय साधना के द्वारा श्री नमिउण पार्श्वनाथ तीर्थ के प्रांगण में पूर्ण की।

* नेशनल ऐंटी करप्शन ऐड ऐंटी ऐटरोसिटी ऑरगनाइजेशन (टाईगर फोर्स-कर्नाटक शाखा) के नये अध्यक्ष श्री बसंत कुमार जैन चुने गए। ◆◆◆

णमोकार मंत्र के पर्यायवाची नाम

अनादि मंत्र - यह मंत्र शाश्वत है, न इसका आदि है और न ही अंत है।

अपराजित मंत्र - यह मंत्र किसी से पराजित नहीं हो सकता है।

महामंत्र - सभी मंत्रों में महान् अर्थात् श्रेष्ठ है।

मूलमंत्र - सभी मंत्रों का मूल मंत्र अर्थात् जड़ है, जड़ के बिना वृक्ष नहीं रहता है, इसी प्रकार इस मंत्र के अभाव में कोई भी मंत्र टिक नहीं सकता है।

मृत्युंजयी मंत्र - इस मंत्र से मृत्यु को जीत सकते हैं अर्थात् इस मंत्र के ध्यान से मोक्ष को भी प्राप्त कर सकते हैं।

सर्वसिद्धिदायक मंत्र - इस मंत्र के जपने से सभी ऋद्धि - सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

तरणतारण मंत्र - इस मंत्र से स्वयं भी तर जाते हैं और दूसरे भी तर जाते हैं।

आदि मंत्र - सर्व मंत्रों का आदि अर्थात् प्रारम्भ का मंत्र है।

पंच नमस्कार मंत्र - इसमें पाँचों परमेष्ठियों को नमस्कार किया जाता है।

केवल ज्ञान मंत्र - इस मंत्र के माध्यम से केवल ज्ञान भी प्राप्त कर सकते हैं।

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी दहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला, फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा. अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी
  भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा, फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार, फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि. मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी
  फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार
  फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

कपिलजी गिरिया का आकस्मिक निधन

श्रीसंघ, परिषद परिवार, शाश्वत धर्म की ओर से श्रद्धांजलि

उज्जैन। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा उज्जैन के पूर्व अध्यक्ष श्री कपिलजी गिरिया का अल्प बीमारी के पश्चात् देहावसान हो गया। आपके आकस्मिक निधन से शोक व्याप्त हो गया।

अ.भा. श्री राजेन्द्र नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सुशील गिरिया व उनके अनुज श्री नवीन गिरिया के भ्राता श्री कपिल गिरिया अरिहंत शरण हो गए। आप पुण्य सम्राट के अनन्य भक्त थे। श्री गिरिया का महज 57 वर्ष की आयु में अचानक बीमार होने से निधन हुआ। आप विभिन्न सामाजिक, धार्मिक एवं व्यवसायिक संस्थाओं के माध्यम से जुड़कर सदैव मानवसेवा के कार्यों में अग्रणीय रहते थे। विशेषकर परिषद के शाखा अध्यक्ष के रूप में आप संघ, समाज की अनेक सद्प्रवृत्तियों में सहयोग देकर उन्हें सुदृढ़ करने में प्रयत्नशील रहे। पुण्य सम्राट श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के प्रति आपकी अनंत श्रद्धा थी। वर्तमान गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. के उज्जैन चातुर्मास काल में आपकी सक्रियता उल्लेखनीय रही। गुरुसेवा में सक्रियता से भाग लिया। सेवा के यह संस्कार आपको गुरुदेव एवं पारिवारिक भूमि से सिंचित हुए। आपकी माताजी अजोड़ धार्मिक भावना में संरत रहकर आत्म कल्याण में अग्रणीय रहती थी. श्री कपिलजी गिरिया रियल इस्टेट के व्यवसाय में व्यवसायरत थे।

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री प्रकाशजी हिराणी, राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुधीरजी लोढ़ा ने श्री गिरिया के देहावसान पर शोक संवेदना प्रकट की। परिषद के आह्वान पर आपकी आत्मिक शांति हेतु शाखाओं ने 13 नवकार मंत्र के जापकर अपनी भावभीनी श्रद्धाजंलि अर्पित की।

म.प्र. योजना आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष तथा विधायक श्री चैतन्यजी काश्यप तथा पूर्व खाद्य मंत्री व विधायक श्री पारसजी जैन अ.भा. श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई वोरा, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री शांतिलालजी रामानी, राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा आदि ने भी हार्दिक शोक व्यक्त कर श्रद्धाजंली अर्पित की है। श्रीसंघ परिषद परिवार तथा शाश्वत धर्म की ओर से हार्दिक संवेदना सहित श्रद्धांजलि।

चिन्तन- चित्राम

मिलने - जुलने के न अब, सपने देखें आप ।
अपने ही घर बैठकर हरि का करले जाप ॥
हरि का कर ले जाप कि आना जाना छोड़ें ।
प्रियदर्शी अब आप सभी से नाता तोड़े ॥
इस आफत में सुनो कहा यह मेरे दिलने ।
घर में करे निवास, न जायें बाहर मिलने ॥

– कुलदीप प्रियदर्शी, उदयपुर, मो. 9413763991, 9461615429

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/18-20
Posting Date at Mandsaur on 3rd Day of Every Month

त्रिवर्षीय शुल्क-400/- वर्ष-67, अंक-5 से 10 कुल पृष्ठ कवर सहित - 88

गच्छाधिपतिश्री एवं जैनाचार्यश्री की सूरिमंत्र आराधना सुखशाता पूर्वक सम्पन्न

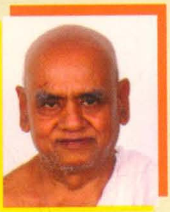
आचार्य
पू. नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.

लोकसंत युग प्रभावक जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. के प्रथम शिष्य तथा पट्टधर गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.द्वारा की जा रही 84 दिवसीय पंच पीठिका सूरि मंत्र आराधना की पूर्णाहुति प्रथम अश्विन शुक्ला 10 शनिवार दिनांक 26 सितम्बर 2020 को प्रातः हो गई। गच्छाधिपति सा. ने प्रातः 9.00 बजे मांगलिक प्रदान किया। उत्तर साधक के रूप में विधिकारक श्री हेमन्त वेदमुथा थे, उन्होंने बताया कि यह आराधना पुण्य सम्राट के हृदय में बसने वाले श्री मोहनखेड़ा, भरतपुर, पेपराल, भांडवपुर इन तीर्थ स्थलों के मूलनायक भगवान तथा गुरुदेवों के स्मरण से प्रतिदिन प्रारंभ होती थी। आचार्य श्री नित्यसेनसूरीश्वरजी म. को प्रत्येक पीठिका के अधिष्ठायकों के दिव्य रूपों की सुन्दर अनुभूति हुई। अंतिम पीठिका में 16 दिन में एक लाख मंत्र का जाप होना था जो आचार्यदेवश्री ने 12 दिन में पूर्ण कर लिया। प्रतिदिन 10 घंटे जाप करते थे, 7 हजार पुष्प श्री गौतम स्वामीजी को अर्पित करते थे, प्रतिदिन प्रातः 3.00 बजे उठकर क्रियाएँ प्रारंभ हो जाती थी।

आचार्यश्री बहुत प्रसन्न रहते थे। इस मध्य उन्होंने स्वयं पुण्य सम्राट के दर्शन किये। साधना कक्ष में विराजित प्रतिमाजी रोज अभिमंत्रित होती थी। मुनिराज श्री वीररत्नविजयजी म. विधि क्रिया में पूरा सहयोग करते थे। मुनिराज श्री सिद्धरत्नविजयजी म. तथा मुनिराज श्री विद्वद्रत्नविजयजी म.का सहयोग तथा मुनिराज श्री प्रशमसेन विजयजी म., मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म. तथा मुनिराज श्री निर्भयरत्नविजयजी का सहकार रहा। पारख परिवार के श्री रतनसिंहजी पारख ने अपनी पुण्य लक्ष्मी का सदुपयोग किया। दीक्षार्थी श्री अभिषेक हरण, श्री अक्षत सेठ, श्री जयंतीभाई तथा श्रीसंघ व परिषद के श्री हिमांशुभाई, श्री कौस्तुभ, श्री संतोषजी, पत्रकार श्री रवि मोदी तथा श्री वर्धमान नायक वैयावच्च में जुटे रहे। इस आराधना की पूर्णाहुति पर 24 सितम्बर को श्री सूरि मंत्र महापूजन तथा श्री गौतम स्वामी पंचम पीठिका विधान हुए। इस चातुर्मास तथा आराधना के लाभार्थी श्री रतनसिंहजी पारख परिवार है।

जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा 84 दिवसीय आराधना की पूर्णाहुति श्री भांडवपुर तीर्थ पर 1 अक्टूबर को सम्पन्न हुई। पूर्ण समाचार प्राप्त होने पर अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

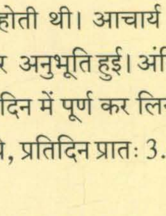
आचार्य
पू. जयरत्नसूरिश्वरजी म.सा.

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001